RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मार्च 2024
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मार्च 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 23
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

सरलता से समाधि, समाधि से सिद्धि

आचार्य श्री रमेश

सुविचार

राम चमकते भानु समाना

जीवन में आने वाले संघर्षों से घबराओ मत। संघर्ष हजार आ जाएँ, किंतु स्वयं संघर्ष कभी मत होने देना।

भय से गलत राह पर बढ़ने के बजाय अपने स्थान पर खड़े रहना उचित है।

मित्र हमारी प्रशंसा करें न करें, शत्रु के दिल में हमारी बात की जगह होनी चाहिए।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आचार्य श्री रामेश की विशेष आज्ञा से वीर माता की

जैन भागवती दीक्षा संपन्न

भदेसर, 11 मार्च 2024। हुक्मसंघ के नवम पट्टधर, परमागम रहस्यज्ञाता, युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की महती कृपा से 11 मार्च को भदेसर में भव्य जैन भागवती दीक्षा संपन्न हुई।

आचार्य भगवन् की विशेष आज्ञा से शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. ने 95 वर्षीय वीर माता संथारा साधिका **कस्तूर बाई** धर्मसहायिका वीर पिता स्व. श्री शांतिलाल जी मोदी, भदेसर को अपूर्व हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में नानेश-रामेश समता भवन में जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। दीक्षा पश्चात् नवीन नामकरण नवदीक्षिता **साध्वी श्री राम कस्तूर श्री जी म.सा.** किया गया।

(विस्तृत समाचार आगामी अंक में)

-महेश नाहटा

।।आगमवाणी।।

चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडि मुंडिणं।
एयाणि वि न तायन्ति, दुस्सीलं परियागयं।।

-उत्तराध्ययन (5/21)

चीवर, मृगचर्म, नग्नता, जटाएँ, कथा और सिरोमुंडन, ये सभी उपक्रम आचारहीन साधक की दुर्गति से रक्षा नहीं कर सकते।

The body-wrap, deer-skin, nakedness, matted hair, tattered orbe and the head shorn of hair cannot protect an aspirant devoid of right-conduct from misfortune and rebirth in bad destinations.

भणंता अकरेन्ता, य बंधमोक्खपइन्निणो।
वायावीरियमित्तेण, समासासेन्ति अप्पयं।।

-उत्तराध्ययन (6/10)

जो केवल बोलते हैं, करते कुछ नहीं, वे बंध-मोक्ष की बातें करने वाले दार्शनिक केवल वाणी के बल पर ही अपने आपको आश्वस्त किए रहते हैं।

Those philosophers, who talk a lot but do nothing, only assure themselves on the strength of their volubility. (But, when the time comes, they pay for their lack of right-conduct).

न संतसंति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया।

-उत्तराध्ययन (5/29)

ज्ञानी और सदाचारी आत्माएँ मरणकाल में त्रस्त अर्थात् भयाक्रांत नहीं होतीं।

The wise and righteous souls do not despair at the time of death.

न तं अरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा।

-उत्तराध्ययन (20/48)

गर्दन काटने वाला शत्रु भी उतनी हानि नहीं करता, जितनी हानि दुराचार में प्रवृत्त अपनी ही, स्वयं की आत्मा कर सकती है।

Even the cut-throat enemy does not harm as much as the unrighteous soul harms itself.

अंगाणं किं सारो? आयारो।

-आचारांग निर्युक्ति (17)

जिनवाणी (अंग-साहित्य) का सार क्या है? 'आचार'।

What is the essence of Jaina-preaching? It is the 'right-conduct'.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

संस्कार सौरभ

29 धर्ममूर्ति आनंदकुमारी –संकलित

36 अश्रद्धा का परिणाम –आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

38 मेरे आचार्य ऐसे हैं –रत्ना ओस्तवाल

40 श्रमणत्व के संयम सुमेरु होते हैं आचार्य –पदमचन्द गाँधी

44 फाल्गुनी पर्व.... –निर्मल संघवी

46 सद्धा परम दुल्लहा –सुरेश बोरदिया

49 नमो आयरियाणं और महत्तम श्रद्धा –डॉ. आभाकिरण गाँधी

विविध

09 संस्मरण : गुरु के गौरव –अजीत कड़ावत

34 बालमन में उपजे ज्ञान –मोनिका जय ओस्तवाल

51 गुरुचरण विहार –महेश नाहटा

धर्मदेशना

07 परमात्मा की विभुता –आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

10 दुर्लभ श्रद्धा –आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

14 धर्मश्रद्धा से आत्मा की रक्षा –आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

19 ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन –संकलित

24 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला –कंचन कांकरिया

26 श्रीमद् उत्तराध्यनसूत्र –सरिता बैंगानी

भक्ति रस

18 अवसर गुरु दक्षिणा का –मोनिका मिन्नी

37 राम गुरुवर है मोक्षगामी –ललित कटारिया

39 आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. –राखी अलिझाड़

50 फुलवारी –कांता बैद

चिंतन पराग

स्वान्तः सुखाय हो अपनी चर्या

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

हम अपनी दैनिकचर्या पर ध्यान दें कि वह चर्या स्वान्तः सुखाय हो रही है या उसमें अन्य भी कोई भाव होता है? हमारी कितनी चर्या यथार्थ होती है और कितनी दिखावे के रूप में होती है? हम यह भी समीक्षण करें कि हमारी कितनी चर्याएँ उपयोग पूर्वक हो रही हैं और कितनी चर्याएँ 'ओघ' से हो रही होती हैं? जब हम उक्त विषय की समीक्षा करेंगे तो हमें आश्चर्य होगा कि हमारी बहुत सारी चर्याएँ तो एक साँचे में ढली हुई के समान होती हैं। जैसे ही तिक्खुत्तो करने लगते हैं हाथ घूमने लगते हैं। क्या उस ओर हमारा उपयोग होता है, पूर्ण रूपेण? यह तो केवल एक चर्या है। इसी प्रकार चलने-खाने आदि समग्र क्रियाओं पर हम दृक्पात करेंगे तो ज्ञात हो पाएगा कि हम कितनी चर्याएँ उपयोग पूर्वक और स्वान्तः सुखाय भाव से करते हैं और कितनी क्रियाएँ यूँ ही होती रहती हैं। जब हमारी चर्या स्वान्तः सुखाय होने लगेगी तो उसमें दूसरों को प्रभावित करने की भावना पैदा नहीं हो पाएगी। हमें लगेगा कि हम जो भी कर रहे हैं अपने लिए कर रहे हैं। उन चर्याओं का प्रतिसाद हमको ही मिलने वाला है। दूसरा कोई प्रभावित हो रहा है, कोई प्रेरणा दे रहा है, उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। उस समय हमें दूसरों को न लुभाने की आवश्यकता होगी और न ही हमें किसी की प्रेरणा की ही जरूरत होगी। हम स्वात्म प्रेरित कार्य करते रहेंगे। कर्त्तव्य हमारे सम्मुख होगा। हमारे कदम उसे पूर्ण करने में गतिशील होंगे। मैं उस समय की याद दिलाना चाहता हूँ जब भगवान महावीर सिद्ध बन गए, मुक्त हो गए। गणधर गौतम को किसने प्रेरित किया कि उठ तू भी उस दिशा में बढ़ा कदम? उनकी आत्मा ने ही उनको प्रेरित किया। वस्तुतः जब हम स्वान्तः सुखाय भाव से चूक जाते हैं, खिसक जाते हैं, तब हमको लगता है कि हमें कोई सहारा दे, प्रेरित करे, प्रोत्साहित करे। यह भावना एकदम गलत नहीं है, किंतु इस पर मैं इतना कहना चाहूँगा, हमारी मानसिकता ऐसी न बने। हमारी आकांक्षा व अपेक्षा ऐसी न बने। यदि हमने उसे आकांक्षा या अपेक्षा का रूप बना लिया तो हम अपने लक्ष्य से भटक जाएँगे। हमारी स्वान्तः सुखाय की भावना गौण हो जाएगी, तिरोहित हो जाएगी। उस समय आत्म-रंजन के बजाय मनोरंजन, पर-रंजन के भाव मुखर हो उठेंगे। ऐसा होना उचित नहीं है।

कार्तिक कृष्ण 7, सोमवार, 02-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

Let us ponder our daily routine to know whether it makes for joy of self, or whether it admits of some other psychic disposition too. How much of our routine is worthwhile? And how much of it is ostentation? Let us also critically analyse how many of our routine acts are performed usefully, and how many get done just from 'going with the flow'. Upon a review of the aforesaid, we will be surprised to know that a good many of our routine acts appear to be cast in a mould. The moment we get down to performing 'tikkhutto' (a kind of salutation to the Acharya) the hands begin rotating. Are we fully and consciously involved in the act? Well, this is but a matter of form.

Likewise, when we glance at the gamut of our acts – walking, eating etc.– we shall know how many are performed usefully and joyfully, and how many just get done automatically. When our routine acts are performed for the joy of self, the thought of impressing others will simply not arise. We shall feel that whatever we are doing, we are doing for ourselves. The outcomes of those acts will redound to our credit. Whether someone else is being influenced thereby, or whether someone is inspiring us would hardly make a difference. We would have no business with pleasing others nor any need for drawing inspiration from another. We will continue performing actions inspired by self. Our duty will beckon us. We will advance in the direction of accomplishing it.

Chintan Parag

Our Routine Ought to be for Joy of Self

Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

I would like to hark back to the time that saw Bhagwan Mahavir become a perfected Master and attain liberation. Now, who inspired Ganadhar Gautam (Bhagwan's chief disciple) to rise and march in that same direction? It is his soul that inspired him. In fact, when we miss out on the psyche of 'self-joy', or say, stray therefrom, we harbour the feeling that someone ought to offer us a helping hand, inspire us, encourage us. This feeling is not wholly amiss, but I would like to say that we must not psyche ourselves into it. We may not formulate our aspirations and expectations on those lines. Should we do so, we might lose track of our goal. Our feelings relating to 'joy of self' become secondary, or vanish altogether. Instead of 'self-joy', thoughts of gratification of the mind, or of pleasing others, would rear their head. This would be rather inappropriate.

Monday, 02-11-2015

Courtesy- Brahmakshar

> एकांत में ही गंभीर विषय समझ आता है। विचार करने पर मालूम होता है कि संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ परमात्मा न देखता हो। जब परमात्मा सब जगह है तो हिंसा किस जगह की जा सकती है? गुरु की सीख हिंसा की नहीं, अहिंसा व रक्षा की है।

धर्मदेशना

परमात्मा की विभुता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

परमात्मा को अविनाशी और विभु जानने का प्रमाण है पाप में प्रवृत्ति न करना। जिसे परमात्मा की नित्यता और व्यापकता पर विश्वास होगा, उससे पापकर्म कदापि न होगा। आपके साथ राजा का सिपाही हो तब क्या आप चोरी करेंगे? आपको भय रहेगा कि सिपाही साथ है, चोरी कैसे करें? इसी प्रकार जिसने परमात्मा को व्यापक जान लिया, वह किसी के साथ कपट कैसे कर सकता है? जब कभी उसके हृदय में विकार उत्पन्न होगा और कपट करने की इच्छा का उदय होगा, तभी वह सोचेगा कि ईश्वर व्यापक है। वह तो उसमें भी है और मुझमें भी है। मैं कैसे कपट करूँ? मैं जो ठगाई करना चाहता हूँ, उसे परमात्मा देख रहा है। ऐसी स्थिति में मैं कैसे इस पाप में प्रवृत्त होऊँ?

परमात्मा की सच्ची प्रार्थना करके हमें इस उच्च स्थिति तक पहुँचना है। एक उदाहरण द्वारा यह बात सरलता से समझ में आ जाएगी।

एक गुरु के पास दो व्यक्ति शिष्य बनने के लिए गए। गुरु के पास पहुँचकर उन्होंने निवेदन किया- ''महाराज! हम आपकी विद्या, बुद्धि और शक्ति की प्रशंसा सुनकर आकर्षित हुए हैं और आपके शिष्य बनकर सब विद्याएँ प्राप्त करना चाहते हैं। कृपा करके आप हमें अपना शिष्य बना लीजिए।''

गुरु को शिष्य का लोभ नहीं था। अतएव वे बोले- ''आपको चेला बनना सरल मालूम होता है, पर मुझे गुरु बनना कठिन जान पड़ता है। इसलिए पहले परीक्षा कर लूँ।''

आप लोग रुपये बजा-बजाकर लेते हैं और बहिनें हंडियाँ ठोक-बजाकर लेती हैं। ऐसा न करने से बाद में कभी-कभी पछताना पड़ता है और उपालंभ सहना पड़ता है। इसी प्रकार चेले खराब निकलें तो गुरु को उपालंभ मिलता है। यों तो भगवान का शिष्य जमाली भी खराब निकला, परंतु पहले जाँच-पड़ताल कर लेना आवश्यक है।

ऐसा विचार कर गुरु ने उन दोनों से कहा- ''पहले परीक्षा करूँगा, फिर शिष्य बनाऊँगा।''

शिष्य- ''ठीक है। परीक्षा कर देखिए।''

गुरु ने कोठरी में जाकर एक मायामय कबूतर बनाया और बाहर आकर चेले से कहा- ''इसे ले जाओ और ऐसी जगह मारो जहाँ कोई देखता न हो।''

पहले चेले ने कबूतर हाथ में लिया और सोचा- ''यह कौन-सा कठिन काम है। ऐसी जगह बहुत हैं, जहाँ एकांत है और कोई देखता भी नहीं। मारना तो

कबूतर ही है, कोई शेर तो मारना है नहीं।'' यह सोचकर वह कबूतर को ले गया और किसी गली में जाकर उसने कबूतर की गर्दन मरोड़ डाली। मरा हुआ कबूतर लेकर वह गुरु के पास आकर बोला- ''लीजिए गुरुजी! यह मार लाया और किसी ने देखा भी नहीं।''

गुरु ने कहा- ''तुम शिष्य होने योग्य नहीं। अपने घर का रास्ता पकड़ो।''

चेला- ''क्यों, मैं अयोग्य कैसे? मैंने ठीक तरह आपकी आज्ञा का पालन किया है।''

गुरु- ''नहीं, तूने मेरी आज्ञा का पालन नहीं अपितु उल्लंघन किया है।''

चेला- ''मगर आज्ञा तो कबूतर को मारने की ही दी थी आपने। और मैंने उसका पूरी तरह पालन किया है।''

गुरु- ''लेकिन मैंने यह भी तो कहा था कि ऐसी जगह मारना 'जहाँ कोई देखता न हो'। यहाँ 'कोई' में तो सभी शामिल हैं। मारने वाला तू, मरने वाला कबूतर और परमात्मा जो विभु हैं, वे भी कोई में शामिल हैं। जब तुमने कबूतर मारा तो तुम स्वयं देख रहे थे, कबूतर देख रहा था और ईश्वर भी देख रहे थे। इन सबके देखते कबूतर को मारने पर भी किस प्रकार तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया?''

चेला अविनीत था। कहने लगा- ''ऐसा ही था तो आपको पहले ही साफ-साफ बता देना चाहिए था। पहले मारने की आज्ञा दी और जब मार लाया तो कहने लगे कि आज्ञा का उल्लंघन किया है। आप कैसे गुरु हैं, मैं अब समझ गया।''

गुरु- ''मैंने स्पष्ट नहीं किया था, फिर भी तुम्हें तो समझना चाहिए था।'' यह सुनकर चेला और ज्यादा भड़का। अंत में गुरु ने कहा- ''भैया! तुम जाओ। मैं तुम्हारा गुरु बनने योग्य नहीं हूँ।''

गुरु ने दोनों नवागंतुकों को पहले से ही अलग-अलग जगह बिठाया। एक से निपटकर गुरुवर दूसरे व्यक्ति के पास पहुँचे। उसे भी वही कबूतर दिया और मार लाने की आज्ञा दी।

शिष्य कबूतर लेकर चला। वह बहुत जगह फिरा। खेतों में गया, पहाड़ों में घूमा और अंत में एक गुफा में घुसा। गुफा में बैठकर यह सोचने लगा- ''यह जगह एकांत तो है, मगर गुरु जी का अभिप्राय क्या है? उनकी आज्ञा यह है कि जहाँ कोई न देखे, वहाँ मारना! मगर यहाँ भी मैं देख रहा हूँ, कबूतर देख रहा है और सर्वदर्शी परमात्मा भी देख रहे हैं। गुरु जी दयालु हैं। मालूम होता है उन्होंने अपने आदेश में कबूतर की रक्षा करने का आशय प्रकट किया है, मारने का नहीं। चाहे उनके शब्द कुछ भी हों, मगर उन शब्दों से अखंड दया का ही भाव निकलता है, मारने का नहीं।'' जिसमें इतनी सहज बुद्धि हो, वही शास्त्र का गंभीर अर्थ समझने में समर्थ होता है। वासना से मलिन हृदय शास्त्र का पवित्र अर्थ नहीं समझ सकता।

शिष्य सोचने लगा- ''गुरु जी ने कबूतर की रक्षा की शिक्षा देने के साथ ही यह भी जता दिया है कि एकांत में ही गंभीर विषय समझ आता है। गुरु जी ने जो कुछ कहा था, उस पर मैंने एकांत में विचार किया तो मालूम हुआ कि संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ परमात्मा न देखता हो। जब परमात्मा सब जगह है तो हिंसा किस जगह की जा सकती है? इस तरह गुरु जी ने मुझे परमात्मा का भी दर्शन कराया है। उन्होंने अपने आदेश द्वारा परमात्मा की विभुता का भान कराया है। दयालु गुरु जी ने प्रारंभ में भी कितनी सुंदर शिक्षाएँ दी हैं!''

शिष्य प्रसन्नचित्त और कबूतर को सुरक्षित लिए गुरु के पास लौट आया। गुरु जी भीतर ही भीतर अत्यंत प्रसन्न हुए, लेकिन ऊपर से बनावटी क्रोध प्रदर्शित करते हुए कहने लगे- ''**'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः'**। तुमने तो मंगलाचरण ही बिगाड़ दिया। मेरी पहली आज्ञा का पालन नहीं किया तो आगे चलकर क्या निहाल करोगे? तुम शिष्य होने के अयोग्य हो, अपना रास्ता नापो।''

शिष्य- ''आप जो कहेंगे, वही होगा। लेकिन मुझे मेरी अयोग्यता समझा देंगे तो कृपा होगी। अयोग्य तो मैं हूँ, इसी कारण आपको गुरु बनाना चाहता हूँ।''

गुरु- ''मैंने यह कबूतर मार लाने के लिए कहा था या नहीं?''

शिष्य- ''जी हाँ, मगर साथ ही यह भी तो कहा था कि जहाँ कोई न देखे वहाँ मारना। मैं जगह-जगह भटका- खेतों में गया, पहाड़ों में गया और गुफा में गया किंतु ऐसा कोई स्थान नहीं मिला, जहाँ पर कोई देखता न हो। लाचार हो वापस लौट आया।''

गुरु- ''गुफा में कौन देखता था?''

शिष्य- ''प्रथम तो मैं ही देख रहा था, दूसरा कबूतर स्वयं देख रहा था और तीसरा परमात्मा देख रहा था। गुफा में जाकर मैंने विचार किया तो मालूम हुआ कि आपकी आज्ञा मारने के लिए नहीं, रक्षा करने के लिए है। आपने मुझे ईश्वरीय ज्ञान दिया है। अगर आप मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार करेंगे तो आपकी असीम कृपा होगी। मैं तो आपको गुरु बना चुका हूँ। आपने पहली आज्ञा द्वारा जो तत्त्व समझाया है, वह अकेला ही जीवन शुद्धि के लिए पर्याप्त हो सकता है, लेकिन थोड़ा-सा ज्ञान मिल जाता तो मेरा आचार चमकने लगता।''

गुरु ने उसे छाती से लगाकर कहा- ''बेटा! तू ईश्वर को समझने वाला जिज्ञासु शिष्य है। मैं तुझे ज्ञान दूँगा। अगर तूने ईश्वर को सब जगह न माना होता तो गुरु तेरे साथ कहाँ-कहाँ फिरता? तूने ईश्वर को साक्षी स्वीकार कर लिया है। अब तेरे मन में पाप का प्रवेश न होगा।''

साभार- श्री जवाहर किरणावली भाग-16
(उदाहरण माला भाग-1)

संस्मरण

गुरु के गौरव

-अजीत कड़ावत, रामपुरा

समय की शिला पर कुछ ही पुण्यवान मनीषियों के नाम अंकित होते हैं। आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें ही इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ मानकर नमन करती हैं। हमारी पीढ़ी सीना चौड़ा कर गर्व कर सकती है कि हम उन्हीं आचार्य भगवन् को प्रत्यक्ष वंदन कर रहे हैं।

आधी सदी की संयम यात्रा हर पल प्रभु आज्ञा के सृजित राजपथ पर दृढ़ता से अग्रसर होती रही है। सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं। मुझे विहार सेवा का स्वर्णिम अवसर मिला। एक छोटे-से गाँव में पहुँचते हुए सूर्यास्त का समय नजदीक आ गया। थोड़ी ही दूरी पर एक स्कूल में दो कमरे थे। वहाँ के कर्मचारी ने गुरुभक्ति से एक कमरे को झाड़-बुहार दिया। गवेषणा में सत्य सम्मुख था। पास वाले कमरे की आज्ञा ली, लेकिन सान्निध्यवर्ती संतों सहित उस कमरे में सोने की बात तो दूर विराजना भी सहज नहीं था। यहीं से तो नारा बनता है- **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'**। ऐसे अनेक उदाहरण मैंने देखे हैं।

हमारे श्रद्धा सुमेरु आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. सतत सम्यक् पुरुषार्थी हैं। हर क्षण, हर पल स्वाध्याय, साधना के साथ स्व और पर कल्याण में संलग्न रहते हैं। आचार्य श्री नानेश के पाट को दिग्दिगंत में परमोच्च शिखर पर दीपाने में आपश्री जी ने अपना सर्वस्व समर्पण किया है। आपश्री के अथक पराक्रम ने गुरु के निर्णय को सार्थक सिद्ध कर गौरवान्वित किया है। आपश्री की कृपा के प्रति हम सभी सविधि वंदना अर्ज करते हैं।

धर्मदेशना

दुर्लभ श्रद्धा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

> आंतरिक जीवन में जिस अनुपात से निर्लिप्तता प्रखर बनती जाती है, उसी के अनुसार दुर्लभ श्रद्धा भी सच्ची, स्थिर और श्रेष्ठ बनकर वैसे उन्नत जीवन में सुलभ हो जाती है। तब उस कोटि का साधक साधु जीवन की ओर मुड़ता है तथा संयम की कठोर साधना के साथ आत्मविकास के चरम को प्राप्त करता है।

वासुपूज्य जिन त्रिभुवन
स्वामी घननामी परनामी रे....

मानव अपने जीवन को सदा ऊँचा बनाना चाहता है। जीवन यशस्वी बने, प्रतिभा संपन्न हो, लोकप्रियता प्राप्त करे, जनजीवन के नेतृत्व का अवसर पाए और संसार के लोगों को अपनी ओर प्रभावित कर सके, ऐसी कामनाएँ प्रत्येक प्रबुद्ध पुरुष के मन में उभरती रहती हैं। तदनुसार उसके प्रयत्न भी चलते रहते हैं। विकास की इच्छा बलवती बनती है, तभी उस दिशा में गति करने की प्रवृत्ति भी सशक्त होती है।

अनुरूप कार्य पद्धति का निर्माण

इच्छा रखना और इच्छाशक्ति का बनाना एक बात है, किंतु उसकी सफलता इस तथ्य पर आधारित रहती है कि वह अपने साध्य को प्राप्त करने के लिए किस कार्यपद्धति का निर्माण करता है तथा उसमें अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करने में कैसी विधि अपनाता है। अपने साध्य तथा अपनी इच्छाशक्ति के अनुरूप ही अपनी कार्यपद्धति का निर्माण किया जा सके तभी सफलता की स्थिति सामने आ सकती है।

ऊपर वासुपूज्य भगवान की प्रार्थना में जो **'घननामी'** शब्द आया है उसके आदर्श को हृदयंगम किया जाना चाहिए। प्रवचन के पहले प्रभु की प्रार्थना करने का यही अभिप्राय है कि प्रार्थना की पंक्तियों में समाए हुए आदर्श मूल्यों को प्रवचन में परिभाषित एवं विश्लेषित करें। इससे भव्य आत्माओं के स्मृति-पटल पर वीतराग देवों का ज्योतिर्मय स्वरूप उभरता है तो उनके उन आदर्शों के अनुकरण के प्रति अभिरुचि जागती है, क्योंकि इन प्रार्थनाओं में दार्शनिक एवं तात्त्विक दृष्टि से गूढ़ भावों का अंकन किया गया है। इन गूढ़ भावों पर गहरा मनन और चिंतन किया जा सकता है।

ऐसा चिंतन-मनन जितनी गहराई पकड़ता है, उतनी ही हृदय एवं मस्तिष्क की क्षमता परिपुष्ट बनती है तथा वह क्षमता ही अनुरूप कार्य पद्धति को जन्म देती है।

श्रद्धा की पुष्ट पृष्ठभूमि

जीवन में उन्नति की कामना के आधार पर ही आप लोग दूर-दूर से यहाँ पर आते हैं। यहाँ आने के लिए आप अपने वहाँ के सांसारिक व्यवहारों अथवा गृहस्थी के कार्यकलापों का मोह भी छोड़ते हैं। आखिर क्यों? उन्नति तो मूलत: आप चाहते हैं किंतु उस उन्नति को प्राप्त करने के लिए अनुरूप कार्यपद्धति का निर्माण करना भी चाहते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि श्रेष्ठ साध्य को संपादित करने के लिए श्रेष्ठ साधनों को अपनाया जाना भी अनिवार्य है। इसी स्थिति को समझकर आप यहाँ पहुँचते हैं। आप यह भी समझते हैं कि जीवन के विकास का वास्तविक ज्ञान संत-समागम से ही प्राप्त हो सकता है।

यह जो आपकी जागरूक प्रवृत्ति है, क्या आपने कभी सोचा है कि यह क्यों गतिशील बनती है? इस प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में यह आपकी पुष्ट श्रद्धा की प्रेरणा

है। किन्हीं लोगों के मन में यह श्रद्धा विवेकसंपन्न व्यवस्थित स्वरूप ग्रहण न कर सकी हो यह दूसरी बात है, परंतु मूल में जमी हुई श्रद्धा के प्रभाव से आप यहाँ पर अपने जीवन की उन्नति की इच्छा लेकर आते हैं।

प्रभु की प्रार्थना के प्रसंग से कुछ बातें रख गया हूँ और अब गाथाओं का प्रसंग रखता हुआ चला जा रहा हूँ। इसमें कितना गूढ़ रहस्य है यह तो शब्दों और भावों की विशिष्टता में पहुँचने वाले महानुभाव ही अनुभव कर सकते हैं। मैं कह रहा था कि प्रार्थना में **'घननामी'** शब्द आया है। यह घननामी और कोई नहीं बल्कि इसी देह में विराजित चैतन्य देव हैं, परंतु विडंबना यही है कि घननामी ही घननामी को समझ नहीं पा रहा है। उस स्वरूप के प्रति यह अज्ञान चिंतनीय है।

श्रद्धा को दुर्लभ क्यों कहा है?

नवीन जीवन का विराट स्वरूप आपके ही अपने भीतर रहा हुआ है। विराट स्वरूप का जन्म माता की कुक्षि में नहीं होता। जन्म तो शरीर का होता है, लेकिन विराट स्वरूप को जन्म देने वाली अपनी ही आत्मा होती है, जो इसी शरीर पिंड में रहती है।

इस विराट स्वरूप का जन्म होगा कैसे? विराट स्वरूप प्रकट होता है दृष्टि के परिवर्तन से, उसकी स्थिरता से। दृष्टि का अर्थ ही दर्शन होता है तथा दर्शन का अध्ययन-मनन और चिंतन ही आत्मविकास के प्रति दृष्टि को स्थिर बनाता है। यह समझें कि यह दृष्टि विकास ही आत्मविकास है। दृष्टि ही दर्शन है तथा दर्शन नाम है श्रद्धा का। ज्ञान के बाद दर्शन का इसी कारण स्थान है कि आचरण के साथ प्रगाढ़ श्रद्धा की परिपुष्टता अत्यंत ही आवश्यक है। प्रभु महावीर ने इसी दृष्टि से फरमाया है-

'सद्धा परम दुल्लहा'

अर्थात् श्रद्धा परम दुर्लभ होती है। अपने घननामी को अनुभव करने, उस घननामी को इस घननामी में प्रतिष्ठित करने हेतु पुरुषार्थ जगाने का यह श्रद्धा ही बड़ा सशक्त माध्यम है।

श्रद्धा से ही प्रतीति होती है और प्रतीति से रुचि। यह रुचि ही पुरुषार्थ की आधारशिला बनती है। जहाँ तर्क का प्रवेश न हो ऐसे धर्मास्तिकाय आदि पर व्याख्याता के कथन से विश्वास कर लेना श्रद्धा है। श्रद्धा के साथ जब व्याख्याता को सुना जाता है तब उसकी युक्तियों द्वारा समझकर विश्वास करना प्रतीति की परिभाषा में आता है। व्याख्याता द्वारा उपदिष्ट विषय में श्रद्धा करके उसके अनुसार तप, चारित्र आदि के सेवन करने की इच्छा करना रुचि कहलाता है। इसी शुद्ध श्रद्धा की नींव पर विनय, अनुभाषण, अनुपालना तथा भाव शुद्धि तक की कार्यपद्धति का निर्माण सुदृढ़ बनता है। इसी श्रद्धा की प्रेरणा से आप संत-समागम में आते हैं। उसी श्रद्धा को प्रगाढ़ बनाकर आपको अपनी आंतरिकता में प्रवेश करने का अवश्य ही प्रयास करना चाहिए। भीतर प्रवेश करके वहाँ के रहस्य को उद्घाटित करने वाले पुरुष विरले ही मिलेंगे, क्योंकि आज के युग में सामान्यतया दृष्टि स्थिर नहीं हो पाती है तो उसी अनुपात में श्रद्धा अपने वास्तविक स्वरूप में प्रगाढ़ नहीं हो पाती है। आज अच्छे विचारों की बहुत आवश्यकता है, किंतु उसके ही साथ गहरी श्रद्धा की उससे भी पहले आवश्यकता है।

यही कारण है कि वीतराग देवों ने इस श्रद्धा को परम दुर्लभ कहा है। उन्होंने तप को दुर्लभ नहीं कहा, चारित्र को दुर्लभ नहीं कहा या किसी अन्य विचार को दुर्लभ नहीं कहा। केवल श्रद्धा को दुर्लभ ही नहीं अपितु परम दुर्लभ कहा है, क्योंकि श्रद्धा के ही बल पर चारित्र्य का निर्माण होता है तथा जीवन के श्रेष्ठ मूल्य प्रखरता से अभिव्यक्त होते हैं। संत-समागम की अभिलाषा लेकर आप दूर-दूर के प्रदेशों से यहाँ आए तो उस आगमन में श्रद्धा की सच्ची कसौटी यह होगी कि आप संतों द्वारा उपदेशित वचनों में कितना गहरा विश्वास करते हैं तथा उनको आधारभूत बनाकर अपने जीवन में कैसी गति से उन्नति की दौड़ को जीतते हैं? सच्चरित्र पुरुष के प्रति जब तक पूरा विश्वास नहीं होगा, तब तक अच्छे चरित्र का विकास भी नहीं हो सकेगा। विचार सही नहीं होगा तो उच्चारण भी सही नहीं हो सकेगा, फिर आचरण सही कैसे हो सकता है?

आचरण का आधार सच्ची श्रद्धा

आचरण रूपी वृक्ष जिस भूमि से रस ग्रहण करके पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है, वह भूमि सच्ची

श्रद्धा की होती है। आचरण अंत:करण की प्रक्रिया से संबंधित होता है, उसे जोड़ने वाली कड़ी श्रद्धा ही है। एक आम का विशाल वृक्ष फलता और फूलता है तो क्या उसे रस उसकी शाखा-प्रशाखाओं से मिलता है या उस जमीन से, जिस पर वह खड़ा होता है? निश्चय ही उसे रस जमीन से मिलता है, जिसके आधार पर वह खड़ा रहता है। जमीन के रूप में श्रद्धा को समझिए, जिसके आधार पर संपूर्ण जीवनाचरण फलता और फूलता है। बाहर से विशाल दिखाई देने वाले आम्रवृक्ष की जमीन के भीतर फैली छोटी-छोटी जड़ें अगर जमीन से रस न लें तो क्या बाहर दिखाई देने वाला उस वृक्ष का विशाल रूप हरा-भरा और फला-फूला रह सकता है? जड़ें या नींव जिसकी मजबूत होती हैं, उसका ही समुचित विकास संभव होता है।

मानव जीवन के विकास के संदर्भ में इसी उक्ति को इस प्रकार कह सकते हैं कि श्रद्धा जिसकी मजबूत होगी, सच्ची और स्थिर होगी, उसकी आत्मा का विकास भी उसी अनुपात से श्रेष्ठ और प्रभावोत्पादक होगा। आप विचार करें कि हमारे जीवन का मूल स्वरूप कहाँ स्थित है? मूल स्वरूप तो अविकसित या अल्प-विकसित अवस्था में अपनी ही आंतरिकता में रहा हुआ है, किंतु उसी मूल स्वरूप के पूर्ण विकास का ही तो प्रश्न हमारे सामने है और उसी विकास की आधारभूमि बनती है सच्ची और सुदृढ़ श्रद्धा।

इस तथ्य को यदि सम्यक् प्रकार से समझ लिया जाए तो आत्मविकास का साध्य और उसके सभी साधन भी सम्यक् बन जाते हैं। सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन है तो सम्यक् आचरण का स्वरूप बनेगा ही। ऐसे आचरण का प्रभाव भी सार्वदैशिक होता है। एक गुलाब का फूल आपके जलगाँव के बगीचे में खिले या किसी छोटे गाँव में या फिर विदेश के किसी कस्बे में, क्या उसकी सुगंध समान रूप से प्रभावशाली नहीं होगी या कि उसकी सुगंध के प्रेमियों को अपनी ओर एक ही समान आकर्षित नहीं करेगी? जिसको गुलाब की सुगंध से प्रेम है, वे यह थोड़े ही देखेंगे कि गुलाब का फूल कहाँ लगा है। गुलाब का सुगंधित फूल है, यही उनके लिए पर्याप्त है। इसी प्रकार श्रेष्ठ आचरण कहाँ है और किसके पास है उन सब विषयों से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यही है कि आचरण की श्रेष्ठता यदि आ गई तो उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास की धारा अवश्य ही बह चलेगी।

दूसरी बात, अगर गुलाब की सुगंध प्रिय है या श्रेष्ठ आचरण विश्वास का भाजन या श्रद्धा का पात्र है तो उसको खोजने और प्राप्त करने के लिए कहीं भी जाने का उत्साह जग जाता है। यही नहीं, उस कार्य के लिए यदि किसी प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ें तो उन कष्टों को खुशी-खुशी सहन भी कर सकते हैं। यह सब श्रद्धा का ही विषय होता है और उसी की प्रेरणा होती है।

श्रद्धा है तो सुख और संतोष भी है

श्रद्धा की सजलता से जब किसी का हृदय आप्लावित हो उठता है तो उस हृदय में सुख और संतोष की धाराएँ भी फूट पड़ती हैं। श्रद्धा की पृष्ठभूमि पर जब आचरण की साधना सफल होती है तो अपने अंत:करण में उससे उत्पन्न सुखानुभूति का आनंद निराला ही होता है। श्रद्धा और सदाचरण की प्राप्ति से मनुष्य अपने विचारों से सुखी बनता है।

सुख कहाँ है? क्या आप भी विचार करेंगे? कई लोग इसमें ही सुख मानते हैं कि इस मानव जीवन में विकारों का पोषण किया जाए। क्या इंद्रियजन्य विकारों के पोषण से भ्रांतिपूर्वक महसूस किया जाने वाला सुख निरंतर सुख दे सकेगा? यह सुख नहीं सुखाभास होता है, जो शराब से मिलने वाली महसूसगरी की तरह मालूम होता है। उपलब्धि होती है, लालसा बढ़ती है और यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक कि इस जीवन का अंत नहीं हो जाता। हाय-हाय करते ही मौत आ जाती है तथा यह अमूल्य मानव जीवन निरर्थक हो जाता है।

वास्तविक सुख वहाँ है, जहाँ पर श्रेष्ठ विचार हैं और उन विचारों के प्रति सच्ची श्रद्धा है। इस श्रद्धा के प्रभाव से ही संतोष-धन की प्राप्ति होती है।

श्रद्धा अनुप्राणित हो आंतरिक जीवन से

सोचें कि एक नागरिक ने धन का उपार्जन किया और उसमें उसने नीति-अनीति का कोई खास खयाल नहीं रखा। ज्ञानीजन ही लेखा-जोखा कर सकते हैं कि उसने अपने उस धनोपार्जन में कितनी नीति बरती

और कितनी अनीति का बर्ताव किया। उसने चाहे जैसे कर्म करके धन कमाया, लेकिन दूसरी विचारणीय स्थिति यह आती है कि वह उस उपार्जित धन का उपभोग कहाँ और कैसे करता है। यह उसके विचारों पर, उसकी श्रद्धा पर निर्भर करेगा।

जिन पुरुषों के विचार और श्रद्धाभाव जब अपने संशोधित एवं विकसित आंतरिक जीवन से अनुप्राणित होते हैं तो कई बार पाप की कमाई भी पुण्य के कार्यों में खर्च हो जाती है। इसकी विपरीत स्थिति भी देखने में आती है कि पुण्य की कमाई तो पाप कार्यों में खर्च होती ही है। अपने बच्चे-बच्चियों के शादी-ब्याह में आडंबर का प्रदर्शन कर जैसे दिखाया जाता है कि उसके पास धन-वैभव की भारी शक्ति है। उसके विचार उठते हैं कि इस आडंबर से लोग किस तरह प्रभावित होंगे और चारों ओर उसकी तारीफ करेंगे। आंतरिक जीवन के पिछड़ेपन के कारण उन आडंबरों को दिखाते हुए यह नहीं सोचा जाता कि इससे मेरे अनेक भाइयों के सीधे-सादे जीवन में आग तो नहीं लग रही है। उनका जीवन नए-नए कष्टों से दु:खित तो नहीं बन रहा है। वह तो अपनी ही लालसाओं का पोषण करता है, दूसरों की भावनाओं के संत्रास को नहीं समझता। यह आंतरिक जीवन की विकृति का ही दुष्परिणाम माना जाएगा।

वर्तमान युग में तो ऐसे विकारपूर्ण जीवन की जैसे होड़ ही मची हुई है। अधिकांश व्यक्ति अपने ही स्वार्थों के घेरे में कैद रहते हैं तो अपनी ही लालसाओं की पूर्ति के लिए नीति-अनीति का खयाल रखे बगैर कुछ भी करणीय-अकरणीय करते रहते हैं। ऐसे विषाक्त वायुमंडल में विरले ही व्यक्ति मिलेंगे जो इस प्रकार के विकारपूर्ण बहाव में न बहते हों। अपने ही विकारों के पोषण के लिए आज का मानव चोरी करता है, डाका डालता है और नाना प्रकार के अपराधों में लिप्त रहता है।

हृदय की ऐसी कलुषिता को धो डालने के लिए ही हमें श्रद्धा को अपनाना चाहिए ताकि सद्विचारों की प्रेरणा से सदाचरण की भूमिका पुष्ट बने तथा संतोष के अनुभव से आप्लावित बनकर सुखानुभूति की लहर हमारी आंतरिकता को छू सके, उसे सात्त्विक विचारों से अनुप्राणित कर सके। ज्ञानीजन की भाषा में इसी कारण कहा गया है कि **'संतोषी सदा सुखी'**। चाहे कितनी ही भौतिक संपत्ति प्राप्त हो जाए तब भी संतोष का अनुभाव जीवंत रहे। संपत्ति में रंचमात्र भी आसक्ति नहीं आए तो वैसा सात्त्विक पुरुष सच्चे सुख की राह पर जरूर ही आगे से आगे बढ़ता हुआ अपने चरम लक्ष्य तक पहुँच सकेगा।

आंतरिक जीवन में जिस अनुपात से निर्लिप्तता प्रखर बनती जाती है, उसी के अनुसार दुर्लभ श्रद्धा भी सच्ची, स्थिर और श्रेष्ठ बनकर वैसे उन्नत जीवन में सुलभ हो जाती है। तब उस कोटि का साधक साधु जीवन की ओर मुड़ता है तथा संयम की कठोर साधना के साथ आत्मविकास के चरम को प्राप्त करता है।

दुर्लभ श्रद्धा को सुलभ बना लें

श्रद्धा को दुर्लभ कहा है इसलिए कि उसको प्राप्त करने के लिए एक साधक अपना संपूर्ण सत्पुरुषार्थ नियोजित करने का संकल्प बनाए, किंतु साहस और संयम के साथ आन्तरिक जीवन को पूर्ण रूप से निर्विकारी बना लिया जाता है तब उस पराक्रमी पुरुष के लिए दुर्लभ श्रद्धा भी सुलभ हो जाती है। क्या आप लोग भी अभिलाषा रखते हैं कि आपके लिए भी यह दुर्लभ श्रद्धा सुलभ हो जाए?

मैं युवा भाई-बहिनों से यह प्रश्न विशेष रूप से पूछना चाहता हूँ, क्योंकि यहाँ पर नई पीढ़ी के लोगों ने प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विशेष रुचि दिखाई है और तदनुसार प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रात की बजाय प्रवचन के पश्चात् रखा गया है। बोरीवली (मुंबई) के चातुर्मास में भी ऐसा ही किया गया था। कहने का अभिप्राय यह है कि भावनापूर्ण श्रद्धा की संपत्ति आंतरिक जीवन के संशोधन एवं उन्नयन से ही हो सकती है। यदि युवा वर्ग इस लक्ष्य को हृदयंगम कर ले एवं उसकी पूर्ति के लिए जुट जाए तो न केवल उस वर्ग का ही उत्थान होगा, अपितु संपूर्ण समाज एक नए आत्मीय वातावरण से ओत-प्रोत हो उठेगा।

श्रद्धा की प्रगाढ़ता के साथ सच्चे सुख के मार्ग की खोज की जाएगी तो वह सच्चा सुख एक साधक को आत्मविभोर करेगा और उसका सुप्रभाव सारे समाज और संसार पर भी पड़ेगा।

साभार- नानेशवाणी-50 (अध्यात्म का कुआँ)

> जीवेषणा मनुष्यों से उचित-अनुचित सब करा लेती है। न्याय-अन्याय की बुद्धि पर भी यह आवरण लगा देती है। इस प्रकार कर्मों की दिशा और गति बदलने या परिवर्तित करने में जीवेषणा का बड़ा योग होता है। जीवेषणा आरंभ से जोड़ती है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसकी शक्ति की दिशा को बदला जाए और उसे कल्याणकारी दिशा में मोड़ा जाए। यह संयम से ही संभव है। ऐसा संयम तप बन जाता है।

धर्मदेशना

धर्मश्रद्धा से आत्मा की रक्षा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अभिनन्दन-जिन दरसन तरसिये....।

अभिनन्दन-जिन दरसन तरसिये। अभिनन्दन-जिन के दर्शन हम चाहते हैं, यह बात ठीक है, किंतु आज दुनिया में सबसे ज्यादा आवश्यकता किस बात की है? प्रत्येक व्यक्ति के अपने विचार होते हैं, इसलिए अगर एक-एक से पूछने लग जाएँ तो उत्तर एक समान आना कठिन है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता भिन्न है। किसी को धन की आवश्यकता है, किसी को संतान की, किसी को और किसी वस्तु की। आवश्यकता के आधार पर चिंतन में अंतर आ सकता है, पर हमें तव रूप में जानना चाहिए कि हमें किस पदार्थ की आवश्यकता है। हमें ही नहीं, यदि कहा जाए कि पूरे विश्व को किस चीज की आवश्यकता है तो मेरे खयाल से तत्काल जबान पर शब्द आएगा- **'शांति'**। शांति की सबको आवश्यकता हो सकती है। पर मैं कहता हूँ- शांति की उतनी आवश्यकता नहीं है। आज यदि सबसे बढ़कर कोई आवश्यकता है तो वह है **'आत्मविश्वास'** की। वह आ गया तो सुख आ जाएगा। आत्मविश्वास आपके भीतर आ गया तो आप दु:खी नहीं हो सकते, सुख पीछे दौड़ता आएगा। आज अधिकांश व्यक्ति आत्मविश्वास से वंचित हैं, उन्हें स्वयं पर ही विश्वास नहीं है। बिना विश्वास के निर्णायक कदम कैसे उठाया जा सकता है? कहने का आशय यह है कि जब तक विश्वास नहीं, तब तक व्यक्ति की गति और प्रवृत्ति दोनों डोलायमान बनी रहती हैं। व्यक्ति डोलायमान रहता है, इसी प्रकार आत्मविश्वास के अभाव में हमारी गति शिथिल रहती है। जब तक आत्मविश्वास की स्थिति नहीं बनती, तब तक सुख नहीं मिलता, शांति नहीं मिलती।

भगवान से जो प्रश्न पूछा गया, वही प्रश्न आपके बीच चल रहा है-

''धम्मसद्धाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?''

श्रद्धा की बात बाद में करेंगे, पहले धर्म को तो समझें। अहिंसा-संयम-तप की त्रिपुटी ही धर्म है। दया भी अहिंसा का ही एक नाम है। अत: विचार करें कि दया किस पर की जाए? चार प्रकार के भांगे बताए गए हैं-

1. स्वयं की करता है, पर की नहीं।
2. पर की करता है, स्वयं की नहीं।
3. स्वयं की व पर की, दोनों की करता है।
4. न स्वयं की, न पर की, दोनों की नहीं करता है।

स्थविरकल्पी और श्रावक का स्वरूप इस भांगे में रहा है कि स्वयं की भी दया करे और पर की भी करे।

स्वदया का रूप है- अहिंसा। हम अपने आप में अहिंसक बन जाएँ। कभी हम विचार कर लें कि किसी प्राणी को नहीं मारेंगे तो क्या हम अहिंसक बन जाएँगे? बात ध्यान में लेने की है। साधु की पोशाक पहनी, अहिंसा महाव्रत स्वीकार किया, छठे गुणस्थान तक भी चला गया, किंतु वहाँ पर भी आत्मारंभी रहा। अपनी आत्मा का आरंभ करने वाला रहा। जब आरंभ करने वाला है तो क्या पूर्ण अहिंसक बन सकता है? जो आत्मारंभी होता है, वह दूसरे का आरंभ भी करता है। जो स्व-पर का आरंभ करने वाला होता है और स्व-पर के आरंभ करने की स्थिति बनती है तो व्यक्ति स्वयं के प्रति अहिंसक नहीं बनता। यदि अहिंसा की एक पंक्ति में व्याख्या या अर्थ करना चाहें तो उसका अर्थ होगा कि हमारी 'जीवेषणा समाप्त हो जाए' यदि वह समाप्त हो जाती है तो आरंभ से ऊपर उठ जाते हैं।

आरंभ किसलिए करते हैं? कारण क्या हैं? मैं जिंदा रहूँ, मेरा परिवार जिंदा रहे, यह जीवेषणा आरंभ से जोड़ती है। इससे जितने गहरे जुड़ते हैं उतने ही हिंसा से जुड़ते हैं। जीवेषणा से जितने-जितने ऊपर उठेंगे, उतने-उतने अहिंसक बनेंगे और जिस दिन जीवेषणा पूर्णत: समाप्त हो जाएगी वह दिन हमारे पूर्णत: अहिंसक बन जाने का होगा। वह दिन समता का होगा। अभी हम अहिंसा से जुड़े जरूर हैं, किंतु उस कोटि की अहिंसा प्राप्त नहीं हुई है, पर लक्ष्य बना हुआ है।

साधुओं के लिए कहा गया है- तुम स्वाद के लिए भोजन करोगे तो अनेकानेक मिर्च-मसाले जोड़ते चले जाओगे, क्योंकि स्वाद में मनमर्जी की चीजें चाहिए। साधु जीवेषणा में नहीं पड़े, इसलिए कहा गया है कि उसे रांधन-पाचन का कार्य नहीं करना है। वह दूसरे घरों में जाएगा, दूसरा जो देगा, जो-कुछ बहराएगा, उसमें उसे संतोष करना पड़ेगा। संतोष नहीं तो अध्यवसाय विचलित होंगे। जो बहराया जाएगा, जो मिलेगा, उसमें ही जब संतोष करेगा तो स्वादिष्ट है या नहीं, उसमें नहीं जाएगा। हमारी चित्तवृत्तियाँ विचित्र हैं, उनमें भी स्वाद ढूँढ़ लेगा। इसलिए कहा गया है कि 'पूरी गवेषणा करके लाए', स्वाद में पड़कर ठगना न सीखें। गृहस्थ के घर में गए, देखा कि सब्जी मसालेदार है तो ले ली। स्थानक में आए और भोजन करने बैठे, पर भोजन तो अलूणा निकल गया। मिर्च-मसाले बहुत है, पर नमक नहीं। नाक, भौंहें सिकोड़ने लगा कि कैसी बहिन है? भूल गई। अब ये मिर्च-मसाले किस काम के? गोचरी जाने के टाइम भी विचार नहीं करे कि आज अमुक श्रावक के घर बड़ा भोज है इसलिए वहाँ से अच्छी-अच्छी स्वादिष्ट चीजें लाऊँगा। इससे जीवेषणा के भाव बढ़ेंगे। ये भाव बढ़ेंगे तो अहिंसा की पराकाष्ठा नहीं आ पाएगी। सामायिक चारित्र में चलते रहोगे, पर यथाख्यात चारित्र नहीं मिल पाएगा। जब तक जीवेषणा रहेगी, व्यक्ति सरागता में डोलेगा, पर यथाख्यात् चारित्र, पूर्ण समता, वीतरागता प्राप्त नहीं कर पाएगा। किसी व्यक्ति-विशेष की बात नहीं है, चाहे मरुदेवी माता हों या गजसुकुमाल मुनि, जिसने भी जीवेषणा समाप्त कर दी, उसने मुक्ति को वर लिया।

सुव्रत अणगार ने त्याग-वैराग्य से दीक्षा ली और लेने के बाद त्याग-वैराग्य के साथ ही तपस्या, अध्ययन भी प्रारंभ कर दिया। एक नगर में पहुँचे, श्रावक वर्ग सामने नहीं आया। संतों को विचार हुआ कि बात क्या है, यहाँ के श्रावक हैं तो धर्मरक्षक, फिर सामने नहीं आने का क्या कारण है? संत नहीं चाहते कि श्रावक सामने आएँ, पर जो परंपरा बनी होती है उसके अनुसार नहीं होता है तो सहज स्फुरणा बन जाती है। उसी प्रकार की स्फुरणा उन संतों के मन में बनी। बाद में जब श्रावक वर्ग आया तब ज्ञात हुआ कि उस दिन मोदक महोत्सव था। संतों ने पूछ लिया मोदक महोत्सव का क्या तात्पर्य? तब बताया कि आज सभी अपने-अपने घर मोदक बनाते हैं, फिर परिजनों के साथ बगीचे आदि स्थानों पर पहुँचकर मोदपूर्वक मोदक खाते हैं। यहाँ मोदक महोत्सव मनाया जाता है। इसलिए घर-घर में मोदक बने हैं। हाँ, जिसकी जैसी मर्जी हो वैसे बनाता है। कोई नुक्ती के, कोई चूरमे

के, कोई मावे के और गुंजाइश हो तो सिंह-केशरी मोदक भी बनाते हैं। केशरिया मोदक का नाम सुव्रत अणगार ने भी सुना। सुनकर सुव्रत अणगार के मन में पूर्व के संस्कार जाग उठे- मैं घर में केशरिया मोदक का कलेवा करता था। वर्षों पहले खाया था, उसका स्वाद जीभ पर आने लगा। इधर गुरु जी ने कहा- ''आज मोदक महोत्सव है, गरिष्ठ भोजन मिलेगा, तो आज सभी उपवास कर लो।'' सभी ने कर लिया। सुव्रत ने सोचा- ''आज का मोदक चूके तो पता नहीं फिर कब मिले!'' अत: कहा- ''गुरुदेव! मुझे तो कमजोरी लग रही है, तबीयत बराबर नहीं है।'' देखिए, स्वाद में पड़े तो कमजोरी आ गई! मन कमजोर हो गया तो तन में कमजोरी आ गई। जीवेषणा व स्वाद के पीछे मन कैसे-कैसे दाँव-पेंच खेलता है! गुरु ने कहा- ''कोई बात नहीं, विश्राम कर लो।'' गोचरी का समय हुआ, पातरे लेकर गुरु के पास आया। बोला- ''गुरुदेव! आपकी आज्ञा हो तो मैं गोचरी जाऊँ?'' गुरु ने कहा- ''दूसरे संतों को भेज देता हूँ, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।'' सोचा- ''दूसरे गए और सिंह-केशरी मोदक न लाए तो उपवास भी छोड़ा और मोदक भी नहीं मिलेगा।'' कहा- ''गुरुदेव! दूसरों को क्यों तकलीफ दूँ, मैं ही चला जाऊँगा धीरे-धीरे।'' बंधुओ! यह कपट कहाँ से कहाँ पटक देता है! कपट और पटक शब्दों के अक्षर वही हैं केवल उनका स्थान-परिवर्तन हुआ है। जो कपट करता है उसे वह पटक देता है, उसे दबाकर रखता है और आत्मा को ऊपर उठने नहीं देता। आज्ञा हो गई। भिक्षा के लिए निकले। कई घरों में घूमे। कई जगह थे नहीं, कहीं थे तो असूझते पड़े थे। माथा ठनका, यह क्या स्थिति है? लगभग सभी घरों में घूम लिए, पर सिंह-केशरी मोदक नहीं मिले। कैसी स्थिति है? व्यक्ति स्वाद के पीछे कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है! संध्या तक घूमे, पर मोदक नहीं मिले। रात्रि हो गई, पर वे घूमे जा रहे थे। अब तो आवाज भी लगाने लगे- केशरिया मोदक, केशरिया मोदक। सड़क पर सतत चल रहे थे। एक श्रावक जी ने अपने घर के गोखड़े से देखा कि आवाज कहाँ से आ रही है? अरे! ये तो संत हैं। ये तो मेरे घर भी आए थे, पर मोदक सूझते नहीं थे। बाहर आकर बोले- ''बाप जी! पधारो-पधारो, कृपा करावो।'' घर में लाए। थाल भरकर मोदक लाए। संत की आँखों में चमक आ गई। पातरा निकाला झोली से, रख दिया। श्रावक जी ने भी थाल उठाया और पूरा पातरा उलट भाव से भर दिया। मन में यह नहीं सोचा कि कैसा भुक्कड़ साधु है।

श्रावक के लिए भाषा के आठ गुण बताए गए हैं- श्रावक जी थोड़ा बोलें, काम पड़ने पर बोलें, सूत्र-सिद्धांत के न्याय से बोलें, आगे-पीछे का पूरा विचार रखें, चतुराई से बात कहें, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव का ध्यान रखें आदि।

श्रावक ने देखा, अभी माथा केशरिया मोदक में लगा है, कहना ठीक नहीं। इसलिए पहले बहरा दिया। जब संत पातरा उठाकर जाने लगे तो कहा- ''मत्थएण वंदामि। अभी समय क्या हुआ होगा?'' संत ने देखा, आकाश में तारे दिखाई दे रहे थे और रात के लगभग बारह बज रहे थे। ''ओहो! मेरे से कैसी भूल हो गई?'' कहते हैं- ''श्रावक जी! मैं गुरु महाराज के पास जाना चाहता हूँ।'' श्रावक ने कहा- ''अभी जाने की जरूरत नहीं, मेरी पौषधशाला में विराजें।'' पातरा एक तरफ रख दिया। अभी खाना नहीं है इतना जागरण था। इतना जागरण रहे तो भी बचाव हो सकता है। एकांत में बैठ गए। चिंतन चलने लगा- ''गुरु ने सुव्रत दिया और तुमने उसे कलंकित कर दिया। जीवेषणा के पीछे क्या कर लिया? तुम्हारे अंतराय का योग था। ओहो! धिक्कार है मेरी आत्मा को!'' पश्चात्ताप करने लगे। पश्चात्ताप करके सारा कल्मष धो लिया। घनघाती कर्म समाप्त हो गए और केवलज्ञान की ज्योति जग गई।

'कैसा वह श्रावक और कैसे संत।'

रगड़ कहाँ लगानी और कैसे लगानी, यह वह श्रावक जानता था। लड्डू चले गए, कोई चिंता नहीं। यदि

वह कहने लग जाता कि कैसा साधु है, जिह्वालोलुप बनकर रात्रि को घूम रहा है तो स्थिति क्या बनती? किंतु माता-पिता के विरुद को निभाने वाला श्रावक था, इसलिए उसके निमित्त ने गिरते हुए को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया! और सुव्रत जैसा संत, जिसने थोड़ा-सा निमित्त पाकर इष्ट सिद्ध कर लिया। सुबह गुरु के पास संवाद पहुँचा तो गुरु चल पड़े शिष्य से मिलने। उधर सुव्रत पहुँच रहा था गुरुचरणों में। मार्ग में ही मिलन हो गया। गुरु को सामने देखा, वंदन करने लगे तो गुरु ने कहा- ''तुम केवली हो'' और मना कर दिया। गुरु भी चिंतन में उतरे, गुरु को भी केवलज्ञान हो गया।

व्यक्ति उठना चाहे तो विचारों से उठ भी सकता है और जीवेषणा में उलझ जाए तो क्या दशा हो जाती है, आपने देख ली। जीवेषणा को समाप्त कर दिया तो जन्म-जन्मांतर को समाप्त कर दिया। इसलिए देखें कि हमारे भीतर जीवेषणा की क्या स्थिति है। यदि वह है तो समझ लें कि अभी बहुत तपना पड़ेगा। जब जीवेषणा समाप्त हो जाएगी तब देखिएगा भीतर कैसी वीरता जगती है! जब तक उस पर अंकुश नहीं लगाएँगे तो वीरता कैसे जगेगी?

भगवान महावीर की आत्मा में भी त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में जीवेषणा के कीटाणु मौजूद थे। इसलिए अश्वग्रीव के दूत द्वारा अशिष्ट व्यवहार को देखकर उन्हें उत्तेजना आ गई। तब त्रिपृष्ठ कहने लगा- ''यह कैसा असभ्य है? सभा में आने के शिष्टाचार का भी ज्ञान नहीं! जिसे सभा की रीतियों-नीतियों का भी ज्ञान नहीं, वह व्यक्ति सभ्य कैसा? उसका सम्मान क्यों किया गया? पर अभी मुझे कुछ नहीं बोलना है। पूज्य पिता जी विराजमान हैं, उनका तिरस्कार न हो।'' उसने बाद में जानकारी ली कि वह कौन था, तो ज्ञात हुआ कि वह अश्वग्रीव का दूत था। सम्राट ने बताया कि स्वामी का कुत्ता भी आए तो दुम हिलानी पड़ती है, उसका भी उतना ही सम्मान करना पड़ता है। हालांकि वह दूत था, पर स्वामी का था। वे नाराज न हो जाएँ इसलिए उन्हें खुश रखना था। यदि उनकी निगाह टेढ़ी हो जाती और दूत भी भड़काने का काम करता तो वे क्रोधित हो जाते। उस स्थिति में इस राज्य के अस्तित्व पर ही संकट आ जाता। त्रिपृष्ठ ने सोचा- यह कैसा सत्तामद? स्वामी भी यदि मनमानी करेगा तो प्रजा कैसे जीएगी? स्वामी को भी अपने मान-सम्मान का ध्यान रखना चाहिए।

त्रिपृष्ठ ने विचार किया, बड़े सम्राट का दूत है, पर जब प्रवेश का तौर-तरीका नहीं जानता तो सभ्य कैसा? इधर प्रजापति को वह इस प्रकार आदेशित करता है जैसे कोई स्वामी अपने दास को करता है कि ऐसा करना है, वैसा करना है। त्रिपृष्ठ के भीतर ज्वाला उठने लगी। यह कैसा तरीका? कैसे बोलना, इसका भी इसे विवेक नहीं। ऐसे विचार त्रिपृष्ठ के क्रोध को भड़काने वाले बने, पर वह उन्हें भीतर ही भीतर दबाए रहा।

विचार कीजिए कि क्या क्रोध भीतर दबा रह सकता है? दबाया हुआ तो और अधिक भड़काने वाला बनता है। अत: क्रोध को दबाओ मत, यदि आपके भीतर क्षमता है तो क्रोध की शक्ति की दिशा बदल दो। क्रोध भी आत्मा की शक्ति से होता है। क्रोध का उदय होता है और उसमें आत्मा की शक्ति भी जुड़ जाती है तो उसमें ताकत आ जाती है। अत: आवश्यक है कि क्रोध को रूपांतरित कर दिया जाए। विद्युत एक शक्ति है और आग भी एक शक्ति है। इन शक्तियों का सर्दी में हीटर में और गर्मी में ए.सी. में उपयोग कर लेते हैं। वैसे ही क्रोध की शक्ति को मोड़ लीजिए। क्रोध को क्षमा में परिवर्तित किया जा सकता है, पर परिवर्तन करने का तरीका जानें, तभी कर सकते हैं। उसे दबाया तो वह भड़केगा।

प्रजापति को आदेश दे दिया फिर उसे सम्राट के लिए अनेक प्रकार की भेंट चढ़ाई गई। तत्पश्चात् चंद्रवेग को विदाई दे दी गई। वह विदा हुआ और दोनों भ्राता, त्रिपृष्ठ व उनके बड़े भ्राता अचल कुमार भी उसी मार्ग पर उसके पीछे चल पड़े। कुछ दूर जाने के बाद उन्होंने आवाज लगाई- ''ओ ढीठ! तुम्हें अपने व्यवहार पर लज्जा नहीं? सामान्य शिष्टाचार भी तुम नहीं जानते?''

त्रिपृष्ठ का पारा चढ़ रहा था- ''देखता हूँ कितनी ताकत है तुम में, एक मुक्के में काम तमाम कर दूँगा।'' त्रिपृष्ठ ने मारने के लिए मुक्का उठाया तो अचल कुमार ने रोक दिया- ''बंधुवर! यह क्या कर रहे हो? यह तो बेचारा दास है। ऐसे कीड़े पर आप वार करेंगे? वीर को तो अपने समान वीर को ही चुनौती देनी चाहिए। कीट-पतंगों पर शक्ति व्यय करना उचित नहीं है। इसके साथ ही दूत तो क्षम्य होता है। इसमें जितना भरा गया था, उतना इसने बोल दिया, अत: इसे माफ कर दो। बराबरी के योद्धा पर ही तुम्हें क्रोध करना चाहिए। इसे माफ कर दो।'' उन्होंने उसकी संपत्ति छीन ली और रवाना कर दिया। यह जीवेषणा का ही एक अंग था। यह एक क्रिया की प्रतिक्रिया थी। इसकी प्रतिक्रिया फिर होनी थी, क्योंकि क्रिया-प्रतिक्रिया का चक्र चलता रहता है और जीवेषणा इसे गति देती रहती है। प्रजापति ने चंद्रवेग को वापिस बुलाकर समझाया। उन्हें ऐसा क्यों करना पड़ा? जीवेषणा के कारण। यह जीवेषणा लोगों से उचित-अनुचित सब करा लेती है। न्याय-अन्याय की बुद्धि पर भी यह आवरण लगा देती है। इस प्रकार कर्मों की दिशा और गति बदलने या परिवर्तित करने में जीवेषणा का बड़ा योग होता है। जीवेषणा आरंभ से जोड़ती है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसकी शक्ति की दिशा को बदला जाए और उसे कल्याणकारी दिशा में मोड़ा जाए। यह संयम से ही संभव है। ऐसा संयम तप बन जाता है। इसीलिए धर्म की अहिंसा, संयम और तप की त्रिपुटी के रूप में परिकल्पना कर उसकी प्रकृति को व्याख्यायित किया गया है। धर्म को ऐसी श्रद्धा से अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है। भगवान से जब पूछा गया-

''धम्म सद्धाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?''

तब उन्होंने यही उत्तर दिया कि धर्म का ऐसा साधक अकेला हो या परिषद् में, सर्वत्र, सभी परिस्थितियों में आत्मा की रक्षा करता है (उत्तराध्ययन 29/3)।

हम धर्मश्रद्धा की इस प्रकृति को समझें और तदनुसार आचरण कर अपना कल्याण करें।

साभार- श्री राम उवाच-7 (आत्मकल्याण का मार्ग)

भक्ति रस

अवसर गुरु दक्षिणा का

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

एक दिन स्वप्न में मुझे,
दिखे आचार्य प्रवर।
चेहरे पर था स्वर्णिम तेज,
सादा था उनका वेश।
परिवर्तन के पथ पर अग्रसर,
कदम थे उनके विशेष।
पंचम आरे में धर्म का जैसे,
हो रहा दिव्य समावेश।
दीक्षा के भव्य 50वें वर्ष में,
हो रहा प्रवेश।
धर्म-ध्वजा लहराते धरा पर,
मानो ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
जन-जन के मन में राम है,
बस राम ही अविशेष।
युगनिर्माता, आगमज्ञाता,
उपमा है अब भी शेष।
क्रांति संग उत्क्रान्ति दी,
वो हुक्मसंघ नरेश।
क्रियान्वित हो राम गुरु का,
हर एक संदेश।
धर्ममय हो चहुंदिशाएँ,
व्यसनमुक्त हो सारा देश।
राम गुरु के आदर्शों ने,
संघ उपवन को सजाया है।
गुरु दक्षिणा का अलौकिक अवसर,
महत्तम महोत्सव आया है।

ऐसी वाणी बोलिए

मधुर वचन

ज्ञान सार

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् 'मधुर वचन' प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

15-16 फरवरी 2024 अंक से आगे....

8 ओवर रिएक्ट करना (Over Reaction)

(K) **वैर परंपरा को बढ़ाने वाले वचनों का प्रयोग करना :** 'मैं साले को छोड़ूँगा नहीं, बदला लेके रहूँगा। उसकी जिंदगी नरक बना दूँगा। उसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया तो क्यों किया? अपने आपको ज्यादा ही समझता है। उसको जेल नहीं भिजवा दिया, तो मेरा नाम नहीं...' आदि।

Note - श्रावक वैर परंपरा नहीं बढ़ाते और जो वैर परंपरा बढ़ाते हैं, वे श्रावक नहीं होते, क्योंकि पाप से डरते हैं। इस विषय में शंख और पुष्कली की कथा देखें।

शंख और पुष्कली श्रावक का वर्णन

इस कथा में हम देखेंगे कि कैसे :-

- पूर्व के श्रावक एक-दूसरे की बात स्वीकार करते थे।
- अवसर देखकर बात करते थे।
- पाप से डरते थे।
- सरलतापूर्वक क्षमा मांग लेते थे।

एक बार शंख श्रावक ने अपने साथी श्रमणोपासकों से कहा कि तुम भोजन तैयार करवाओ, फिर हम सब मिलकर एक साथ भोजन करते हुए पाक्षिक पौषध (दयाव्रत) करेंगे। सभी एक बार में तैयार हो गए। तैयारियाँ शुरू कर दी। इधर शंख श्रावक के मन में अचानक प्रतिपूर्ण पौषध करने की इच्छा उत्पन्न हो गई। तब उन्होंने प्रतिपूर्ण पौषध कर लिया। उधर सभी श्रावक आहार तैयार करके उनका इंतजार कर रहे थे। जब वे नहीं आए, तो पुष्कली नामक श्रावक उन्हें बुलाने गए। उनके पास जाकर बोले- ''हमने भोजन तैयार करवा लिया है।'' इस पर शंख श्रावक ने प्रत्युत्तर दिया- ''आप अपनी इच्छानुसार आहार करते हुए पौषध (दयाव्रत) कर लो।'' यह सुनकर पुष्कली श्रावक ने उस समय कोई प्रतिक्रिया नहीं की, वे वहाँ से चले गए।

दयाव्रत पूर्ण करने के बाद अगले दिन वे सभी भगवान महावीर के दर्शनार्थ गए, तब धर्मकथा सुनने के पश्चात् वे शंख श्रावक के निकट आए और बोले- ''देवानुप्रिय! कल आपने ही हमें कहा था भोजन तैयार

करवाओ, फिर सामूहिक दया (पौषध) करेंगे, किंतु आप आए ही नहीं और अकेले पौषध कर लिया। आपने हमारी अच्छी तौहीन की।''

ऐसा सुनते ही भगवान ने उन्हें समझाया कि शंख श्रमणोपासक को ऐसा मत कहो, वे दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी हैं और पहले अल्प त्याग का सोचकर बाद में उससे बड़ा त्याग करने के भाव आ जाए तो वह निंदा का पात्र नहीं, प्रशंसा का पात्र है। ऐसा सुनकर उन श्रावकों ने कोई सवाल-जवाब नहीं किया। फिर शंख श्रावक ने भगवान को वंदन करके प्रश्न पूछा कि ''भंते! क्रोध करने से जीव कौनसे कर्म बाँधता है?'' तब क्रोध का भयंकर परिणाम बताते हुए भगवान ने फरमाया कि जीव आयुष्यकर्म को छोड़कर शेष 7 कर्म हलके बंधन में बँधे हो तो उन्हें गाढ़े बंधन में बाँधता है।

क्रोध का परिणाम सुनकर श्रमणोपासक उसी समय कर्म बंधन से भयभीत, त्रस्त, दुखित एवं संसार भय से उद्विग्न हुए और भगवान को वंदन करके शंख के पास गए और उन्हें वंदन-नमन करके अपने अपराध की क्षमा मांग ली। सभी वापस एक-दूसरे से मिल गए। (श्रीमद् भगवती सूत्र- शतक 12)

आप देखेंगे कि पुष्कली आदि श्रावकों का भी शंख श्रावक के प्रति मनमुटाव हुआ था, परंतु जैसे ही उन्होंने भगवान से क्रोध का परिणाम सुना, झट से शंख श्रावक से माफी मांग ली। जो हृदय के सरल होते हैं, वे बात को पकड़कर नहीं रखते।

(L) **खुद अपने जीवन में परिवर्तन नहीं करना :** बात-बात में क्रोध करना, परंतु दूसरों को जरूरत से ज्यादा शिक्षा देना। उन्हें छोटी-छोटी बातों में उपालंभ देना - ''बाप रे! तुम कितना जवाब देते हो, इतना क्रोध करना कोई अच्छी बात है? तुम्हें ये नहीं करना चाहिए, वो नहीं करना चाहिए, ऐसे करना चाहिए, वैसे करना चाहिए, तुम्हें समझदारी रखनी चाहिए, तुम विवेक नहीं रखते, तुम ध्यान नहीं रखते, तुम परिवर्तन नहीं करते....'' आदि-आदि।

सही तरीका – बार-बार शिक्षा देने के बजाय, खुद वैसा जीकर बताना चाहिए। कभी-कभी मौके पर अच्छी बात बतानी चाहिए, पर उसमें ये नहीं झलकना चाहिए कि हम उपालंभ दे रहे हैं।

Note - 1. जो खुद नहीं जीते और दूसरों को बात-बात में सीख देते हैं, उनकी सीख से लोग Irritate (परेशान) हो जाते हैं और वो उसके महत्त्व को न समझकर उसे Ignore (इग्नोर) कर देते हैं।

2. आचार्य श्री नानेश ने अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए उदाहरण उपस्थित किया।

आचार्य श्री नानेश : आचार की दृढ़ता एवं आने वाली पीढ़ी का विचार

आचार्य भगवन् को एक बार विहार के समय में प्यास लग गई। जिस रास्ते से विहार हो रहा था, वह एक छोटी-सी पगडंडी थी, आस-पास हरी थी। बैठकर धोवण लिया जाए तो हरी से संघट्टे की संभावना थी और खड़े होकर साधु को पीना कल्पता नहीं है। लगभग 2 घंटे हो गए, पर भगवन् ने धोवण ग्रहण नहीं किया। साथ वाले संतों ने कहा- ''आप खड़े-खड़े ही धोवण आरोग लें, कब तक प्यास को रोकते रहेंगे!'' भगवन् ने चिंतन किया- ''क्या यह उचित होगा कि मैं खड़े-खड़े धोवण पीऊँ? आज अगर मैं परिस्थितिवश विवेकपूर्वक भी खड़े-खड़े धोवण पीता हूँ, तो मेरी आने वाली पीढ़ी भी बिना किसी कारण के मेरा ही अनुसरण करेगी। इस तरह से शिथिलता की परंपरा की शुरुआत हो जाएगी।''

जैसा बड़े करते हैं, वैसा छोटे सीखते हैं। ऐसा सोचकर आचार्य भगवन् ने पानी पास में होते हुए भी उसे ग्रहण नहीं किया। इसी प्रकार श्रावक-श्राविका आदि को भी अपने आने वाली पीढ़ी को संस्कारित बनाने के लिए अपने व्यवहार, आचार और विचार को विमल बनाकर रखना चाहिए।

(M) **किसी बीमार व्यक्ति की सेवा करते हुए उसे बार-बार सुनाना :** दिन-रात बड़बड़ाते हुए काम करना, उसके विषय में परेशान हो साँसें भरकर उसके सामने अथवा अन्यों के सामने मुँह बिगाड़कर प्रतिक्रिया करना- ''हमेशा बीमार पड़े रहते हैं, थोड़ा भी काम नहीं करते। इनका सारा काम हमको करना पड़ता है, थोड़ा तो उठना चाहिए, बैठना चाहिए। आधे तो नाटक करते हैं, हम तो इनसे परेशान हो गए, पता नहीं कब पीछा छूटेगा! इनके कारण हम एक मिनट भी चैन से नहीं रह सकते, सारा ठेका हमारा ही है क्या? इनके पीछे हमारा इतना पैसा खर्च हो गया,'' आदि....।

गलत तरीका (✗)	सही तरीका (✓)
A - आज मेरा सिर दुख रहा है।	A - आज मेरा सिर बहुत दुख रहा है।
B - ठीक कब रहता है, तुम्हारा तो रोज का ही रोना है।	B - चलो मैं दबा दूँ।

Note - कोई व्यक्ति जानबूझकर बीमार नहीं होता, वो उसके पूर्वकृत कर्मों के उदय से होता है। इसमें कहीं न कहीं हमारे कर्मों का भी हिसाब है। तभी तो वह व्यक्ति हमारे परिवार का सदस्य बना है। ऐसी स्थिति में हम उसे साता पहुँचाने के बजाय यदि सुनाएँगे तो असाता का बंध कर लेंगे। जो स्थिति आज उसकी है, कल हमारी भी तो हो सकती है।

एक महिला शरीर से कमजोर थी। उसे कुछ न कुछ होता रहता था। इस बात के लिए उसके घर वाले खासकर उसके Husband (हस्बैंड) उसे बहुत सुनाया करते थे। कुछ सालों बाद Husband को ही लकवा हो गया। वह बिस्तर पर आ गया, परंतु उसकी Wife ने उसे सुनाया नहीं, बल्कि उसकी खूब सेवा की। क्योंकि वो धर्म को समझती थी और वो उस बीमारी की पीड़ा को भी समझती थी। बिस्तर पर पड़ा-पड़ा उसका Husband अपने द्वारा बोले गए शब्दों को याद करके रोता था। कर्म सबक सिखा देते हैं, इसलिए कभी किसी को चुभते वचन नहीं कहने चाहिए।

(N) **द्वेष के वशीभूत होकर निर्दयतापूर्ण वचनों का प्रयोग करना :** ''मैं किसी की परवाह नहीं करता, कोई मरे-सड़े, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं उसका सहयोग करने वाला नहीं हूँ।'' उसने मेरा सहयोग नहीं किया, तो उसे भी पता चलना चाहिए कि अकेलापन क्या होता है। खुद भी नहीं करना और घर वालों को भी रोक देना- ''तुम में से किसी ने अगर उसका काम किया, तो मेरा-तुम्हारा रिश्ता खत्म....।'' किसी के समझाने पर और अधिक भड़क जाना- ''मैं किसी की सुनने वाला नहीं हूँ, चाहे कुछ भी हो जाए.... मेरे को जो करना है, मैं वहीं करूँगा....'' आदि-आदि।

Note 1 - जो पसंद हो वह नहीं, जो कर्तव्य हो वह करना चाहिए। कोई करे न करे, किंतु जरूरतमंद का सहयोग करना श्रावक का कर्तव्य है। उसके भीतर दया और करुणा का भाव इतना गहरा होता है कि वो किसी का सहयोग किये बिना रह ही नहीं सकता।

2 - मुद्गरपाणि यक्ष तो सेठ सुदर्शन को मारने दौड़ा था, फिर भी सुदर्शन के मन में लेशमात्र भी द्वेष नहीं आया।

सेठ सुदर्शन का वर्णन

मुद्गरपाणि यक्ष सेठ सुदर्शन को आते देखकर मारने के लिए दौड़ा। सेठ ने जब ऐसा देखा तो उन्होंने सागारी संथारा ग्रहण कर लिया और स्वयं को ध्यान में स्थित कर लिया। ऐसा दृश्य देखकर भी वे तनिक मात्र

भयभीत नहीं हुए, त्रास को प्राप्त नहीं हुए, व्याकुल नहीं हुए, उद्विग्न नहीं हुए। उनके मुख का रंग और नेत्रों का वर्ण नहीं बदला। उनके मन में दीनता या खिन्नता उत्पन्न नहीं हुई। यक्ष के प्रति लेशमात्र भी द्वेष नहीं आया।

वह मुद्गरपाणि यक्ष सुदर्शन सेठ के निकट आकर उसके चारों तरफ चक्कर लगाता है और जब वो अपने तेज से सेठ को परास्त नहीं कर पाता, तब वह उसे अनिमेष दृष्टि से देखता रहता है और फिर अर्जुनमाली के शरीर से निकलकर जहाँ से आया था, वहाँ चला जाता है। यह सुदर्शन सेठ की पवित्रता का प्रभाव था कि जो यक्ष प्रतिदिन 7 लोगों की हत्या करता था, वह एक श्रावक के तेज से पराजित होकर स्वत: चला गया। जबकि सेठ ने न तो उसे रोका, न धमकाया, न समझाया। भावों की निर्मलता और आचरण की दृढ़ता से स्वत: उपसर्ग टल गया।

इससे हम स्पष्ट समझ सकते हैं कि एक व्यक्ति के भावों का प्रभाव दूसरे पर भी पड़ता है।

(विस्तार के लिए देखें – श्री अन्तगडदसाओ वर्ग 6, तृतीय अध्ययन)

* इस प्रकार और अन्य अनेक प्रकार से लोग अपनी अपेक्षाएँ पूरी नहीं होने पर क्रोधात्मक प्रतिक्रिया करते हैं और उससे अपनी आत्मा को कलुषित करते हैं।

कुछ विशेष बातें :–

* चाहे हम कितना भी क्रोध कर लें, संसार में सब कुछ हमारे मन का नहीं होगा। कुछ दूसरों के मन का भी होगा। हम किसी को समझा सकते हैं, निवेदन कर सकते हैं, पर हम किसी को बदलने के लिए दबाव नहीं दे सकते।
* जिसके जैसे औदयिक भाव (कर्मों का उदय) होंगे, जैसे संस्कार होंगे, जैसी सोच होगी, जैसी रुचि होगी, वह वैसी प्रवृत्ति करेगा। हम दूसरों की वजह से अपना व्यवहार खराब क्यों करें?
* कुछ लोग कहते हैं– ''सामने वाला ऐसी हरकत करेगा, तो हमें बोलना ही पड़ेगा। वो विवेक रख लेगा, तो हम बोलेंगे ही नहीं।'' मान लो, सामने वाला जिंदगी भर नहीं सुधरेगा, तो क्या हम बोलते ही रहेंगे? यदि हम कषाय करते ही रहें, तो हम अपनी आत्मा को पवित्र कब बनाएँगे? हम अपने जीवन को सफल कब बना पाएँगे? हम तो ऐसे ही राग-द्वेष करते-करते ऊपर चले जाएँगे। क्या हमें इसलिए मनुष्य जन्म मिला है कि हम दूसरों के पीछे, उन्हें सुधारने के पीछे, उन्हें सीधा बनाने के पीछे खुद टेढ़े होते जाएँ?
* हम यदि अपना भला चाहते हैं, तो हमें अपने दिमाग में ये बात बैठानी होगी कि दूसरे कुछ भी करें, वह मेरे लिए दु:ख रूप नहीं है, बल्कि मेरे राग-द्वेष की परिणति, मेरे कषायिक भाव और मेरे लिए दु:ख रूप है।
* सभी हमारे अनुकूल हो जाएँ, यह मुश्किल है। जिसकी टोकने की आदत होगी वह टोकेगा। जिसकी शिकायत की आदत होगी वह शिकायत करेगा। जिसकी क्रोध करने की आदत होगी वह बात-बात में क्रोध करेगा। जिसकी रोने की आदत होगी वह रोएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया में प्रतिकूल कुछ न कुछ होता ही रहेगा, परंतु यदि हमें कर्मबंधन से बचना है, हमें जन्म-मरण से बचना है, हमें अपने आप को सेफ रखना है, तो हमें नॉर्मल रहना होगा। हमें अपने आपको ये समझाना होगा, हमें अपनी वाणी पर संयम रखना होगा, हमें धैर्य रखना होगा।
* यह आसान नहीं है, परंतु कई साधक और कई श्रावक पूर्व में समभाव की साधना कर चुके हैं, वर्तमान में भी कर रहे हैं। अत: हम भी ऐसा लक्ष्य बनाएँगे और अभ्यास प्रारंभ करेंगे, तो एक दिन समतावान बन जाएँगे। तब केवल अपनी वाणी पर ही नहीं, बल्कि हम अपने मन और काया पर भी संयम रख पाएँगे और हमारा उद्देश्य भी यही है।

Note - पूर्व के श्रावकों का जीवन इतना आदर्श था कि भगवान महावीर स्वयं उनकी प्रशंसा करते थे। यहाँ तक कि भगवान महावीर ने कामदेव श्रावक का उदाहरण देते हुए साधु-साध्वियों को शिक्षा दी।

कामदेव श्रावक की भगवान द्वारा प्रशंसा

कामदेव श्रावक को पौषध में एक देव ने अनेक उपसर्ग दिए, फिर भी उनका मन विचलित नहीं हुआ, तनिक भी भयभीत नहीं हुआ, त्रास को प्राप्त नहीं हुआ, व्याकुल नहीं हुआ। उसके मुख का राग और नेत्रों का वर्ण नहीं बदला। उनके मन में तनिक भी श्रद्धा कम नहीं हुई।

जब वे भगवान के दर्शनार्थ गए, तब भगवान ने उन्हें देखकर रात्रि में बीती घटना का वर्णन किया और फिर साधु-साध्वियों को उद्देश्य कर फरमाया- ''जब श्रावक गृहस्थी में रहते हुए भी धर्म-आराधना में इतनी दृढ़ता बनाए रख सकता है, तो आप सबका तो ऐसा कर्तव्य है ही।'' साधकों को भी कष्टों से घबराना नहीं चाहिए, उन्हें परीषहों को दृढ़ता से झेलते रहना चाहिए, इससे साधना निर्मल और उज्ज्वल बनती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि एक श्रावक का जीवन इतना आदर्श था कि उनका उदाहरण देकर भगवान ने साधु-साध्वियों को शिक्षा प्रदान की।

(विस्तार के लिए देखें श्री उपासकदशांग सूत्र, अध्ययन 2)

आज भी कई गुणवान श्रावक हैं, जिनका जीवन अनेक के लिए प्रेरणास्रोत है। हम अपना विचार करें, हम भी तो एक श्रावक हैं, क्या हमारा जीवन इतना आदर्श है?

''किसी को मैं ऐसा लगता हूँ, किसी को मैं वैसा लगता हूँ।
सदा चिंतन करना है कि मैं प्रभु (गुरु) को कैसा लगता हूँ।।''

जैन संस्कार पाठ्यक्रम ओपन बुक परीक्षा संबंधी दिशा-निर्देश

जैन संस्कार पाठ्यक्रम की परीक्षाएँ 15 सितंबर 2024 को आयोजित होंगी। इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु ओपन बुक परीक्षाएँ 07 अप्रैल 2024 को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित होंगी। ये परीक्षाएँ 15 सितंबर की परीक्षाओं की तैयारी हेतु आयोजित होंगी। इन ओपन बुक परीक्षाओं में कोई आयु सीमा नहीं रहेगी। किसी भी आयु के परीक्षार्थी भाग ले सकते हैं।

परीक्षा के नियम :-

1. 15 सितंबर 2024 को जो लिखित परीक्षा होगी, उसके परीक्षार्थी ही इस ओपन बुक परीक्षा में भाग ले सकते हैं।
2. परीक्षा स्थल पर परीक्षार्थी अपनी पुस्तक साथ लेकर आवें। अगर पुस्तक नहीं है तो शीघ्र ही केंद्रीय कार्यालय से मंगवाएँ।
3. परीक्षा से पूर्व प्रश्न-पत्र स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री/प्रतिनिधि को ऑनलाइन भिजवाए जाएँगे। परीक्षा पूर्ण होने के बाद उत्तर-पुस्तिकाएँ प्रधान कार्यालय, बीकानेर भिजवाने का लक्ष्य रखें।
4. परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को सम्मानित किया जाएगा।
5. नए परीक्षार्थियों को यदि जैन सिद्धांत बत्तीसी/सामायिक/प्रतिक्रमण कंठस्थ है तो वे सीधे ही भाग-5 से क्रमबद्ध परीक्षा देना प्रारंभ कर सकते हैं।

-संयोजिका, जैन संस्कार पाठ्यक्रम

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

15-16 फरवरी 2024 अंक से आगे....

प्रश्न 24. जो पुद्गल काले वर्ण के रूप में परिणत हैं, उनमें गंध, रस, स्पर्श और संस्थान कितने होते हैं?

उत्तर काले वर्ण के पुद्गल 2 गंध, 5 रस, 8 स्पर्श और 5 संस्थान रूप परिणत होते हैं। इस आगम पाठ में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान का सामूहिक रूप से वर्णन है, जबकि परमाणु यावत् बादर अनंतप्रदेशी स्कंध में निश्चय दृष्टि से लाखों भंग बनते हैं। संभावना है कि श्रीमद् नंदीसूत्र में वर्णित 'महाप्रज्ञापनासूत्र' नामक उत्कालिक सूत्र जो प्रज्ञापनासूत्र की अपेक्षा शब्द और अर्थ से विस्तृत था, उसमें इन भंगों का उल्लेख रहा हो। 'महाप्रज्ञापना सूत्र' अभी अनुपलब्ध है।

प्रश्न 25. जीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर जीव प्रज्ञापना दो प्रकार की है - 1) संसार समापन्न - संसार को प्राप्त जीवों की प्रज्ञापना और 2) असंसार समापन्न - मुक्त जीवों की प्रज्ञापना।

ध्यातव्य बिंदु - पुद्गल और जीव के संबंध और विसंबंध से जीव दो प्रकार के हैं - संसारी और सिद्ध। 'सूची कटाह न्याय' से तथा उच्चतम पद को प्राप्त असंसार समापन्नक जीवों (सिद्धों) की प्ररूपणा पहले की जा रही है।

अमृतमय ज्योतिपुंज सिद्ध जीवों की प्रज्ञापना

प्रश्न 26. असंसार समापन्न जीव प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर असंसार समापन्न जीव प्रज्ञापना दो प्रकार की है - अनंतर सिद्ध और परम्परसिद्ध।

प्रश्न 27. अनंतर सिद्ध प्रज्ञापना क्या है?

उत्तर अनंतर सिद्ध प्रज्ञापना पंद्रह प्रकार की है। यथा -

1) तीर्थ सिद्ध - गौतम स्वामी
2) अतीर्थ सिद्ध - मरु देवी माता
3) तीर्थंकर सिद्ध - अजितनाथ जी
4) अतीर्थंकर सिद्ध - सुधर्मा स्वामी
5) स्वयंबुद्ध सिद्ध - तीर्थंकर एवं तीर्थंकर भिन्न। यहाँ तीर्थंकर भिन्न समझना - जैसे- कपिल केवली।
6) प्रत्येकबुद्ध सिद्ध - नमि राजर्षि
7) बुद्धबोधित सिद्ध - संयति राजा
8) स्त्रीलिंग सिद्ध - चंदनबाला
9) पुरुषलिंग सिद्ध - प्रसन्नचंद्र राजर्षि
10) नपुंसकलिंग सिद्ध - गांगेय अनगार
11) स्वलिंग सिद्ध - भरत चक्रवर्ती
12) अन्यलिंग सिद्ध - वल्कलचिरी
13) गृहस्थलिंग सिद्ध - कूर्मापुत्र
14) एक सिद्ध - भगवान महावीर
15) अनेक सिद्ध - ऋषभदेव भगवान

नोट - स्वयंबुद्ध और प्रत्येकबुद्ध दोनों छेदोपस्थापनीय चारित्र अंगीकार नहीं करते हैं।

प्रश्न 28. अनंतर सिद्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर समय का अंतर (व्यवधान) न होना अनंतर कहलाता है। सिद्धत्व का प्रथम समय अर्थात् सिद्ध विग्रहगति वाले जीव अनंतर सिद्ध हैं।

प्रश्न 29. स्वयंबुद्ध किसे कहते हैं तथा ये कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर जो परोपदेश के बिना, स्वयं ही संसार के स्वरूप को जातिस्मरण आदि से समझकर बोध प्राप्त करते हैं, वे स्वयंबुद्ध कहलाते हैं। श्रीमद् नंदीसूत्र की चूर्णि में स्वयंबुद्ध दो प्रकार के कहे गए हैं - तीर्थंकर और तीर्थंकर भिन्न।

प्रश्न 30. प्रत्येकबुद्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर जो वृषभ, वृक्ष, चूड़ियाँ आदि किसी भी बाह्य निमित्त से बोध/वैराग्य प्राप्त करते हैं, वे प्रत्येकबुद्ध कहलाते हैं। जैसे- करकंडु राजा को बीमार वृषभ को देखकर अनुप्रेक्षा से वैराग्य उत्पन्न हुआ। नमि राजर्षि को चूड़ियों से वैराग्य उत्पन्न हुआ।

प्रश्न 31. स्वयंबुद्ध और प्रत्येकबुद्ध में क्या अंतर है ?

उत्तर

स्वयंबुद्ध	प्रत्येकबुद्ध
1) स्वयंबुद्ध के पास 12 प्रकार की उपधि होती है।	प्रत्येकबुद्ध के पास जघन्य 2, उत्कृष्ट 9 उपधि होती है।
2) स्वयंबुद्ध को पूर्वजन्म में शास्त्र ज्ञान की भजना है।	प्रत्येकबुद्ध को पूर्वजन्म में जघन्य 11 अंग शास्त्र, उत्कृष्ट देशोन 10 पूर्वों का ज्ञान होता है।
3) जो स्वयंबुद्ध पूर्वभव में शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं, उन्हें देव रजोहरण आदि प्रदान करते हैं। शेष गुरु के सान्निध्य में मुनिलिंग स्वीकार करते हैं।	प्रत्येकबुद्ध को देव मुनिलिंग (रजोहरण आदि) देते हैं अथवा वे मुनिलिंग रहित विचरते हैं।
4) जो स्वयंबुद्ध पूर्वभव में शास्त्रों के ज्ञाता होते हैं वे एकाकी विचरण करने में समर्थ हो तो एकाकी विचरण करते हैं अन्यथा गच्छ में रहते हैं तथा जो पूर्वभव में शास्त्रों के ज्ञाता नहीं होते हैं, वे गच्छ में रहते हैं।	प्रत्येकबुद्ध अकेले ही विचरण करते हैं, गच्छ में नहीं रहते हैं।

प्रश्न 32. परम्पर सिद्ध प्रज्ञापना क्या है ?

उत्तर परम्पर सिद्ध प्रज्ञापना अनेक प्रकार की कही गई है। यथा -

1) अपढम समय सिद्ध
2) द्वितीय समय सिद्ध यावत्
10) दस समय सिद्ध
11) संख्येय समय सिद्ध
12) असंख्येय समय सिद्ध और
13) अनंत समय सिद्ध

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

एकादश अध्ययन : बहुस्सुयपुज्जं

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

15-16 फरवरी 2024 अंक से आगे....

पूर्व चित्रण

अबहुश्रुत अर्थात् श्रुत को ग्रहण करने में असमर्थ होने का मूल कारण अविनय है। विविध प्रकार से अविनीत अबहुश्रुत के अवगुणों का तथा सुविनीत बहुश्रुत के गुणों का कथन किया गया है। इसके पश्चात् भगवान महावीर स्वामी ने बहुश्रुत के स्वरूप तथा उनकी महत्ता को अनेक उपमाओं से उपमित किया है।

प्रश्न 30. सर्वज्ञ ने सुविनीत मुनि के स्वरूप के संबंध में क्या फरमाया है?

उत्तर विनीत मुनि गुरुकुल में गुरुजनों के गच्छ में जीवनपर्यंत निवास करने वाले तथा सदा मन, वचन, काया से तप आदि करने में प्रशस्त रहते हैं। वह ऐसा विचारता है कि 'गुरुजन आदि कदाचित् कुपित हो जाएँ तो भी अनुचित वाणी का प्रयोग नहीं करूँगा तथा स्वयं भी मधुर वचनों का प्रयोग करूँगा'। जैसे- गुरु द्वारा कहे गए कठोर वचनों को भी वह उनका उपकार मानने वाले होते हैं।

प्रश्न 31. सर्वज्ञ ने बहुश्रुत को अनेक उपमाओं से उपमित क्यों किया है?

उत्तर सर्वज्ञ ने बहुश्रुत को उपमाओं से उपमित किया है, जिससे बहुश्रुत की महिमा, तेजस्विता, आंतरिक शक्ति, कार्यक्षमता, श्रेष्ठता, निर्मलता, धैर्य बल, समस्याओं से झूझने की बुद्धि शक्ति, गंभीरता, सौम्यता, धारणा शक्ति, प्रधानता, मोक्षगामिता, विशालता आदि का बोध होगा। इन विशेषताओं का ज्ञान होने से पाठक का मस्तिष्क सहज ही बहुश्रुत के चरणों में बहुमान भावों के साथ नत हो जाएगा।

प्रश्न 32. प्रस्तुत अध्ययन में बहुश्रुत को किन-किन उपमाओं से उपमित किया गया है?

उत्तर इन उपमाओं से बहुश्रुत की आंतरिक शक्ति और तेजस्विता प्रकट होती है -

1. बहुश्रुत शंख की तरह स्वच्छ होते हैं।
1. बहुश्रुत कम्बोज के घोड़ों की तरह शील से श्रेष्ठ होते हैं।
2. बहुश्रुत दृढ़ पराक्रमी योद्धा की तरह अजेय होते हैं।
3. बहुश्रुत साठ वर्ष के बलवान हाथी की तरह अपराजेय होते हैं।
4. बहुश्रुत यूथाधिपति वृषभ की तरह अपने गण में प्रमुख होते हैं।

5. बहुश्रुत दुष्पराजेय सिंह की तरह अन्यतीर्थिकों में श्रेष्ठ होते हैं।
6. बहुश्रुत वासुदेव की भाँति अबाधित पराक्रम वाले होते हैं।
7. बहुश्रुत चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्ती की भाँति चतुर्दश-पूर्वधर होते हैं।
8. बहुश्रुत देवाधिपति शक्र की भाँति संपदा के अधिपति होते हैं।
9. बहुश्रुत उगते हुए सूर्य की भाँति तप के तेज से प्रज्ज्वलित होते हैं।
10. बहुश्रुत पूर्णिमा के चंद्रमा की भाँति सकल कलाओं से परिपूर्ण होते हैं।
11. बहुश्रुत धान के भरे कोठों की भाँति श्रुत से परिपूर्ण होते हैं।
12. बहुश्रुत जम्बूवृक्ष की भाँति श्रेष्ठ होते हैं।
13. बहुश्रुत सीता नदी की भाँति श्रेष्ठ होते हैं।
14. बहुश्रुत मन्दर पर्वत की भाँति श्रेष्ठ होते हैं।
15. बहुश्रुत नाना रत्नों से परिपूर्ण स्वयंभूरमण समुद्र की भाँति अक्षय ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं।

भगवान महावीर स्वामी बहुश्रुत की विशेषताओं को शंख की उपमा से उपमित करते हुए इस प्रकार फरमाते हैं-

जहा संखम्मि पयं निहियं, दुहओ वि विरायई।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं।।15।।

भावार्थ- जैसे शंख में भरा हुआ दूध अपने और अपने आधार के गुणों के कारण दोनों से सुशोभित होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भिक्षु में धर्म, कीर्ति और श्रुत भी दोनों ओर से सुशोभित होते हैं।

इसका भाव इस प्रकार है- शंख भी स्वच्छ होता है और दूध भी स्वच्छ होता है। जब शंख में दूध रखा जाता है तब शंख (पात्र) की स्वच्छता के कारण दूध अधिक स्वच्छ हो जाता है। शंख में भरा हुआ दूध न मलिन होता है, न खट्टा होता है। इसी प्रकार श्रुत को प्राप्त करके विनीत बहुश्रुत व्यक्ति अति निर्मल होते हैं तथा निर्विकार भावों में रमण करके अति विशुद्ध गुणों को ग्रहण कर लेते हैं। अत: श्रुत की आराधना से बहुश्रुत शोभा संपन्न हो जाते हैं तथा अश्व की उपमा से उपमित करते हुए इस प्रकार फरमाया है -

जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए।।16।।

भावार्थ- जिस प्रकार कम्बोज देश का अकीर्ण अश्व श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत साधक भी साधुओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं।

आइण्णे अर्थात् अकीर्ण - अकीर्ण का अर्थ शील, रूप, बल आदि गुणों से व्याप्त।

कंथए - श्रेष्ठ जाति का अश्व।

1. पत्थरों के टुकड़ों से भरे कप्पों के गिरने की आवाज से भयभीत नहीं होते हैं।
2. पर्वतों के विषम मार्ग में जाने से या शस्त्रों के प्रहार से भयभीत नहीं होते हैं।
3. और जो बहुत वेग (स्फूर्ति) से चलता है।

जहाऽऽइण्ण समारूढे, सूरे दढ-परक्कमे।
उभओ नंदि-घोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए।।17।।

भावार्थ- जैसे अकीर्ण अश्व पर समारूढ़ हुआ दृढ़ पराक्रमी-शूरवीर योद्धा अपने दोनों ओर से (अगल-बगल से या आगे-पीछे से) होने वाले नंदीघोष से सुशोभित होते हैं, वैसे ही बहुश्रुत भी स्वाध्याय के मांगलिक स्वरों से सुशोभित होते हैं।

नंदि-घोसेणं - नंदीघोष- बारह प्रकार के बाजों से ध्वनि तथा जय-जय की ध्वनि को नंदी कहा गया है।

इसका भाव इस प्रकार है- अतिशय पराक्रमी शूरवीर योद्धा उत्तम अश्व पर सवार होने से किसी भी समर्थ शत्रु से भयभीत नहीं होते हैं, किसी से पराजित नहीं होता, किंतु सर्वत्र विजयी होते हैं एवं शुभ सूचक नादों, जय-जयकार इत्यादि से सम्मानित होते हैं तथा इनके कारण अन्य आश्रित जन भी विजयशील बनते हैं। उसी प्रकार बहुश्रुत साधु भी जिन प्रवचन रूप जातिमान घोड़े पर समारूढ़ होकर निरंतर जागरूक रहते हैं। परीषह एवं उपसर्ग को पराजित कर लब्धिशाली बनते हैं। दिन और रात्रि दोनों भागों में स्वाध्याय रूप नंदीघोष करते हैं, जिससे आस-पास के अन्य शिष्य भी विजयशील बन जाते हैं। ऐसे प्रतापशाली बहुश्रुत जिनशासन का प्रभाव बढ़ाते हैं, जिससे चतुर्विध संघ अजेय बनता है। अत: बहुश्रुत विशेष रूप से श्रेष्ठ, गुणसंपन्न, पराक्रमी, विजयशील एवं अजेय होते हैं।

-क्रमश:

परीक्षा दिनांक परिवर्तन सूचना

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)

परीक्षा कार्यक्रम : जून, 2024 समय : दोपहर 12 से 4 बजे

प्रारंभिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी

दिनांक	परीक्षा का नाम	प्रश्न-पत्र
12/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	प्रथम-पत्र
14/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	द्वितीय-पत्र
16/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	तृतीय-पत्र
18/06/2024	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	चतुर्थ-पत्र
20/06/2024	जैन आगम कंठस्थ भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
21/06/2024	राष्ट्रभाषा - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
22/06/2024	जैन स्तोक - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-
23/06/2024	जैन संस्कृत - प्राकृत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद	-

नोट :- 1. आप सुविधानुसार परीक्षा केंद्र ले सकते हैं।
2. परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी अपना आवेदन समता भवन, बीकानेर कार्यालय में 15 मई, 2024 तक अनिवार्यत: जमा करावें।
3. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - दिलीप राजपुरोहित (7231933008)

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

सच्ची कसौटी

15-16 फरवरी 2024 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंदकँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

आपको ज्यों-ज्यों पीटा गया त्यों-त्यों आपने समभाव धारण किया और काका जी पर किसी प्रकार द्वेष न किया। आपके मन में प्रबल वैराग्य उमड़ रहा था। उस वैराग्य प्रवाह को छूने के कारण काका जी का क्रोध आपके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं डाल रहा था। यह है सच्ची सामायिक! सच्ची समता का अभ्यास। पाठक जानना चाहते होंगे कि जब आपके काका जी ने आपको पीटा तब क्या कोई छुड़ाने वाला नहीं मिला?

वहाँ की औरतें ऐसे पर्दे से घिरी रहती हैं कि कोई पराया पुरुष उनके एक अंग को भी देख न ले। वे ऐसे निर्दयतापूर्ण कृत्यों से बढ़कर अपने पर्दे को महत्त्व देती थीं, मानो पर्दा-प्रथा का पालन करना तो धर्म हो और अपने सामने किसी को पिटते देखकर भी उसकी रक्षा करना पाप हो। अज्ञानता के कारण ही उन पर पर्दा लाद दिया गया है और उन्हें अबला (निर्बला) की पदवी दे दी गई है।

संसार के सभी लोग एक जैसे नहीं होते। कोई न कोई भला व्यक्ति भी निकल आता है। उस समय मारने-पीटने का शोर सुनकर पड़ोस में रहने वाली एक बहन छुड़ाने के लिए भी आई। वह बहन गणेशमल जी को काका जी समझती थी। उसने कहा- ''काका साहब! इसे क्यों मार रहे हो? इसने कोई गलती तो की नहीं, फिर क्यों पीट रहे हो?'' उस समय उस अकेली बहन का क्षीण-स्वर कौन सुनता? काका साहब ने कोई ध्यान दिया नहीं।

काका जी की क्रूर प्रकृति इतनी कसौटी करके भी संतुष्ट नहीं हुई, परंतु आनंदकुमारी जी में तो धैर्य की अद्भुत जड़ है, जिसके जरिए वे अपनी बुद्धि का संतुलन नहीं खोती। यहाँ मुझे योगीराज भर्तृहरि की एक उक्ति याद आ रही है -

कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्तेन
शक्यते धैर्यगुणं प्रमार्ष्टुम्।
अधोमुखस्यापि कृतस्य वह्नेर्नधिः
शिखा याति कदाचिदेव।।

धैर्यवृत्ति वाले व्यक्ति को कोई कितना भी तंग करे, पर उसके धैर्य के गुण को मिटाने की ताकत उसमें नहीं होती। अग्नि की लौ का मुँह कोई चाहे जितना ही नीचा कर दे, पर वह तो अपना मुख ऊपर की ओर ही रखती है।

आनंदकुमारी जी भी अपनी धैर्य धुरी पर बैठी थी, फिर भी काका जी से न रहा गया और उन्होंने आनंदकुमारी जी को पास की एक कोठरी में बंद कर

दिया। कहा- ''बस, अब तू समझ जाना, नहीं तो मेरे जैसा कोई बुरा नहीं होगा। मैं तुझे संथारा (अनशन) करा देता हूँ। दीक्षा का तो मेरे जीते-जी नाम मत लेना।''

महात्मा गाँधी ने तो देश के नेताओं और जनता को सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया था, पर आपने न मालूम किस पाठशाला में यह पाठ पढ़ा था। आपको सहज ही सत्याग्रह करने की प्रेरणा मिल गई। सत्याग्रह अहिंसक वीरों के लिए है, जान का भय रखने वालों के लिए नहीं।

सत्याग्रह के विषय में युगद्रष्टा आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की धारणा मनन करने योग्य है। आपके ये शब्द कितने प्रभावशाली हैं- ''सत्याग्रह के बल की तुलना कोई बल नहीं कर सकता। इस बल के सामने मनुष्य शक्ति तो क्या देवताओं की शक्ति भी हार जाती है। कामदेव श्रावक पर देवता ने अपनी सारी शक्ति का प्रयोग किया, लेकिन कामदेव ने अपनी रक्षा के लिए किसी अन्य शक्ति का आश्रय न लेकर सत्योपार्जित आत्मबल से उस देवता की सारी शक्ति को परास्त कर दिया।''

भगवान महावीर ने सत्याग्रह का प्रयोग पहले अपने ऊपर किया था। इससे वे लोगों के मना करने पर भी चंडकौशिक जैसे विषधर सर्प के स्थान पर निर्भयतापूर्वक चले गए। प्रहलाद के जीवन का इतिहास भी सत्याग्रह का महत्त्वपूर्ण दृष्टांत है। उसने अपने पिता की अनुचित आज्ञा नहीं मानी। इस कारण उस पर कितने ही अत्याचार किए गए, लेकिन अंत में सत्याग्रह के सामने अत्याचारी पिता को झुकना ही पड़ा।

आनंदकुमारी जी को सत्याग्रह की जेल के रूप में वह कोठरी मिली थी, जिसमें काका जी ने उन्हें बंद कर दिया था। अब तो आपको आत्मचिंतन के लिए अच्छा स्थान मिल गया था। आप इस कोठरी के बंधन से मुक्त होने के लिए किसी से याचना नहीं कर रही थीं, वरन् आप तो परमात्मा से उस सत्य के बल को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर रही थी कि हे प्रभो! मुझ में उस परम सत्य को, परम ज्योति को पाने के लिए कष्ट सहने की शक्ति हो। मैं अपने आप ही इस बंधन को तोड़कर मुक्त बन जाऊँगी। कवि की इस उक्ति को संभव है आपने जीवन में रमा लिया हो -

सखे! मेरे बंधन मत खोल।
स्वयं बँधा हूँ, स्वयं खुलूँगा।
तू बीच में ना बोल।। सखे...।।

वह कोठरी मानो आपके लिए साधना मंदिर बनी हुई थी, परंतु साधना के लिए वैसे साधन भी तो होने चाहिए थे? वह भी आपको देवयोग से वहीं मिल गए। पास ही सफेद वस्त्र सिले हुए पड़े थे। आपने सोचा प्रभु ने सहज ही यह योग मिला दिया है। आपने अपने शरीर पर से सारे रंग-बिरंगे वस्त्रों को उतार फेंका और श्वेतवस्त्र धारण कर लिए। थोड़े बहुत आभूषण आपके शरीर पर थे, जिन्हें उतारकर एक निकटवर्ती कोठरी में फेंक दिए। संयोगवश एक कैंची भी वहाँ पड़ी हुई मिल गई, जिससे सिर के सारे बाल काट डाले। अब तो आपने साध्वी-सा वेश बना लिया। उस समय आप ऐसी लग रही थी मानो दूसरी चंदनबाला महासती ही हों। आप प्रसन्नमुद्रा में अँधेरे में एक योगिनी की भाँति माला फिरा रही थी। आनंदकुमारी जी की वैराग्य-छटा अपूर्व रूप ले रही थी।

आपने श्वेत वस्त्रों को सिर्फ धारण ही नहीं किया अपितु सादगी के सुख का पता लगा लिया। मन में सोचा कि बस, अब तो जब ये श्वेत वस्त्र पहन कर साध्वी बनूँगी तभी सच्चा आनंद आएगा। धन्य है ऐसी पवित्र भावना को!

इधर काका जी ने यह काम कर तो दिया, पर मन में कुछ डर रहे थे। उन्होंने सोचा- ''अभी इसके ससुराल के लोगों में से कोई आ धमका तो मेरी इज्जत मिट्टी में मिला देगा। इतने में तो आनंदकुमारी जी के जेठ फतहचंद जी बाहर से घर आ गए। उन्होंने सारा घटनाक्रम सुना तो दंग रह गए और कुछ आँखें लाल करके गणेशमल जी से कहने लगे कि अगर आज हम घर न आते तो आप न मालूम क्या कर डालते! आपने आनंदकुमारी के साथ इस तरह का बर्बरता का व्यवहार कर क्रूरता को भी लज्जित कर दिया। उसने आपका क्या बिगाड़ा था, जो आपने यहाँ आकर उसे इतना कष्ट दिया? हमारे घर में तो वह पूजनीया है, शील की देवी है

और शांतमूर्ति है। ऐसी नारीरत्न को कष्ट की त्राण पर चढ़ाया। वह तो पहले ही अपने जीवन में कष्टमय साधना कर रही थी। आप जैसे कुलीन व्यक्तियों के लिए यह कार्य शोभनीय नहीं है। आप पर कोई इतनी चोट करे तो आपको कितना दर्द होता है! खैर, जो हुआ सो हुआ। अब इन्हें किसी तरह से आश्वासन दीजिए।

फतहचंद जी के कहने का गणेशमल जी पर काफी असर पड़ा। वे मन में समझ तो गए, पर कुछ बोल न सके। वे आनंदकुमारी जी से कहने लगे- ''बेटी! मैंने तो यह काम तुम्हें किसी तरह से घर में रखने के लिए ही किया है। तुम्हारी माता बहुत अधीर हो रही थी। उन्होंने मुझसे कहा कि आप उसे समझा-बुझाकर किसी तरह दीक्षा को रोक दो। इसी कारण यह सख्ती मुझे करनी पड़ी। तुझे कहीं चोट तो नहीं लगी।'' काका जी ने समझा कि शायद इसके अवयव में कहीं सख्त चोट लगी हो तो दीक्षा के योग्य न रहेगी। ऐसा सोचकर बार-बार कहने लगे- ''तेरी आँख बता तो बेटी!''

आप भद्र प्रकृति की थी। आपने काका जी को मुस्कुराकर जवाब दिया- ''काका जी! आप जानते हैं यहाँ मेरा ससुराल है, मैं अपना मुँह यहाँ खोल नहीं सकती।'' काका जी समझ गए। वे कुछ नहीं बोले और अपना-सा मुँह लेकर घर की ओर चल दिए।

इधर फतहचंद जी ने देखा कि अनुजवधू कोठरी में बंद पड़ी है। हम पर उसकी रक्षा की जिम्मेदारी है जिसे पूरी करनी चाहिए। ऐसा सोचकर वे सीधे कोठरी के पास आए और कहा- ''बेटी, घबराओ मत। तुम्हारी जैसी इच्छा होगी वैसा ही करेंगे। तुम अपने हृदय में संतोष रखना।

मैं तुम्हारे लिए प्रयत्न कर रहा हूँ। मुझसे तुम्हारा इतना कठोर कष्ट देखा नहीं जाता। आशा है जल्दी ही तुम्हारे कार्य में तुम्हें सफलता मिलेगी। अब तुम्हें रोकना व्यर्थ है। जिस पथ पर तुम आ गई हो उस पर अब आगे बढ़ो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम एक महान सती बनो और जैनधर्म के गगन में सूर्य के समान चमको।''

आप चुपचाप सुन रही थी और अपनी साधना में व्यस्त थी। जेठ जी के पवित्र हृदय के उद्‌गारों को सुनकर आपके मन में धैर्य दृढ़ हो गया। आप उस परम दिन की प्रतीक्षा करने लगी।

इधर फतहचंद जी ने रात्रि के समय में ही काका जी की करतूत के समाचार आपके पीहर भेज दिए। पीहर के सब लोग सुनकर काका जी को मन ही मन गालियाँ देने लगे। गणेशमल जी के पड़ोस के कितने ही लोगों ने उनको उपालंभ भी दिया कि आपने उसे क्यों पीटा? वह महासती है, शीलमूर्ति है। गणेशमल जी ने अपनी ऐब छिपाने के लिए उनसे कहा- ''मैंने तो उसका दीक्षा का विचार पलटने के लिए ऐसी सख्त कार्यवाही की थी।'' फूलकँवर बाई ने जब यह सुना तो वह भी मन में पछताने लगी कि मैं स्वयं को उसकी सहायिका कहती थी, पर यह काका जी का निर्दयी-कृत्य मैंने अपने रहते होने दिया, उनको रोक नहीं पाई। अब मैं उसके सामने क्या कहूँगी? इस तरह कितनी ही देर तक पशोपेश में पड़ी रही। आखिरकार आपकी माता जी, फूलकँवर बाई आदि सब लोग ऐसा विचार कर कि कहीं ज्यादा चोट लगी होगी और हमने समय पर उपचार न कराया तो चोट बढ़ न जाए; रात को ही चलने का मन बना लिया। सब रात को ही वहाँ पहुँच गए। इस तरह रातभर आने-जाने वालों का ताँता लग गया।

उस समय आपने पौने चार वर्ष तक दयाव्रत (छह काया की रक्षा) का पालन किया। उस दया में आप स्वयं किसी प्रकार का आरंभ नहीं कर सकती थी, न करा सकती थी। अत: चोट लगने पर भी आपने उफ तक नहीं की। आपके ससुराल वाले सेकने के लिए ईंट तपाने लगे, पर आपने मना कर दिया कि इस तरह तपाकर लाई हुई ईंट मेरे काम न आएँगी क्योंकि मैं दयाव्रत में हूँ। आपके पीहर वाले आपकी भोजाई के हाथ में चोट लगी थी पर सेकने के लिए गर्म मैदा-लकड़ी का लेप लाए थे। उस सहज ही गर्म किए लेप को लगवाना आपने मंजूर कर लिया।

आनंदकुमारी जी से कोई भी चोट के विषय में पूछता तो आप यही उत्तर देती कि कोई ज्यादा चोट नहीं आई। गुरुणी जी की कृपा से सब ठीक हो जाएगा। आप लोगों ने मेरे लिए रात में आने का इतना कष्ट क्यों उठाया? मैं तो अपने आप ठीक हो जाऊँगी।

वे लोग समझ गए कि बस, अब तो इसकी काफी परीक्षा हो चुकी है। सबने आपकी दिनचर्या देखी तो हैरान हो गए। बिलकुल साध्वी जैसा जीवन! सब ओर संयम का वायुमंडल।

माता जी और बहिन आदि को आप पर पूर्ण भरोसा हो गया कि यह सिंहनी की तरह वीरतापूर्वक दीक्षा का पालन करेगी। साधु जीवन में इससे अधिक और क्या कष्ट आएँगे? सब लोग आपको अपनी ओर से आश्वासन देकर वापिस लौट गए।

सूर्योदय हुआ। आज का सूर्योदय विजय का सूर्योदय था। जैसे रात्रि के सारे अँधकार पर विजय प्राप्त करने के बाद दिवाकर अपना विजयी मुखमंडल लेकर बाहर निकलता हैं, वैसे ही आपने भी संबंधी लोगों के मानस के अँधकार पर विजय प्राप्त की और विजयप्रभा से प्रकाशित अपना मुखमंडल लेकर कोठरी से बाहर निकली। अब भोजन के लिए सब लोगों ने कहा- ''थोड़ा भोजन कर लो।'' आपने कहा- ''मैं भोजन कैसे कर सकती हूँ? मुझे तो काका साहब ने संथारा (अनशन) कराया हुआ है। उनकी दिलाई हुई प्रतिज्ञा को भंग कैसे कर सकती हूँ?''

काका जी (गणेशमल जी) को बुलाकर पूछा गया- ''क्या आपने अपनी भतीजी को कल संथारा (अनशन) करा दिया था? वह कह रही है कि मुझे काका जी ने संथारा करा दिया है। क्या इस तरह से संथारा हो जाता है?''

गणेशमल जी- ''मैंने तो उसे डर बताया था ताकि संथारे के नाम से वह दीक्षा लेने का हठ छोड़ दे। वस्तुत: मैंने कोई संथारा नहीं कराया और इस तरह जैनधर्म में संथारा होता भी नहीं है।''

आनंदकुमारी जी की सरल और निष्कपट वृत्ति देखकर सब लोगों ने कहा- ''आपको आपके काका जी ने किसी प्रकार का संथारा नहीं कराया था। वह तो खाली डर दिखाना था।'' तब आपने कहा- ''तब तो मुझे भोजन करने में कोई हर्ज नहीं है। मैंने तो समझा था कि काका जी ने मुझे संथारा करा दिया है तो ठीक है। वह दिन आवे और इस नश्वर शरीर पर से ममता हटाऊँ।''

यह है सरल जीवन! साधक का हृदय ऐसा स्वच्छ और निर्मल होना चाहिए। आप तो भोजन करने के लिए तैयार थी, पर आपके काका जी अपने यहाँ भोजन हेतु भेजने का निवेदन जेठ फतहचंद जी से करने लगे। फतहचंद जी ने कहा- ''आपके यहाँ भोजन के लिए भेजना तो दूर, हम आपके यहाँ की एक भी चीज स्वीकार नहीं कर सकते हैं। आपने हमारे घर की एक सरलात्मा के साथ ऐसा अत्याचारपूर्ण व्यवहार किया है। क्या पता अब भी आप और कुछ कर बैठें! आपकी वृत्ति से हमें संतोष नहीं है।''

काका जी अपने आपे से बाहर हो गए और कहने लगे- ''आप हमारी बेटी को न भेजते हैं तो न सही। आप ही रखिए और साध्वी जी के यहाँ चढ़ा दीजिए। आपने इतने दिन क्यों लगाए? पहले ही इसे आज्ञा देकर दीक्षा दिलवा देनी थी। खैर, मैं तो जा रहा हूँ। आप जानें, आपका काम जाने।''

आप यह बातें सुन रही थी। आपने उसी समय जेठ जी को कहलाया कि ''यह ठीक है कि मेरे साथ उन्होंने बर्बरतापूर्ण बर्ताव किया है, फिर भी मैं उस बर्ताव को अपने लिए हितकर समझती हूँ। वे अगर इतनी कसौटी न करते तो क्या मालूम आपके भाव आज्ञा देने के होते या न होते?''

''मैं यह नम्रतापूर्ण शब्दों में कहती हूँ कि मुझे काका जी के यहाँ जरूर भेज दीजिए। मुझे उन पर किसी प्रकार का रोष नहीं है। न ही मैं उनके द्वारा दिए गए कष्टों को कष्टरूप में समझती हूँ। वे मेरे पितातुल्य हैं, बड़े हैं। उन्होंने मेरी कोई हानि नहीं की है। कृपया इस बात पर विचार करके मुझे काका जी के यहाँ भेजने में किसी प्रकार की आनाकानी न करें।''

आपकी अनुनय-विनय सुनकर सब लोग द्रवित व आश्चर्यचकित होकर कहने लगे- ''इसे इतना दु:ख दिया तो भी उन पर कोई रोष नहीं करके प्रेम का बर्ताव ही किया और उनके यहाँ जाने को भी तैयार हो गई। धन्य है ऐसी सती को! यह तो कोई न कोई देवी ही है! हमने इसे इतने दिनों तक व्यर्थ ही रोककर रखा। अब इसे अपने निश्चित पथ पर कदम बढ़ाने देने चाहिए।'' आपके भावानुसार आपको काका जी के यहाँ भेज दिया गया।

देखिए सच्ची सहिष्णुता यह होती है। आनंदकुमारी जी को मारा-पीटा, कोठरी में बंद कर दिया, एक के बाद एक नई से नई यातनाओं का सिलसिला चला। परंतु आनंदकुमारी जी तिलमात्र भी अपने पथ से विचलित नहीं हुई। उत्तराध्ययनसूत्र का **'खंतिं सेवेज्ज पंडिए'** (पंडित क्षमा धारण करें) का पाठ आपके जीवन में ओत-प्रोत हो गया था, फिर मार्ग से विचलित होती ही क्यों? सच्चा वीर सिपाही मृत्यु को सामने देखकर भी अपनी राह नहीं बदलता। वह तो अपकार करने वालों का भी उपकार करता है। वह काँटा चुभाने वाले को फूल देता है। यही भगवान महावीर का सच्चा उपदेश था, जिसे आपने अपनी जीवन की प्रयोगशाला में प्रयोग कर दिखाया।

जिस समय दीक्षा लेने के विचार को त्याग देने के उद्देश्य से आप पर यह अत्याचार किया जा रहा था, उस समय संप्रदाय की प्रवर्तिनी रत्नकुमारी जी थीं। उस समय वे बगड़ी (मारवाड़) में विराजित थीं। आप वैरागी चौथमल जी की संसारपक्षीय मौसी जी थीं। वैरागी चौथमल जी (परम पूज्य आचार्य श्री चौथमल जी म.सा.), जो दीक्षा लेने के लिए काफी समय से तैयारी कर रहे थे, पर अभिभावकों की आज्ञा नहीं मिलने के कारण रुके हुए थे। वे आपके दर्शनार्थ सोजत आए, परंतु प्रवर्तिनी जी के दर्शन नहीं हो पाए, क्योंकि आपश्री बगड़ी जाने की तैयारी में थे। उस समय वैरागी चौथमल जी ने सोजत विराजित महासती बड़े आनंदकुमारी जी के दर्शन किए और माँगलिक सुनी। महासती जी ने उनको संदेश फरमाया कि यहाँ एक वैरागिन है, जिसे बहुत कष्ट दिए जा रहे हैं। उनको अभी तक आज्ञा भी नहीं मिली है।

चौथमल जी वैराग्यावस्था में थे, अत: उन्होंने वैरागिन बहिन आनंदकुमारी जी से मिलकर ज्ञानचर्चा की। आनंदकुमारी जी ने उनको एक पत्र देते हुए कहा कि यह पत्र आप महासती प्रवर्तिनी श्री रत्नकुमारी जी म.सा. को दे देना। पत्र में आपने वैराग्यावस्था में परिवार वालों के प्रतिबंध, काका जी द्वारा दिए गए परीषह आदि अथ से इति तक अपने हाथ से लिख दिए।

वैरागी चौथमल जी ने आप से पूछा- ''क्या मैं यह पत्र पढ़ सकता हूँ?'' तो आपने पढ़ने की स्वीकृति दे दी। वैरागी चौथमल जी पत्र पढ़ते ही अंतर में रोमांचित हो भावुकता से कहने लगे- ''इतने कष्ट सहकर भी आपके मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड़ रही है। मुझे भी अपने जीवन-मार्ग की दिशा का निश्चय करना है। मैं समझता हूँ कि इतने कष्ट सहने के बाद तो मुझे भी दीक्षा के लिए मेरे संरक्षकों की आज्ञा मिल जाएगी। अस्तु, आपका मार्ग कल्याणप्रद हो, यही मंगल कामना है।'' वैरागी जी वहाँ से विदा लेकर बगड़ी आए और महासती प्रवर्तिनी श्री रत्नकुमारी जी को वंदन करके सारी आपबीती सुनाने के बाद आनंदकुमारी जी का वह पत्र दिया। पत्र पढ़ते-पढ़ते ही महासती जी की आँखों से आँसू छलछला आए, हृदय गद्‌गद् हो गया और कंठ भी रुद्ध गए। आखिर उन्होंने कहा- ''वास्तव में वैरागिन की सच्ची कसौटी हुई है। भोले-भाले घरवाले लोग जानते हैं कि इस तरह ठोक-पीटकर बालू की दीवारों से संयम की बाढ़ को रोक लेंगे, पर वे यह नहीं जानते हैं कि ये वो बाढ़ है, वो तूफान है, जिसे रोकने की ताकत किसी की नहीं। दृढ़-प्रतिज्ञ वीर पुरुष को कोई शक्ति रोक नहीं सकती। इस संयम के यात्री का जीवन संबल अंतर्हृदय की आदर्श प्रेरणा है। उसका प्रकाश अब सूर्य के प्रकाश से भी बढ़कर है। आशा है ऐसा प्रकाश प्राप्त करने पर तुम्हें (वैरागी जी) भी, एक दिन दीक्षा की आज्ञा मिल जाएगी। अच्छा, तुम जिस पथ पर आए हो उस पर आगे बढ़ो, तुम्हें सफलता मिले बिना न रहेगी।''

वैरागी श्री चौथमल जी थोड़े दिन प्रवर्तिनी जी की सेवा में रहने के बाद में अपने निवास स्थल की ओर बढ़ गए। उन्हें वैरागिन बहिन आनंदकुमारी जी के कष्टों ने मार्ग दिखा दिया था। महासती जी की ओर से भी उन्हें यही प्रेरणा मिली थी। वैरागी श्री चौथमल जी अपने मार्ग पर बढ़ चले और एक दिन जैन समाज में 'दिवाकर' बनकर चमके।

यह है सच्चे वैराग्य का अद्‌भुत प्रभाव। सच्ची ज्योति प्राप्त कर वैरागी श्री चौथमल जी ने अपनी जीवन दिशा में क्रांति पैदा कर दी।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमश:

बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेंद्र बच्चो!

हमारा ज्ञान का खजाना जितना सुदृढ़ होगा उतना ही हमारा भविष्य सुनहरा बनेगा। सौरभ की माता जी हमारे ज्ञान के इस खजाने को सुदृढ़ कर रही हैं। इस बार सौरभ की माता जी ने एक नया विषय बच्चों के लिए सोच रखा है, तो आइए! हम भी सीखें कुछ नया।

नीलिमा- सौरभ! आज हम स्कूल से मिला होमवर्क करके शीघ्र ही तुम्हारे घर आ जाएँगे, क्योंकि आजकल एक मिनट भी बेकार गंवाना अच्छा नहीं लगता।

(सभी बच्चों ने नीलिमा की बात के लिए हर्षित होते हुए स्वीकृति प्रदान की और सभी बच्चे दोपहर में ही सौरभ के घर पहुँच गए)

सौरभ- (सभी को बैठने के लिए कहते हुए) बस, मम्मी आने ही वाली हैं और हम सभी को एक नए व उपयोगी त्योहार पर ज्ञानार्जन करवाएँगी।

पंकज- बताओ ना कौनसे त्योहार पर आज ज्ञानार्जन होगा?

नीलिमा- नहीं सौरभ, अभी कुछ मत बताओ। हमें तो प्रत्येक विषय पर आंटी के मुँह से सुनना अच्छा लगता है, क्योंकि अब तो ऐसा लगता है कि तुम्हारी मम्मी ज्ञान का खजाना है।

सौरभ की माता जी- (सभी बच्चों से) जय जिनेन्द्र बच्चो!

(सभी बच्चों ने प्रत्युत्तर में सामूहिक जय जिनेन्द्र आंटी! कहा)

सभी ने अपने ज्ञानार्जन को शब्दों तक ही सीमित नहीं रखा होगा बल्कि उसे याद करते हुए जीवन में उतारने का भी प्रयास किया होगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

सौरभ- हाँ, मम्मी! हम तो स्कूल में भी जब भी समय मिलता है तब आप द्वारा सीखे गए ज्ञानार्जन की ही चर्चा करते हैं।

सौरभ की माता जी- नितिन! तुम चुपचाप क्यों बैठे हो?

नितिन- आंटी! मम्मी-पापा होली के त्योहार पर मेरे ननिहाल जा रहे हैं और मुझे भी साथ ले जाना चाहते हैं, लेकिन मैं नहीं जाना चाहता। क्योंकि पहली बात तो मुझे होली पर रंग-गुलाल लगाना बिलकुल भी पसंद नहीं है, ऊपर से एक हफ्ते के लिए आपसे मिलने वाले ज्ञान से वंचित रह जाऊँगा वो नुकसान और।

पंकज- आंटी! होली पर रंग-गुलाल लगाना और पानी से भीगना मुझे बहुत पसंद है। मैं तो दिनभर जमकर होली खेलता हूँ। (क्रमशः अन्य बच्चों ने भी अपने भाव रखे)

सौरभ की माता जी- बच्चो! आज मैं इसी त्योहार पर आपको बताने वाली हूँ। होली तो बहुत ही अच्छा त्योहार है, लेकिन इसे मनाने का दृष्टिकोण बदल गया है। आप में से जिनको होली ज्यादा पसंद है और जो जमकर होली खेलते हैं, उनको तस्स उत्तरी का पाठ शीघ्र ही याद कर लेना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि वे दिनभर में न जाने कितने कर्मों का बंध करेंगे। रंग-गुलाल एवं पानी से होली खेलकर न जाने कितने त्रसकाय, वायुकाय, जलकाय एवं वनस्पतिकाय जीवों का हनन करेंगे। तो उनको इस पाप के मुक्ति के लिए तस्स उत्तरी का पाठ कर अपने कर्मों की आलोचना करनी ही होगी। फिर भी वे इस पाप से मुक्त नहीं हो पाएँगे, क्योंकि अनजाने में हुए पापों की आलोचना कर प्रायश्चित्त पश्चात् उनसे मुक्त हो सकते हैं, लेकिन ये तो जान-बूझकर किया गया पाप है।

सौरभ- इसीलिए मम्मी ने मुझे अल्पायु में ही होली खेलने के त्याग करवाकर पापों से बचा लिया। अब तो मैं होली के दिल रंग-गुलाल व पानी से दूर रहकर सीखे गए ज्ञान का रिविजन करता हूँ और सामायिक व प्रतिक्रमण द्वारा अनजाने में हुए पापों की आलोचना कर प्रायश्चित्त कर लेता हूँ। इससे मेरा मन सदा प्रफुल्लित रहता है और मैं हर समय आप लोगों के साथ हँसता व प्रसन्न रहता हूँ।

नितिन- आंटी! मैं यहाँ सीखा गया ज्ञान हमेशा अपनी मम्मी को बताता हूँ तो मम्मी मुझे शाबाशी देती हैं। आज भी होली को रंग-गुलाल व पानी के साथ खेलने के नुकसान मम्मी को बताऊँगा ताकि मम्मी-पापा भी मेरे साथ यह होली धार्मिक रूप से मनाएँ और लाखों जीवों का संहार होने से बच जाएँ। (सभी बच्चों ने नितिन की बात की हामी भरी और होली रंग-गुलाल व पानी से नहीं खेलने तथा अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करने की बात कही)

प्रतिज्ञा

1. होली का त्योहार रंग-गुलाल व पानी के साथ नहीं खेलेंगे अपितु धर्म-ध्यान कर जीवन सवारेंगे।
2. कम से कम 3 बच्चों को इसके लिए प्रेरित करेंगे।
3. जो रंग-गुलाल व पानी से होली खेलेगा उसकी अनुमोदना भी नहीं करेंगे।

संस्कार सौरभ

अश्रद्धा का परिणाम

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

एक सेठ को एक संन्यासी से मंत्र प्राप्त हुआ। मंत्र की साधना विषयक प्रश्न पूछने पर संन्यासी ने बताया कि घर मैं बैठकर तो साधना नहीं हो सकती है अत: जंगल में जाकर एक वृक्ष की डाली पर कच्चे धागे से छींका बाँध दो और नीचे चूल्हे पर कड़ाह में तेल गर्म करने के लिए रख दो। जब तेल उबलने लग जाए तब तुम उस छींके पर बैठकर मंत्र पढ़ते-पढ़ते क्रमश: एक एक धागा तोड़कर नीचे डालते रहो। इस क्रम से सब धागे टूटने के साथ ही तुम्हारे मंत्र की पूर्णरूपेण साधना सफल होते ही तुम आकाश में उड़ने की विद्या प्राप्त कर लोगे और उसी क्षण आकाश में उड़ भी जाओगे। पर सेठ के मन में शंका हुई कि कहीं मेरी साधना सफल नहीं हुई और मैं आकाश में उड़ने के बजाय इस उबलते तेल से लबालब भरे गर्म कड़ाह में गिर गया तो प्राणों से भी हाथ धोना पड़ेगा। अत: उसने वह मंत्र नहीं साधा वरन् उस मंत्र एवं मंत्र साधने की विधि को लिखकर तिजोरी में सुरक्षित रख दिया। कुछ समय बाद सेठ काल कर गए। उनका पुत्र जो पिता की पदवी प्राप्त कर सेठ बना उसे पिता जी की चौपड़ियों (बहियों) में वही मंत्र और उसको सिद्ध करने की सारी विधि लिखी हुई मिली। उसे पढ़कर लड़के की इच्छा उस मंत्र को साधने की हुई। उसने विधि के अनुरूप जंगल में जाकर वृक्ष के नीचे चूल्हा खोदकर कड़ाह में तेल उबालने के लिए रख दिया, फिर डाली पर कच्चे सूत का छींका लटका दिया। जैसे-जैसे तेल उबलने लगा वैसे-वैसे उसके मन में डाली पर चढ़ने की तत्परता तो हुई, पर मन ही मन शंका भी हुई कि मेरी यह साधना सफल होगी या नहीं? कहीं मैं कड़ाह में गिर गया तो? इस अविश्वास के कारण वह बार-बार डाली पर चढ़ने की हिम्मत करता और पुन: पुन: संकल्प से डगमगा जाता।

उसकी इस चर्या के बीच एक चोर राजा के यहाँ से चोरी करते हुए देखा गया, पर कोतवाल उसे कैद नहीं कर पाया और वह दौड़ता-दौड़ता उसी जंगल में आ पहुँचा, जहाँ वह सेठ का लड़का मंत्र की तैयारी कर मंत्र के प्रति पूर्ण समर्पण के अभाव में संशय उत्पन्न हो जाने से छींके पर चढ़ूँ अथवा नहीं चढ़ूँ? ऐसा विचार कर रहा था। कारण कि उसे प्राणों का मोह था और संन्यासी के वचनों पर पूर्ण विश्वास नहीं हो पा रहा था। ज्यों ही उस चोर की दृष्टि उस सेठ के लड़के पर पड़ी तो उसने सेठ के लड़के से सारी जानकारी चाही कि तुम यहाँ इस स्थिति में कैसे खड़े हो? सेठ के लड़के ने आद्योपांत सारा वृत्तांत उस चोर को कह सुनाया। यह सुनकर चोर ने सोचा कि कोतवाल मुझे पकड़ने के लिए मेरा पीछा कर रहा है। मेरी चोरी पकड़ी गई है, अत: मुझे प्राणदंड तो मिलेगा ही। क्यों न मैं इस लड़के को चुराए हुए रत्नों के डिब्बे देकर इस मंत्र को प्राप्त कर लूँ! यह विचार कर चोर ने अपने मन में सोचा हुआ प्रस्ताव सेठ के लड़के के सामने रख दिया। चोर के प्रस्ताव को सुनकर मंत्र साधना की सफलता पर संदिग्ध बना सेठ का लड़का रत्नों के

डिब्बों को लेकर उसके बदले उस चोर को मंत्र साधना की सारी विधि बतलाकर वहाँ से रवाना हो गया।

चोर जिसे अब मरने की तो कोई परवाह थी नहीं, क्योंकि प्राण संकट में तो पहले से ही पड़े हुए थे। अत: यह सोचकर कि कदाचित् बच जाऊँ तो मंत्र सिद्ध हो जाने पर आकाश में उड़ जाऊँगा। ऐसा दृढ़ विश्वास कर वह उस कच्चे धागे के छींके में बैठ गया और मंत्र पढ़ता हुआ एक-एक धागा तोड़कर नीचे डालने लगा। ज्यों ही पूरा छींका टूटा कि आकाशगामी विद्या को प्राप्त कर वह चोर आकाश में उड़ गया। इधर सेठ का लड़का रत्नों के डिब्बों को लेकर घर की ओर जा रहा था और बीच रास्ते में राजा द्वारा भेजे गए कोतवाल ने पकड़ लिया। चोरी का माल उसके पास देखकर राजा ने उसे प्राणदंड दिया। बेचारा बेमौत मारा गया।

इस दृष्टांत से ज्ञानीजनों ने यह समझाया कि हमारी वीतराग भगवान की आज्ञा के प्रति श्रद्धा है या नहीं। नमस्कार मंत्र के प्रति श्रद्धा है या नहीं। यानी परिपूर्ण समर्पणा है या नहीं। सेठ के लड़के ने मंत्र साधना की सफलता पर अविश्वास किया तो उसकी क्या स्थिति बनी? और चोर मंत्र की साधना के प्रति प्राणों की परवाह न करके पूर्णतया समर्पित हो गया तो उसने प्राण सुरक्षा के साथ सफलता हासिल कर ली। इस प्रकार यदि हम वीतराग भगवान के वचनों पर नि:शंक समर्पित हो जाएँ और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर चलें, चाहे कितनी भी आपदाएँ आ जाएँ तो भी अपने लक्ष्य से विचलित न हों। तीर्थंकर भगवंतों की आज्ञाओं में बिना किसी प्रकार की शंका के पूर्णरूपेण समर्पणा बनाए रखें तो निश्चित सफलता मिलेगी।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टांत सुधा)

भक्ति रस

राम गुरुवर हैं मोक्षगामी

-ललित कटारिया, सुपल

दर्शन-वंदन करें बारंबार,
शुद्ध हो अपनी आत्मा।
शुद्ध संयम की देख पालना,
खिल जाती सभी की आत्मा।।
मनोहारी आभामंडल राम गुरु का,
भक्तों की जाग्रत होती आत्मा।
आगम रहस्यों को सुनकर,
जन-जन की पवित्र होती आत्मा।।
हित-मित मीठे वचनों को सुन,
धर्म करनी में जुट जाती आत्मा।
खुद त्यागी तपस्वी बड़े,
साथियों को तपस्वी बनाती आत्मा।।
शिकायत प्रतिक्रिया से दूर हमेशा,
राम गुरु खुद की ही देखते आत्मा।
आशा अपेक्षा नहीं किसी से,
निरभिमानी बनाते आत्मा।।
भटके हुए राही को सद्ज्ञान से,
उच्चकोटि की बनाते आत्मा।
फक्कड़ता युक्त जीवन देख राम गुरु का,
जन्मों-जन्म के दु:ख समाप्त कर लेती आत्मा।।

मेरे आचार्य ऐसे हैं

-रत्ना ओस्तवाल, राजनांदगाँव

सादड़ी में श्रमण संघ ने एक आचार्य की अधीनता में ही शिक्षा, प्रायश्चित्त, चातुर्मास आदि होने तथा साधु संघ में उत्पन्न विकृतियों को दूर करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया था, वह लक्ष्य एवं लक्षण प्रतिकूल दिशा में थे। ऐसे समय निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति के ऊपर बहुत बड़ी जवाबदारी व आचरण पालन करने में खतरा उपस्थित हो रहा था। उस स्थिति को आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. सहन नहीं कर सके और अपनी सूझ-बूझ से आचार्य की महत्ता व संघ की रक्षा के लिए चादर की परंपरा को निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति का द्योतक मानकर इसे शुद्ध संयम एवं समाचारीयुक्त हाथों में सौंपना चाहा और प्राप्त पद स्वीकार नहीं किया। शुद्ध चादर को धार्मिक दृष्टि से अपने विचारों में सर्वमान्य कर आपने शुद्ध साधुमार्गी परंपरा का निर्वाह किया। यह चादर सुधर्मा स्वामी आदि आचार्यों से चली आ रही है। पाट-परंपरा से यह चादर धारण की जाती है। चादर-श्वेत, उज्ज्वल, निष्कलंक, पवित्र तथा धब्बों से रहित हो। ऐसी चादर परम पूज्य आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को सर्वसमुदाय के बीच ओढ़ाई गई थी। ऐसी चादर के धारक मेरे आचार्य भगवन् सभी ओर-छोर से शुद्ध एवं 36 गुणों के धारक हैं।

आचार्य पद एवं उसकी महत्ता जैन दर्शन की संघीय व्यवस्था में सर्वोपरि है। चतुर्विध संघ की संपूर्ण बागडोर आचार्य के सशक्त संयमी हाथों में सौंपी जाती है। जो श्रमण मर्यादाओं का अनुपालन करते हुए अनुशासनबद्ध होकर संघ का संचालन करते हैं। 36 गुणों में जातिसंपन्न, कुलसंपन्न, बलसंपन्न, रूपसंपन्न, विनयसंपन्न, ज्ञानसंपन्न, निर्मलमति, शुद्ध श्रद्धासंपन्न, लज्जाशील, लाघवसंपन्न आदि दस गुणों से परिपूर्ण और भी कई गुण जैसे ओजस्वी, तेजस्वी, वचस्वी, यशस्वी, जितकषाय, जितेंद्रिय, करण-प्रधान, चरण-प्रधान, नय-प्रधान, नियम-प्रधान, व्रत-प्रधान, गुण-प्रधान, ब्रह्म-प्रधान, शौच-प्रधान आदि गुणों से मंडित है। ये सारे महत्तम गुण मेरे आचार्य, मेरे आराध्य श्री रामलाल जी म.सा. में विद्यमान हैं।

शुद्ध संयम एवं आचार मर्यादा का आचार्य स्वयं पालन करते हैं एवं अन्यों को भी पालन कराते हैं। आचार जैसे- 1. ज्ञानाचार, 2. दर्शनाचार, 3. चारित्राचार, 4. तपाचार एवं 5. वीर्याचार रूप पाँच आचार आचार्य के मौलिक गुण हैं। ज्ञानाचार के तहत मेरे आचार्य आगम के भंडार हैं। दर्शनाचरण में आप समकित की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। मेरे आचार्य चारित्राचार में शंखचूड़ामणी हैं। तपाचार्य में अपने जीवन में मासखमण एवं अन्य कई तपस्याएँ आपके आचरण का दर्पण है। वीर्याचार में शुद्ध संयम की पालना आपके रोम-रोम में है।

आठ संपदा आप में पूर्ण समाहित हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति से आप अडोल, अकंप एवं चारित्र गुणों में सर्वगुण संपन्न हैं। विनम्र एवं मार्दवगुण संपन्न हैं। आप नवकल्पी विहार करने वाले, लोकोत्तर संपत्ति के धारक, सौम्य मुद्रा वाले, अचंचल गुण से निखरे हुए सितारे हैं। विद्वानों में आपकी गणना युगप्रधान है। आप गंभीर स्वभाव एवं निश्चल ज्ञानी की श्रेणी में आते हैं। तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित उत्सर्ग मार्ग एवं उस मार्ग पर बढ़ते चरण तीर्थंकर की आज्ञा के प्रमाण हैं। स्वसमय और परसमय में आप दक्षता से संपन्न हैं। शरीर संपदा आपकी तेजस्विता को निखारती है। बस लगता है कि देखते ही जाओ। कब गुरुवर की नजर मुझ पर हो और मैं निहाल हो जाऊँ। वाक्चातुर्य के आप शिरोमणि हैं। प्रतिवादी को चकित करना एवं प्रभावशाली वचन आपकी वाक्य रचना को प्रशस्त दर्शाते हैं। मधुर संपदा, राग-द्वेष रहित वचन आपकी वचन संपदा हैं। आप द्वारा प्रवचन में फरमाए गए वचन हर श्रोता को ऐसे लगते हैं जैसे

उन्हीं के लिए ही कहे गए हैं। गागर में सागर आपके गंभीर और व्यापक गुण को दर्शाता है। प्रबल बुद्धि के धारक, अवग्रह, ईहा आदि गुणों के आप भंडार हैं। परवादियों को पराजित करना आपकी कुशलता है। पुरुष-ज्ञान गुण एवं वस्तु-ज्ञान गुण में आप माहिर हैं।

संग्रह संपदा में आप गणयोग जैसे बालक, दुर्बल, गीतार्थ, तपस्वी, रोगी एवं नवदीक्षित का पूर्ण ध्यान रखते हैं। आपकी क्रियाविधि कालो-काल है। व्याख्याता, भिक्षाकुशल, सेवाभावी शिष्य समुदाय की व्यवस्था आदि गुण गजब के हैं।

चार विनय के आप धारक हैं -

1. आचारविनय - विहार समाचारी संयम से परिपूर्ण हैं। विनय समाचारी, तप समाचारी आपकी दूरदर्शी कुशलता का परिचय है।

2. श्रुतविनय - श्रुतविनय में स्वयं श्रुत का अभ्यास करना और कराना, आज हमें साक्षात् परिलक्षित हो रहा है। जैसे हम सब में आगम की रुचि, कर्मग्रंथ और कर्मप्रकृति का ज्ञान, श्रावक-श्राविकाओं एवं साधु-साध्वी में यथार्थ में दृष्टिगोचर हो रहा है। आचरणीय, अनुकरणीय एवं अनुपालनीय शिविरों का आयोजन आपकी पैनी दृष्टि का ही सुपरिणाम है। हर चातुर्मास में नए-नए आयाम देकर आपने चातुर्मास को सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय सेवा भावना से सरल व सादगीपूर्ण मितव्ययी बनाकर जीवन जीने का सुखद संदेश दिया है। आज के इस पावन समय में आपश्री जी ने सैकड़ों दीक्षाएँ प्रदान कर हर आत्मा को पावन किया है। ये आपके प्रति अटूट श्रद्धा का साक्षात् उदाहरण है।

3. विक्षेपविनय - विक्षेपविनय में अंत:करण से धर्म की स्थापना करना एवं धम्म सद्धा चालीसा, संयम चालीसा, संघ समर्पणा के साक्षात् प्रमाण हैं।

4. दोषपरिघातविनय - दोषपरिघातविनय के अंतर्गत महत्तम महोत्सव में इंद्रधनुष एवं No Name No Blame के साथ No Name No Fame को सार्थक करते हुए रसलोलुपता की हानियाँ बताना, क्रोध पर विजय प्राप्त करना, विषयों का परिघात करना, आत्मदोष परिघात करना आदि गुणों से आप परिपूर्ण हैं। रोज के छोटे-छोटे नियम जैन-जैनेतर में स्थापित कर धर्म की उत्कृष्ट प्रभावना करवाना, चतुर्विध संघ को धर्म में ओत-प्रोत करना आपके उपदेशक शैली व सर्वजन हिताय का अनुपम उदाहरण है।

मेरे आचार्य में आज के युग में भी हमें अरिहंतों के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। इस संसारी जीवन में मोक्ष का मार्ग बताने वाले आचार्य मेरे भगवान हैं। ऐसे प्रयोगधर्मी आचार्य का जीवन स्वयंमेव प्रयोगशाला है। ऐसे आचार्यदेव को पाकर हम सब अपने आपको पुण्यवान और धन्य-धन्य मानते हैं। भला हो हमारे शुभ कर्मों का, जिनके उदय से ऐसे आचार्य प्रवर के ज्ञान, दर्शन और चारित्र का लाभ पाकर जीने का अधिकार मिला है।

भक्ति रस

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

-राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

प्रिय जिनको सेवा कार्य व शोध अध्ययन,
संत बने वे तो निस्पृह साथ में फक्कड़पन।
यश, प्रशंसा की चाह नहीं, प्रिय अपना काम,
परम रहस्यज्ञाता, विद्वान् आचार्य श्री राम।।

छोटे-बड़े हर सदस्य के प्रति एक-सा भाव,
सीधी बातें खरी-खरी, ना कोई घुमाव-फिराव।
चुनौतियों व कठिनाइयों को लेते हैं थाम,
इस युग के अद्भुत व्यक्तित्व आचार्य श्री राम।।

भीड़ से अरुचि, एकांत मनन-लेखन की प्रियता,
शुद्ध संयम आचरण पालन में रखते धीरता।
संयम, तप की स्वर्णिम आभा को प्रणाम,
संघ के पुरोधा अनंतगुणी आचार्य श्री राम।।

गुरुवर के सभी गुण हैं अपनाने जैसे,
पर सब अपना पाएँ, हम कहाँ गुरुवर जैसे।
फिर भी धर्म संघ के लिए कलम मैं चलाऊँगी,
गुरु के एकांत चिंतन-मनन गुण को अपनाऊँगी।।

चुनौतियों में आगे बढ़ने की होगी कोशिश,
गलती हुई हो तो क्षमा माँगती झुकाकर शीश।
स्वाध्याय, सामायिक कर शुद्ध धर्म को थाम,
राखी राम चरणोपासिका, मेरे गुरुवर आचार्य श्री राम।।

श्रमणत्व के संयम सुमेरु होते हैं आचार्य

-पद्मचन्द गाँधी, जयपुर

आचार्य ज्ञान-प्रधान, दर्शन-प्रधान, चारित्र-प्रधान, शूर, वीर, धीर, साहसिक, शम, दम, उपशमवान, चारों तीर्थों के श्रद्धास्पद, जिनेश्वर देव के पाट के अधिकारी, जैन शासन के निर्वाहक और प्रवर्तक, ऐसे अनेक गुणों के धारक होते हैं। यह तभी संभव होता है जब उनका श्रमणत्व सुमेरु के समान दृढ़ हो। अत: श्रमण को समझने के लिए श्रमणत्व का परिचय जरूरी है।

भारतीय संस्कृति विश्व की एक महान संस्कृति है। जिस संस्कृति ने विश्व को पावन प्रेरणा प्रदान की, प्रकाश स्तंभ के रूप में पथ प्रदर्शन किया, जिसकी उदार और उदात्त विचारधारा के कारण जन-जन का अंतर मानस सदा ही उसके प्रति श्रद्धा से नत रहा और विश्व गुरु का गौरव प्राप्त हुआ। जैन परंपरा का एक शब्द है 'श्रमण'। श्रमण संस्कृति ने विश्व को आध्यात्मिक जीवन जीने का संदेश दिया। श्रमण संस्कृति ने यह स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा की कि श्रमण बनने के लिए केवल बाह्य वेश परिवर्तन करना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् अंदर के जीवन का परिवर्तन अनिवार्य है। श्रमण जीवन का मार्ग फूलों का मार्ग नहीं है अपितु काँटों से भरा हुआ है। नंगे पैरों से चमचमाती हुई तलवारों पर चलने के समान कठिन है। मोम के दाँतों से लोहे के चने चबाने के समान कठिनतम है। धधकती हुई ज्वाला को पार करने के समान दु:साध्य है। जो साधक वीर, धीर, गंभीर और अत्यंत साहसी होते हैं वे ही ऐसे दुर्गम पथ पर हँसते व मुस्कुराते हुए अपने कदम बढ़ाते हैं। जो व्यक्ति वासनाओं के दलदल में फँसे हुए इंद्रियों के प्रवाह में प्रवाहित है, उद्दाम इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं कर सकते हैं, वे इस पथ को स्वीकार करने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

आगम साहित्य में श्रमण जीवन का जो शब्द चित्र प्रस्तुत किया है उसके अनुसार श्रमण ममता रहित, निरंकार, निसंग, नम्र होता है और प्राणीमात्र पर उसके अंतर्मानस में समभाव की सुर-सरिता प्रवाहित होती है। चाहे लाभ हो या हानि, चाहे सुख के सरस सुमन महक रहे हो, चाहे दु:ख के नुकीले काँटों की चुभन, चाहे प्रशंसा के गीत गाए जा रहे हो, उसमें सर्वत्र समभाव रहता है। वह न राग के प्रवाह में प्रवाहित होता है, न द्वेष के। वह सदा सहिष्णु रहकर निजभाव में रमण करता है। विश्व के लिए इस प्रकार के श्रमण मंगल मूर्ति के रूप होते हैं। उनके जीवन में सत्य और करुणा का अपार सागर प्रतिपल हिलोरे मारता है। कठिन से कठिन परीषह आने पर भी वह मेरुपर्वत की तरह अप्रकंप रहता है। वह समुद्र के समान गंभीर, चंद्र के समान शीतल, सूर्य के समान तेजस्वी, शेर के समान निर्भीक और पृथ्वी के

समान क्षमाशील होता है। संसार की कोई भौतिक चकाचौंध उनके मन को आकर्षित नहीं कर सकती। वस्तुत: इतना पवित्र और निर्मल होता है श्रमण जीवन।

निर्ग्रंथ जीवन सहजता का महाकाव्य होता है। उसकी गति, स्थिति, प्रवृत्ति, प्रकृति के साथ लयबद्ध होती है। श्रमण का जीवन आश्चर्यों का महालेखा नहीं होता किंतु चेतना का उन्मेष होता है। उनके हर आचरण में मनुष्य नए उच्छ्वास, नई प्रेरणा तथा नई प्रकाश शक्ति का अनुभव करता है। संत जीवन की सामान्य परिकल्पना के अनुरूप नहीं जीता। वह उस शृंखला की एक कड़ी के रूप में जीवन को देखता है जो शाश्वत को देश, काल के किनारों से बाँधकर बहती नदी की तरह सतत प्रवाहमान है। श्रमण स्वयं को उत्तेजना के विस्मृत क्षणों से दूर ले जाकर चेतना के साक्षात् क्षण का मार्गद्रष्टा होता है। वह स्वयं का सृष्टा, निर्माता व नियंता होने के साथ-साथ स्वचेतना का विस्तार विश्व चेतना के साथ कर समग्र का साक्षी होता है।

'श्रमण' स्वयं को केंद्र बनाकर जीता है। परंपरा उसका अनुगमन करती है। अत: संत और परंपरा विसंवादित के अंतर भी एक संवादिता का एक सहज भाव है। उसका जीवन निपट अपना होकर भी समग्र को समर्पित होता है। अत: श्रमण की कोई भी जीवन गाथा उसके समग्र अस्तित्व का आँकलन न होकर मात्र उस जीवन की ओर हमारे अभिमुख होने की एक कांक्षा मात्र है।

मर्यादाओं का सागर : आचार्य मर्यादाओं में बँधे महासागर का एक यायावर होते हैं। आचार्य करोड़ों में एक होते हैं, जिनकी पहचान एवं आभा अलग से ही झलकती है। इनका कृतित्व ही इनका व्यक्तित्व होता है क्योंकि ये अकेले में जीते हैं, निखरते हैं, लेकिन अकेले में जीने के बाद भी उनमें अकेलेपन का त्रास नहीं होता। उनके भीतर कभी अकेलेपन की टीस पैदा नहीं होती। गहरे अर्थों में तो हमेशा वह अपने भीतर कई व्यक्तित्व लेकर जीते हैं। उनके एकाकीपन में कई व्यक्तित्व बोलते हैं। सच्चे सद्गुरु वही होते हैं जो अपने शिष्य में साकार होते हैं। सच्चे शिष्य वही हैं जो गुरु के आकार में स्वयं को ढालते हैं। ऐसे लोग बहुत होते हैं जिनके हृदय में गुरु विराजमान होते हैं, लेकिन 'वो' विरले ही होते हैं जो गुरु के हृदय में विराजमान होते हैं। जीवन के अमृत, शिष्यों के छत्र, साधना के स्वर्णपत्र ऐसे अनंत आस्था के आयाम होते हैं। आचार्य अपने शिष्यों को जगाते हैं। जगाना उनका स्वभाव है। आचार्य जागरण के दूत होते हैं तथा जाग्रति के भोर की पहली किरण भी। वे सूरज उगने से पहले उगते हैं, मानो सूरज की प्रसुप्ति तोड़ने का दायित्व उनके पास हो। सूरज सबको जगाने वाला है। गुरु भी सूरज की तरह जाग्रति के सूत्रधार हैं। जाग्रति में निर्व्यसनता को आप सम्यक् आचरण का प्रथम सोपान मानते हैं। रात्रिभोजन त्याग को आप जैनत्व की पहचान, स्वास्थ्य के रक्षण, संयम और अहिंसा की पालना के लिए आवश्यक मानते हैं। समभाव की प्राप्ति हेतु सामायिक को, ज्ञानार्जन हेतु स्वाध्याय को, आश्रव निरोध हेतु संवर को तथा कर्मनिर्जरा हेतु तप को आधार रूप में प्रतिपादित करते हैं। आप धर्म प्रचार के साथ-साथ आचारधर्म के संदेशवाहक हैं। संघ-समाज में जैनत्व का गौरव जगे, मर्यादाओं का रक्षण हो और आडंबरहीन साधना में जैन समाज गतिशील हो, ऐसे नए आयाम प्रस्तुत करते हैं।

समय के शिल्पी : पैरों के निशानों से पगडंडियाँ बनाते आचार्य समय के अनूठे शिल्पी होते हैं। वे व्यतीत काल के हर टुकड़े से वर्तमान रचते हैं और अपनी चेतना को जाग्रत रखते हैं। आचार्य समय के सतत प्रवाह को पहचानते हैं, पानी आने से पहले ही पाल बाँध देते हैं क्योंकि जो सिद्धांत अनुभूतियों के आलोक पथ से गुजरता है वही लोक ग्राह्य होता है। महावीर की अहिंसा-ज्ञान की भाषा ही नहीं अपितु अनुभूतियों का सहजभाव है। आचार्य युग का निर्माण करते हैं। समय की मर्यादाओं में रहकर नई कल्पनाओं एवं रचनाओं का सृजन करते हैं। ऐसे ही आचार्य भगवन् हैं जो स्वयं के शिल्पी तो हैं ही साथ में शिष्यों, श्रावक-श्राविकाओं के निर्माण में भी कुंभकार की तरह परिपक्वता को तराशते हैं।

प्रयोगों के बीज मंत्र : युगों-युगों को त्राण देता महाप्रतीक है आचार्य का जीवन, क्योंकि आचार्य में जब रचनाकार उभर जाता है तो उनके भीतर का युग पुरुष अँगड़ाई लेता है। वे समय का आश्वासन बन जाते हैं तथा उनकी दैनिक क्रियाएँ समय की निरंतरता में बोलती हैं। उनके भीतर से जो प्रयोग फूटता है उसका उद्गम **'आगम'** होता है। वे स्वयं मौन रहते हैं और शताब्दियाँ उनके बोल बोलती है। उनके प्रयोग ही युवाओं की प्रेरणा के स्रोत होते हैं। ऐसे अनूठे आध्यात्मिक प्रयोग जो जीवन की दिशा बदल देते हैं। आचार्य एक प्रयोग भूमि के निर्माता होते हैं जिस पर इतिहास अपने पाँव पसारता है। समय का अवशेष अपना स्मारक उस भूमि पर बनाने को आतुर रहता है। प्रयोगों के पर्वत उस भूमि के आधार स्तंभ होते हैं। अजेय आधार स्तंभ को देखकर शताब्दियाँ प्रेरणा पाती हैं। कई इतिहास उस आधार स्तंभ के नीचे आकर शरण ग्रहण करते हैं। रचना का वह विलक्षण शिल्पकार स्वयं आवरण में रहता है और व्यक्त रहती है उनकी कृति। श्रमण के भीतर से फूटा सृजन का वह प्रयोग समय का दर्पण होता है, जिसमें प्रतिबिंबों की अनंत रेखाएँ उभरती हैं। दूसरों के लिए कुछ रचते रहने में उसकी रचना अनियोजित हो जाती हैं। अनियोजित रचना भी अनचाही प्रार्थना की तरह पवित्र होती है। आचार्य भगवन् अपनी रीति-नीति से नए प्रयोगों द्वारा साधना करते हैं जो आचरण बन जाती है, यह आचरण ही आपकी अभिव्यक्ति है, संदेश है एवं प्रेरणा है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के मानस पर स्वत: अमिट पहचान बन जाती है।

युवाओं के लिए नई दिशा : दिशाहीनता आज युवाओं का आम सच है। देश के बहुसंख्यक युवा इस समस्या से घिरे हुए हैं। जीवन की राहों पर उनके पाँव बहक रहे हैं, भटक रहे हैं, फिसल रहे हैं। बस जिज्ञासा, कौतूहल, ख़्वाहिश, शौक़ या फैशन के नाम पर उन्होंने टेढ़ी-मेढ़ी राहों को चुना है या फिर तनाव, हताशा, निराशा या कुंठा ने जबरन इन रास्तों पर ढकेल दिया है। सामाजिक वातावरण भी इन्हें आज स्वीकार करता जा रहा है। आज युवाओं में जिस नशे का जोर है उसमें शराब, सिगरेट, चरस, गांजा, अफीम, तंबाकू आदि को कोई जगह नहीं है, इन्हें अब 'सॉफ्ट आइटम' माना जाता है। आज का नया चलन, जिसे युवा अपने तनाव को दूर करने का साधन बना रहे हैं। 'पब', नाइट क्लब, कॉफी रेस्तरां, जहाँ उन्हें मिलता है चिल्डवाटर, एनर्जी ड्रिंक्स, बेसिर पैर वाली हँसी-मजाक, नशे में डूबो देने वाले पॉप म्यूजिक, डांस और शटर्स। शटर्स अर्थात् नशे के जरिए ली जाने वाली हेरोइन या कोकीन। ऐसी दिशाहीनता से बचाकर यदि सही दिशा प्रदान करते हैं तो बस आचार्य भगवन्, जिनका प्रेरक एवं सम्यक् व्यक्तित्व युवाओं को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। व्यसनमुक्ति अभियान इसी का परिणाम है। व्यसनमुक्ति हेतु आज तक हजारों युवकों को व्यसन से मुक्त कराया है। गुरु ही एक दिशासूचक यंत्र है जो जीवन नैया को गंतव्य स्थान तक पहुँचाता है तथा युवाओं का जीवन सँवारता है।

आज इस पंचम आरे में तीर्थंकर, केवली भगवान, मन:पर्यायज्ञानी, अवधिज्ञानी कोई नहीं है। आज अगर कोई आधार स्तंभ है तो जिनवाणी, आगमवाणी और इनका मंथन कर समझाने वाले हैं 'आचार्य भगवन्'। आज आध्यात्मिक गुरु ही हमारे जीते जागते तीर्थंकर जैसे हैं। हमारा जीवन एक नौका के समान है जो क्रोध, मान, माया, लोभ, व्यसन, कुसंगत, दुराचरण आदि चट्टानों से टकराती रहती है। आचार्य भगवन् आकाशदीप बनकर हमें सूचित तथा आगाह करते हैं- 'हे आत्मजनो! इन राहों पर न चलें, यदि कषायों की चट्टानों से टकरा जाओगे तो भव-भव बिगाड़ लोगे।' ऐसे आचार्य हमें सावधान करते हुए रक्षक एवं प्रहरी का कार्य भी करते हैं।

आत्मदर्पण के दर्शन : गुरु भगवन् सत्य एवं अध्यात्म का दर्पण हैं। यदि इसमें कोई झाँककर देखे तो स्पष्ट होगा- आपकी सामाचारी, आपकी क्रिया, कितनी सुदृढ़ व सुनिश्चित है। इसी कारण आचार्य का आभामंडल हर किसी को प्रभावित करता है। ऐसे आचार्य भगवन् जिनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं होता है। जिनका आचरण ही बोलता है, ऐसे प्रतिभा के धनी के एक आह्वान पर हर कोई उमड़ पड़ते हैं, जिनके पावन चरणों में व्रत-नियमों का अंबार लगा देते हैं। आचार्य ही

सद्कर्म करने का सर्वभौम संदेश देते हैं और कहते हैं **'उत्तिष्ठत्त जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत:'** अर्थात् उठो, जगो और रुको नहीं, जब तक जीवन के लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाओ। ऐसे आचार्य आदर्श होते हैं, जिनमें जीवन के आदर्शों की चरम गुणवत्ता झलकती हो, जिनमें जिंदगी की झलक निहारी जा सके। आचार्य हमारे लिए एक दर्पण हैं जिसमें स्वयं के गुणों का प्रतिबिंब तो अंतर्निहित है, लेकिन साथ-साथ आपकी जीवनचर्या की रीति-नीति से तथा आपकी अमृतमयी वाणी से खासतौर पर युवा प्रभावित होता है, जो आपके जीवन से जीने का मार्ग भी तय कर लेता है। संयम मार्ग पर चलना सीखता है युवा। सहनशीलता का मार्ग प्रशस्त करने वाले आचार्य भगवन् हमें सच्चाई का आइना दिखाते हैं।

श्रद्धा, समर्पण एवं आस्था की नींव डालते हैं आचार्य भगवन् :

आज युवकों में श्रद्धा, समर्पण एवं आस्था की कमी है। उन्हें आज ही परिणाम चाहिए, कल का धीरज उनमें नहीं, ऐसे में वे आचार्य के समीप आना ही नहीं चाहते, यदि आते हैं तो बहुत कम। लेकिन आचार्य भगवन् में तो गुरुत्वाकर्षण बल है, अपने प्रभाव से प्रभावित कर लेते हैं तथा आध्यात्मिकता जाग्रत कर देते हैं, जो उनके जीवन में समाविष्ट हो जाती है। आस्था की प्रगाढ़ता इतनी हो जाती है कि विदेशों में भी वह युवा अपने आपको अशुद्ध नहीं होने देता अर्थात् संपूर्ण रूप से जैन जीवनशैली का पालन करता है। आप ऐसी आध्यात्मिकता जगा देते हैं, जिससे व्यक्ति की भावनाओं का स्तर ऊँचा उठकर अपने अंतरंग को विकसित कर लेता है। आचार्य भक्तों को गुलाब की तरह खिलना एवं महकना सिखाते हैं। चंदन-सी शीतलता हमारे जीवन में भरते हैं। हमारे भीतर दीपक की तरह अलौकिक भावनाओं की ज्योति जगाते हैं तथा जीवात्मा को विकसित करते हैं। सच्चे गुरु वे होते हैं जो स्वयं वीतरागता को अपनाते हैं तथा दूसरों को सुगमता की राह दिखाते हैं। अत: युवा पीढ़ी स्वयं चयन करे कि उन्हें किस तरह के गुरु की शरण में रहना चाहिए।

यदि मन में सच्ची श्रद्धा है तो आस्था स्वत: आ जाती है। आध्यात्मिकता की कुँजी है श्रद्धा। सफलता की जननी है श्रद्धा। श्रद्धा गुरु के प्रति होनी चाहिए। यह कहाँ से कहाँ ले जाती है, इसकी महिमा अपरंपार है। गीता में 'गुरु वाक्य' को **'ब्रह्मवाक्य'** कहा गया है, अत: जो गुरु के प्रति दृढ़ श्रद्धा रखकर उनके निर्देशों का पूर्णरूप से पालन करे तथा संशयों का अंत कर कर्मों की निर्जरा करे वह सदैव सुखी, मन प्रसन्न स्थिति वाला रहता है तथा दिव्यकर्मी कहलाता है। आपकी प्रेरणा गहराइयों में झाँकने को अग्रसर करती है। गुरुदेव आप धन्य हैं।

सच्चे आचार्य के लिए तो सैकड़ों जन्म समर्पित किए जा सकते हैं। सच्चा गुरु वहाँ पहुँचा देते हैं जहाँ शिष्य अपने पुरुषार्थ से कभी नहीं पहुँच सकता। हे गुरुवर! आप महान है क्योंकि बिन गुरु के जीवन शुरु ही नहीं होता। आप जैसे गुरु को पाने के लिए जन्मों-जन्मों की साधना करनी पड़ती है तब जाकर कहीं आपकी चरण-शरण प्राप्त होती है। नामधारी गुरु तो कई हैं, पर प्राणधारी कोई-कोई होता है। ऐसे असीम-अनंत-अखूट-अलौकिक गुणों के धारी गुरुवर आपश्री के चरणों में हम सब नत हैं, प्रणत हैं।

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे व्हाट्सएप्प नं. 9799061990 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संस्कार सौरभ

फाल्गुनी पर्व

यदि संधि को जानोगे नहीं तो तोड़ोगे कैसे?

-निर्मल संघवी, इंदौर

पर्व एवं त्योहार

पर्व एवं त्योहार जीवन की नीरसता और जड़ता को भंग कर उसमें सरसता एवं नवचेतना का संचार करते हैं। हमारे सभी पर्व ऋतु परिवर्तन अथवा प्रकृति परिवर्तन के सूचक हैं। शरद ऋतु के जाते ही ऋतुराज बसंत के आगमन से फसलें परिपक्व हो जाती हैं, खेतों में धान्य पक जाता है। इस धरा पर बसंत उतरते ही पेड़ों से पीले पत्ते झड़ जाते हैं और उनका स्थान हरे पत्ते ले लेते हैं। तेज दमकते सूर्य से न केवल शरीर में नए रक्त का संचार होता है अपितु संपूर्ण भूमंडल में नया जोश भर जाता है।

ऊपरी तौर से भले ही होली/फाल्गुनी आमोद-प्रमोद का पर्व है, पर आंतरिक दृष्टि से विकारों को नष्ट करने का पर्व है। आलस्य, प्रमाद, अज्ञानतावश आत्महित साधे बिना जीवन के जो अनमोल बसंत बीत गए हैं, वे तो चले गए। अब जीवन के बहुमूल्य उत्तरार्ध में भौतिक नीरसता भंग कर धार्मिकता का संचरण करें। प्रत्येक साधक पूर्णिमा के चंद्रमा की भाँति अपनी साधना की समस्त कलाओं को विकसित करता हुआ सिद्धि की ओर अग्रसर हो। ये फाल्गुनी पर्व साधना करने का उत्तम अवसर है।

संधि से बंधन - संधि से मुक्ति

एक वर्ष में तीन चातुर्मासिक पर्व होते हैं- आषाढ़ी पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा एवं फाल्गुनी पूर्णिमा। ये चातुर्मासिक पर्व वस्तुत: संधिकाल हैं दो तिथियों का, दो पर्वों का, दो ऋतुओं का, दो तत्त्वों का। सूर्योदय व सूर्यास्त की संधि से दिन-रात का विस्तार है। आषाढ़ी, कार्तिक व फाल्गुनी पूर्णिमा की संधि से वर्ष का विस्तार है। दो संवत्सरी की संधि से हजारों वर्षों का विस्तार है और हजारों वर्षों बाद पुन: आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन ही एक आरे का अंत है और अगले दिन दूसरे आरे की शुरुआत है, जो अनेक अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी कालचक्र को जन्म देता है। ऐसे अनंत कालचक्र निरंतर बीत रहे हैं।

संधि से ही बंधन व मुक्ति है। यदि संधि को जानोगे नहीं तो तोड़ोगे कैसे? हम समय की संधि को पहचानकर व्यर्थ भवभ्रमण से बचें। हम लोक की संधि को जानकर अधोगतियों को टालें। हम आत्मा व शरीर की संधि में रहे हुए कर्मदलिकों की प्रकृति समझकर संयम व तप की छैनी से उनका भेदन करें। दु:खों से मुक्ति पाने के लिए संधि को जानना, संधि को पृथक् करने की आगमिक विधि को समझना व सम्यक् पुरुषार्थ करना ही श्रेयस्कर है।

चंद्रमा, सूर्य व पृथ्वी का पारस्परिक आकर्षण

चंद्रमा, सूर्य तथा पृथ्वी पारस्परिक गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बँधे हुए हैं। पूर्णिमा आदि संधिकाल के दिनों में चंद्रमा समुद्र के जल को आकर्षित करता है, जिससे समुद्र का पानी ऊपर उठता है, उछलता है तो पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल उस पानी को पुन: नीचे खींचता है। इस कारण जल की गति और गुण बदल जाते हैं और समुद्र में ज्वारभाटा उत्पन्न होता है। हमारे शरीर

में रहे हुए 65 प्रतिशत जलतत्त्व को भी चंद्रमा ऊपर खींचता है और पृथ्वी नीचे खींचती है। इस खींचतान में मानव रक्त में रहे हुए न्यूरॉन सेल्स क्रियाशील हो उत्तेजित हो जाते हैं। शरीर में रहे हुए तत्त्व उत्तेजित व विषम होकर रोगों को जन्म देते हैं। हरी सब्जियों में पानी की मात्रा ज्यादा होने से पर्व-तिथियों में उनका परिहार किया जाता है।

इस विषमता में मन भी बेचैन होता है, उत्तेजित होता है, उछालें खाता है और विवेक से नियंत्रण खो देता है। भोगों एवं अपराधों की ओर भागते हुए इस मन को त्याग की लगाम से वश में रखने के लिए ही शास्त्रों में चातुर्मासिक पर्व के दिनों में चौविहार पौषध का वर्णन है।

चातुर्मासिक पर्व की आराधना : आगमिक परिप्रेक्ष्य

संधिकाल बहुत गहन सूत्र व गंभीर अर्थ लिए हुए महत्त्वपूर्ण समय है। धर्म अनुष्ठान का अवसर है संधिकाल। श्री आचारांग सूत्र में वर्णित है- 'संधिं लोगस्स जाणित्ता' यानी लोक में रही हुई संधियों को जानकर सुअवसर का लाभ उठाने वाला प्रबुद्ध है, बुद्धिमान है, पंडित है।

देवसिय, रायसिय एवं सभी प्रतिक्रमण संधिकाल में ही होते हैं। श्री उपासकदशांग सूत्र में श्रावक के लिए प्रत्येक माह संधिकाल में 6 चौविहार पौषध का वर्णन है। आनंद आदि 10 श्रावक इन संधिकाल की तिथियों में प्रतिमाह 6 पौषध करते थे। व्यापार असीम था, पर धन की गाड़ी धर्म के साथ चलाने से व्यापार में, जीवन में हमेशा सुख-शांति, समता बनी रही। अन्य बहुत सारी विशेष आराधना संधिकाल की अपेक्षा से ही कही गई हैं। संधिकाल में पापों का प्रतिक्रमण किया जाता है। विघ्नों का परिमार्जन करने हेतु कृत दोषों की आलोचना की जाती है। श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में आलोचना का फल बताया है कि आलोचना करने से शरीर और मन से शल्य निकल जाता है। जिस यात्री के पैर से शल्य निकल जाता वह शीघ्र ही मंजिल प्राप्त कर लेता है।

चार्तुमासिक पर्व में प्रतिपूर्ण पौषध की आराधना व्यक्ति को हर तरह से प्रतिपूर्ण करने वाली होती है। तप से कर्मनिर्जरा तथा मन-वचन-काय योग शुद्धि से पुण्यवानी का बंध होता है। निर्जरा से आने वाली बाधाएँ दूर होती हैं और पुण्यवानी से सारे सुयोग मिलते हैं। संधिकाल में आध्यात्मिक व धार्मिक कार्य के सिवाय दूसरा कार्य नहीं किया जाता है।

हम चातुर्मासिक दिवस पर व्यापार, गृहकार्य, यात्रा आदि से पूर्ण निवृत्त हो, स्थानक में आकर संवर, सामायिक, दया, प्रतिक्रमण, पौषध आदि में प्रवृत्त हों।

संधि से बंधन - संधि से मुक्ति

जैसे कारागृह में रहा हुआ कैदी जेल की दीवार में रहे हुए छेद को देखता है, जानता है। जेल की मजबूत, ऊँची व अभेद्य दीवारों, परकोटों की शृंखला के बीच केवल एकमात्र संधि-स्थान ही उसके लिए मुक्ति का मार्ग बन सकता है। अन्य स्थान पर लगाया हुआ प्रयत्न निरर्थक हो सकता है। संधि-स्थल पर लगाया हुआ सम्यक् प्रयत्न ही उसको मुक्त करा सकता है।

रोम के राजा ने किसी संगीन जुर्म में अनेक लोगों को लोहे की मजबूत बेड़ियों में जकड़कर गहरे कुएँ में डालने रूपी मृत्युदंड का आदेश दिया। सारे कैदी मृत्युदंड से घबराकर रो रहे थे, पर एक बंदी हँस रहा था। राज-कर्मचारी बड़े ही विस्मित हुए और राजा को इस बारे में जानकारी दी। राजा द्वारा उस बंदी से प्रश्न करने पर उस बंदी ने बताया कि वह इसलिए हँस रहा है, क्योंकि वह जानता है कि बेड़ियों की संधि कहाँ है और जानना यानी मुक्त होना है। वह पेशे से लुहार है एवं वे सारी मजबूत बेड़ियाँ उसकी ही लुहारशाला में बनाई हुई है। हर गोल बेड़ी में एक संधि होती है, जहाँ से उसे जोड़ा जाता है और उसी संधि पर चोट करने से उस बेड़ी को तोड़ा जा सकता है यानी उससे मुक्त हुआ जा सकता है।

संस्कार सौरभ

सद्धा परम दुल्लहा

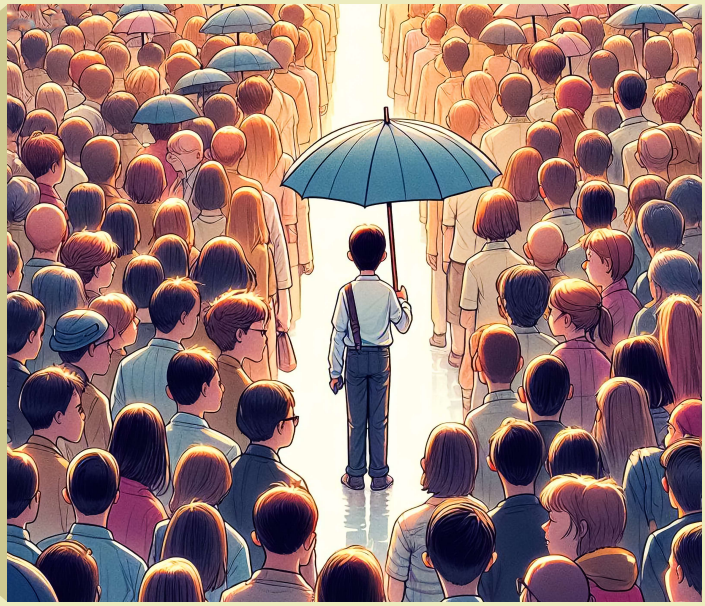

–सुरेश बोरदिया, मुंबई

मनुष्य भव को दुर्लभ बताया गया है। मनुष्य भव अगर सुलभ हो भी जाए, लेकिन आर्य क्षेत्र नहीं मिला तो? आर्य क्षेत्र भी अगर सुलभ हो जाए, लेकिन उत्तम कुल नहीं मिला तो? उत्तम कुल भी अगर सुलभ हो जाए, लेकिन जिनधर्म नहीं मिला तो? और अगर जिनधर्म भी सुलभ हो जाए, लेकिन उस पर श्रद्धा न हो तो?

बिन श्रद्धा सब सून

इतना सब कुछ जो दुर्लभ से दुर्लभ है, वे सब सुलभ हो भी जाएँ तो श्रद्धा के बिना सब शून्य है। श्रद्धा के अभाव में ये सब कुछ होकर भी अभीष्ट फल नहीं दे सकते हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि सभी दुर्लभ संयोग सुलभ हो जाने पर भी **'सद्धा परम दुल्लहा'** अर्थात् श्रद्धा परम दुर्लभ है।

श्रद्धा परम दुर्लभ है, लेकिन श्रद्धा है क्या? किसे कहते हैं श्रद्धा? श्रद्धा यानी ऐसा विश्वास जिसमें किसी तरह के तर्क का कोई स्थान न हो। एक ऐसा विश्वास जहाँ अविश्वास या शक की कोई गुंजाइश तक न हो।

एक राज्य में एक बार भीषण अकाल पड़ गया। खाने एवं पानी के अभाव में मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी त्रस्त हो गए। बरसात की कोई गुंजाइश नहीं दिख रही थी। उस राज्य के राजा ने किसी से उपाय पूछा तो पता चला कि एक ऐसा व्यक्ति पड़ौसी राज्य में है जो इस समस्या का निराकरण कर सकता है। यथाशीघ्र उसे दरबार में बुलाया गया। उसने बताया कि राज्य के अमुक स्थान पर एक टोटका किया जाए तो बरसात हो सकती है।

राजा ने घोषणा करा दी कि राजधानी का हर व्यक्ति उक्त स्थान पर पहुँच जाए। **'मरता क्या न करता'** अकाल से परेशान हर व्यक्ति उस स्थान पर नियत समय से पहले ही पहुँचने लगे थे। आगमन अब रुक चुका था, क्योंकि लगभग सभी नगरजन वहाँ जमा हो चुके थे।

इतने में उन्होंने देखा कि एक लड़का हाथ में छाता लिए आ रहा है। भीषण धूप, आसमान में बादलों का नामोनिशान नहीं और वह लड़का छाता लिए हुए उनकी तरफ बढ़ता आ रहा था। लोग हँसने लगे कि कैसा नादान है, जो छाता लिए आ रहा है। अगर छाता सिर पर ओढ़कर आता तो फिर भी ठीक था कि धूप से बचाव कर रहा है, लेकिन ये तो छाता बंद करके हाथ में लिए हुए था।

वह लड़का अब उनके पास पहुँच गया। लोग अभी तक मूर्ख समझकर उसकी मजाक ही उड़ा रहे थे, लेकिन राजा ने उस लड़के को पास बुलाकर गंभीरता से पूछा– ''तुम यह छाता क्यों लाए हो?''

लड़के ने सरलता से प्रत्युत्तर में सवाल कर दिया– ''क्या आप छाता नहीं लाए हो?'' सभी ने एक स्वर में कहा– ''नहीं। लाने की आवश्यकता भी नहीं है।'' लड़के ने कहा– ''फिर आप वापिस घर कैसे जाओगे? बरसात में भीगते-भीगते जाओगे?''

सभी लोग एक साथ हँसते हुए कहने लगे– ''तेज धूप, बादलों का दूर-दूर तक कहीं नामोनिशान नहीं तो कैसी बारिश? बड़ा नादान है।''

लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा– ''आप यहाँ किस

प्रयोजन से आए हैं?''

सभी ने कहा- ''बरसात के लिए इंद्र देवता को मनाने, उनसे प्रार्थना करने आए हैं।''

लड़का- ''क्या आप मानते हैं कि यह सब कर लेने से इंद्र देवता प्रसन्न हो जाएँगे और बरसात हो जाएगी।''

सभी- ''हाँ, हो जाएगी।''

लड़का- ''विश्वास है?''

सभी- ''विश्वास है तभी तो हम यह सब कुछ कर रहे हैं।''

लड़का- ''विश्वास अगर दृढ़ होता, पूर्ण श्रद्धा होती तो आप भी मेरी तरह छाता लेकर आते। आप कोई भी छाता नहीं लाए इसका मतलब अभी तक आपको इसके प्रति पूरी श्रद्धा नहीं है। मुझे विश्वास है, मेरी श्रद्धा है इसलिए मैं छाता लाया हूँ। आप नहीं लाए यानी आपकी अभी तक पूरी श्रद्धा नहीं है।''

एक छोटे से बालक की श्रद्धा ने सभी को निरुत्तर कर दिया। कैसी श्रद्धा थी उसकी!

जिनके प्रति श्रद्धा हो, उनके कथन को, उनके वचनों को बिना किसी शंका के स्वीकार कर लेना सच्ची श्रद्धा है। शंका एवं श्रद्धा दोनों एक-दूसरे के विपरीत हैं। जहाँ शंका है, वहाँ श्रद्धा नहीं होगी और जहाँ श्रद्धा है वहाँ शंका नहीं चाहिए। वक्ता, व्याख्याता के वचन को उसी अनुसार स्वीकार कर लेना श्रद्धा है, उसे समझ लेना प्रतीति है और उस अनुसार आचरण करना रुचि है।

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के बचपन का प्रसंग है। उन्हें धर्म के प्रति जरा भी श्रद्धा नहीं थी। यहाँ तक कि माता जी शृंगार देवी सामायिक करतीं तो वह भी बालक नाना को पसंद नहीं था। बाल्यावस्था से तरुणावस्था की ओर बढ़ते हुए बालक नाना ने मुनि चौथमल जी द्वारा छठे आरे पर फरमाया गया प्रवचन बड़े ही ध्यान से सुना। हालांकि वर्तमान की एवं छठे आरे की भावी स्थितियों में बड़ा अंतर होने से उस पर विश्वास हो जाना सहज तो नहीं था, लेकिन अब उनके मन में श्रद्धा उत्पन्न हो चुकी थी। विश्वास के बिना श्रद्धा का जागरण असंभव है। अत: अब उन वचनों को सुनकर पूर्ण विश्वास कर लिया। अब एक दृढ़ श्रद्धा का प्रस्फुटन हो चुका था। अब उस पर चिंतन-मनन शुरू हुआ और उसे अच्छी तरह से समझ भी लिया यानी श्रद्धा से अब प्रतीति भी उत्पन्न हो गई। सुनने और समझने रूपी दो पड़ाव पार कर चुके थे। अब सिर्फ एक ही पड़ाव शेष था- जो कुछ सुना और समझा था उस पर आचरण करना।

अब उसी अनुसार आचरण करने की भावना भी मन में बन गई यानी रुचि उत्पन्न हो गई। श्रद्धा, प्रतीति एवं रुचि, इन तीनों का त्रिवेणी संगम बन चुका था। इससे पहले तो श्रद्धा भी नहीं थी, लेकिन यह सब कुछ जो हुआ वह श्रद्धा का ही परिणाम था। इसीलिए कहा गया है - **'सद्धा परम दुल्लहा'**।

ऐसी ही श्रद्धा का एक ताजा प्रसंग 22 जनवरी 2024 का है। एक तरफ अयोध्या में राम मंदिर के उत्सव में पूरा देश रंगा हुआ था। हर तरफ एक ही भजन **'मेरी झोंपड़ी के भाग आज खुल जाएँगे राम आएँगे'** की पंक्तियाँ गूँज रही थी, दूसरी ओर पूरा जावद ही राममय हो चुका था। श्रद्धा, प्रतीति, रुचि इन तीनों का बेजोड़ संगम प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था। एक नहीं, दस मुमुक्षु भाई-बहिन आचार्य भगवन् के समक्ष खड़े थे। बिना श्रद्धा के ऐसा प्रसंग कल्पना से बाहर की बात है। श्रद्धा भी कोई सामान्य नहीं, जो कुछ जिनवाणी उन्होंने सुनी थी उस पर पूर्ण विश्वास किया, चिंतन-मनन किया, उसे समझा। आज उन सबसे ऊपर उसी अनुसार आचरण करने के लिए तत्पर थे गुरुचरणों में।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि झोंपड़ी में राम आएँ या नहीं आएँ, लेकिन खोपड़ी में राम अवश्य आने चाहिए। खोपड़ी यानी मन में, हृदय में, दिमाग में। कितनी गहन बात फरमा दी मुनिश्री ने। राम पहले खोपड़ी में आएँगे तो बाद में झोंपड़ी में आएँगे। झोंपड़ी में नहीं भी आएँ, लेकिन खोपड़ी में आ गए तो निहाल हो जाएँगे।

शबरी की झोंपड़ी में तो राम आए ही थे, लेकिन उससे पहले तो उसकी खोपड़ी में राम आ चुके थे। अगर राम को झोंपड़ी में ही आना होता तो शबरी की झोंपड़ी से पहले राम के मार्ग में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों की झोंपड़ियाँ थी, जो शबरी की झोंपड़ी से ज्यादा अच्छी व स्वच्छ थी। शबरी अपनी झोंपड़ी में साफ-सफाई करती या नहीं भी करती, लेकिन उन ऋषि-मुनियों की झोंपड़ियों के बाहर आँगन को स्वच्छ अवश्य करती थी।

शबरी की श्रद्धा झोंपड़ी की न सही, उसकी खोपड़ी को अवश्य ही स्वच्छ कर चुकी थी। ऋषि-मुनि तो राम का अपनी झोंपड़ी में इंतजार लगाए बैठे थे, खोपड़ी में नहीं। शबरी की झोंपड़ी में आने से पहले तो राम उसकी खोपड़ी में आ ही चुके थे, तभी तो उसने राम के लिए बेर एकत्र करके रखे थे।

जावद में आचार्य भगवन् ने दस मुमुक्षुओं को संयम प्रदान कर उनको राममय बना दिया। वह प्रसंग अविस्मरणीय, ऐतिहासिक बन गया। यह उन भव्यात्माओं की श्रद्धा ही नहीं अपितु महत्तम श्रद्धा थी, जिससे उन्होंने अपने आपको गुरुचरणों में समर्पित कर दिया। श्रद्धा होनी चाहिए देव के प्रति, गुरु के प्रति, धर्म के प्रति। गुरु के प्रति जैसी श्रद्धा होनी चाहिए, वैसी ही श्रद्धा उनकी आज्ञा, उनके वचनों पर भी होनी चाहिए। दो प्रसंगों का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ, जिनसे गुरुवचनों के प्रति हमारी श्रद्धा का आकलन कर सकते हैं कि हमारी श्रद्धा महत्तम श्रद्धा की श्रेणी में आती है या नहीं।

प्रथम प्रसंग : आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का वर्ष 2007 का चातुर्मास रायपुर में था। मुंबई से हम 7-8 मित्र परिवार के लगभग 25 सदस्यों सहित दर्शनार्थ गए। वापसी के लिए रायपुर से मुंबई की ट्रेन सुबह लगभग 11 बजे थी। अत: हमें प्रवचन पूर्ण होने से पूर्व ही निकलना था। 10 बजते ही हम एक-एक करके खड़े होकर निकलने लगे, जिससे प्रवचन में सभी को व्यवधान होना ही था। पूज्य आचार्यश्री जी की दृष्टि हमारे पर पड़ी तो बीच प्रवचन से जाने का कारण पूछा। हमने निवेदन किया कि भगवन्! ट्रेन का समय हो रहा है। भगवन् ने फरमाया- ''ट्रेन जरूरी है या प्रवचन?'' सभी श्रोता बोले- ''प्रवचन जरूरी है।'' भगवन् ने पुन: फरमाया- ''प्रवचन जरूरी है तो ट्रेन के लिए प्रवचन क्यों छोड़ना? प्रवचन भी छोड़ दिया और अगर ट्रेन लेट हो गई तो क्या होगा? फिर न प्रवचन मिला और न ही ट्रेन।'' स्टेशन पहुँचने पर पता चला कि हम जिस ट्रेन में सफर करने वाले थे वह ट्रेन अनिश्चितकालीन देरी से चल रही थी। इसे महत्तम श्रद्धा नहीं कह सकते। प्रसंग लगभग 17 वर्ष पहले का है, लेकिन अभी तक वैसा का वैसा स्मृति में संजोया हुआ है। ऐसे प्रसंग हमारी श्रद्धा को वर्धित करते हैं।

दूसरा प्रसंग : आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. का संवत् 1951 का चातुर्मास छोटीसादड़ी में था। वहाँ के एक मूर्तिपूजक श्रावक थे नाथूलाल जी गोदावत। पूज्य आचार्यश्री जी गोदावत जी की हवेली के पास ही उनके ही मकान में विराजमान थे। गोदावत जी अकसर पूज्यश्री के दर्शन-सेवा हेतु आते रहते थे।

एक बार व्यापार के सिलसिले में गोदावत जी को मुंबई जाना था। उन्होंने व्यापारिक उद्देश्य से कुछ सामान पहले ही मुंबई भेज दिया और स्वयं मुंबई जाने से पूर्व आचार्यश्री जी से मंगलपाठ सुनने हेतु पहुँचे। आचार्यश्री जी ने फरमाया कि ''अभी तो चातुर्मास चल रहा है तो धर्म-ध्यान करो।'' आचार्यश्री जी के वचनों को आदेश मानकर गोदावत जी ने अपना कार्यक्रम स्थगित कर दिया। इसी बीच मुंबई भेजे गए सामान के भावों में वृद्धि हो गई। दीपावली पश्चात् वे पुन: मुंबई जाने के लिए आचार्यश्री जी से मंगलपाठ श्रवण करने पहुँचे। आचार्यश्री जी ने फरमाया- ''अब तो चातुर्मास के कुछ ही दिन शेष हैं। हमारे विहार करने तक तो धर्म लाभ लेवें।''

गोदावत जी की श्रद्धा साधारण नहीं अपितु महत्तम श्रद्धा थी। आपने फिर से पूज्यश्री के वचनों को शिरोधार्य कर लिया। चातुर्मास समापन के साथ ही पूज्यश्री का विहार होने पर ही वे मुंबई गए। तब तक भाव में लगभग 80 गुना वृद्धि हो चुकी थी। इतना भारी मुनाफा हुआ जिसकी आशा तो क्या कल्पना तक नहीं की थी। यह था उनकी श्रद्धा का सुपरिणाम।

यह चर्चा गोदावत जी को हुए आर्थिक लाभ की दृष्टि से नहीं अपितु उनकी परम दुर्लभ श्रद्धा के दृष्टिकोण से की गई है। यदि दोनों प्रसंगों का तुलनात्मक विश्लेषण करता हूँ तो पाता हूँ कि मेरी श्रद्धा अल्पतम श्रेणी की कही जा सकती है, जबकि गोदावत जी की श्रद्धा महत्तम श्रेणी की श्रद्धा है।

महत्तम महोत्सव का महत्तम शिखर वर्ष प्रवाहमान है। आवश्यकता है आचार्य भगवन् के इशारों पर, उनके वचनों पर, उनके शब्दों पर, उनके आदेशों पर चलते रहने की। अपनी श्रद्धा बढ़ाते रहिए ताकि हमारी वह भी महत्तम श्रद्धा बन सके।

संस्कार सौरभ

नमो आयरियाणं और महत्तम श्रद्धा

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

न - नष्ट हो
मो - मोहनीय कर्म
आ - आराधना करें
य - यति धर्म की
रि - रिक्त बनें कर्मों से
या - याद करें गुरु को
णं - णमन हो भावों से
औ - औंकार के बाद से
र - रमण करें स्वभाव में
म - महान लक्ष्य का ध्येय हो
ह - हरण करें चंचल वृत्तियों का
त्त - तन्मय बनें धर्म कार्य में
म - मन की धारा बहे शुभ भावों में
श्र - श्रवण करें जिनवाणी को
द्धा - धारण कर हृदय में ध्येय हो सिद्ध बनने का

आचार्य संघ के सिरमौर होते हैं। उनके प्रति हमारी श्रद्धा परम पवित्र, पावन हो। श्वास की हर धड़कन में गुरुचरणों में समर्पण हो। हमारा हर कदम शुभ संकल्प का सर्जन एवं भावों की अभिवृद्धि करे। हर कार्य में महत्तम श्रद्धा की सुगंधित समीर चहुँओर बिखेरे। धरती का कण-कण पावन बने। सूर्य की आभा जग को प्रकाशित करती है। गुरु की महत्तम श्रद्धा हम सबका हृदय प्रकाशित करे। जन्म-मरण की भित्ति का ध्वंस हो और वैर-विरोध, ईर्ष्या का मनोमालिन्य दूर हटे। दया, क्षमा, शांति एवं मैत्रीभाव के सुमन खिलकर महत्तम श्रद्धा का पावन दीप जले। बहुमूल्य जीवन में छूपे अमूल्य श्रद्धा के रत्न को हम प्राप्त करें। मन का एक विचित्र नियम है कि जो जितना दूर है वह उतना ही सुहावना लगता है और जो जितना पास है वह उतना ही उपेक्षित लगता है। जैसे कोई चीज आँख के एकदम नजदीक हो वह दिखाई नहीं देती और दूर है वह आँखें फौरन देख लेती हैं। मन की इस विचित्रता के कारण आज श्रद्धा कमजोर हो जीवन से माधुर्यता का संगीत समाप्त हो रहा है। श्रद्धा हृदय की आँख है। हृदय की आँख जब खुल जाती है तब बुद्धि शांत हो जाती है। जहाँ सोच-विचार और तर्क को कोई स्थान नहीं मिलता उस अवस्था का नाम श्रद्धा है।

समुद्र में जब तूफान हो और हमारी नौका डगमगा रही हो तो तब श्रद्धा किनारों की बात करती है। जो नहीं देखा, नहीं सुना उस पर भी भरोसा करना श्रद्धा सिखाती है। श्रद्धा तो किसान की तरह होनी चाहिए। जैसे किसान बीज बोता है, किंतु उसे नहीं पता कि बीज पनपेंगे या नहीं, बारिश होगी या नहीं या बीज सड़ भी सकता है और कभी जल भी सकता है। फिर भी किसान बीज बोता है। श्रद्धा यानी अनजान में उतरने का साहस। समुद्र में गोता लगाने पर भी यदि मोती हाथ न लगे तो यह मत मानो कि समुद्र में मोती नहीं है, बल्कि यह सोचो कि बार-बार गोते लगाने का साहस अपेक्षित है। यह साहस श्रद्धा से ही जागता है। श्रद्धा का सीधा संबंध हमारे मन की

दृढ़ता के साथ है। अत: श्रद्धालु कभी कमजोर हो ही नहीं सकता।

श्रद्धा जीवन का हार है,
श्रद्धा मोक्ष का द्वार है।
श्रद्धा से आराधना जो हैं करते,
उनका होता बेड़ा पार है।।

जीवन बहुत सुंदर है। हमें इसे और सुंदर बनाना है। सुंदरता आएगी सकारात्मक सोच से महत्तम भाव रखने से दुनिया में कोई उतना अमीर नहीं होता कि वो अपना गुजरा हुआ कल खरीद सके और कोई इतना गरीब भी नहीं होता कि वह अपना आने वाला कल न संवार सके।

बस जरूरत है सम्यक् प्रयत्न की, पुरुषार्थ की। जिनकी आँखो में मृत्यु की छाया है उनका नजरिया नकारात्मक है। जिनकी आँखों में सदा जीवन का सपना है, महत्तम श्रद्धा की डोर है, वे श्रद्धा के स्वामी हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए हम स्वयं पर विश्वास रखें, आशा के गीत गुनगुनाएँ, श्रद्धा के वैभव के स्वामी बनें। आत्मविश्वास एवं श्रद्धा की बदौलत बड़े-बड़े पर्वत भी बाँधे जा सकते हैं। हम स्वयं को चट्टान की तरह बनाएँ, जिसे बाधाओं के झोंके विचलित न कर पाएँ। एक पेड़ से माचिस की लाखों तीलियाँ बनती हैं, लेकिन एक तीली लाखों पेड़ जला सकती है। इसी प्रकार हमारा एक हताशा-निराशा भरा विचार हमारे हजारों सपनों को जला सकता है। श्रद्धा से ही जीवन की शोभा बनती है। जीवन में आने वाली हर विपरीतता पर जो मुस्कान और माधुर्य से भरा हुआ रहता है वह जीवन और जगत् के मंदिर का अखंड दीप बनता है। जैसे आचार्य श्री रामेश की जीवन ज्योति से सकल संघ रोशन हो रहा है। निश्चय ही ऊँचा उड़ने की कोशिश करनी चाहिए। उड़ न पाएँ तो दौड़ने की कोशिश करनी चाहिए, दौड़ न पाएँ तो चलने की कोशिश करनी चाहिए और यदि चलना भी मुमकिन न हो तो सरकने की तो कोशिश करनी ही चाहिए। क्योंकि सफलता उन्हीं के हाथ लगती है जो उसे पाने के लिए लगातार कोशिश करते हैं। यह लगातार कोशिश ही सफलता की कुँजी है। श्रद्धा उस उद्देश्य को देखती है जहाँ श्रद्धेय के अलावा कुछ और होता ही नहीं है।

सागर एक है लहरें अनेक हैं,
प्रभु एक हैं पंथ अनेक हैं।
झंझटों के घेरे ने मन को बींधा है,
जो इनसे पार गया वही प्रभु (गुरु) का बंदा है।।

भक्ति रस

फुलवारी

-कांता बैद, गाजियाबाद

राम तेरी फुलवारी में
फूल खिले लाल, पीले, नीले।
चम्पाई, सुनहरी मनभावन,
सुरभि से हो रही चहुंदिशा पावन।।
मन मेरा भी डोला,
तब स्वयं को टटोला।
मैं भी इस बगिया में खिल जाऊँ,
मनुज जन्म सफल बनाऊँ।।
राम का सान्निध्य पाऊँ,
अपने अंतस् में ज्योत जलाऊँ।
मन मेरा बोला,
करनी होगी स्वयं की समीक्षा,
देनी होगी कठिन परीक्षा।।
दृढ़ निश्चय कर,
अपना मार्ग सुनिश्चित कर।
बढ़ चल बढ़ चल,
राम की राह पर बढ़ चल।।
फूल तो खिलकर रहेगा,
मंजिल को पाकर रहेगा।।

गुरुचरण विहार

तप संयम की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।

युग निर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु नेहा जी राखेचा, मुमुक्षु नेहा जी कांकरिया, मुमुक्षु चहेती जी मूणत की जैन भागवती दीक्षा संपन्न

नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनेहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनैना श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा. के नाम से नवीन संबोधन

निकुंभ में नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा में उमड़ा जनसैलाब

"सरलता से समाधि, समाधि से सिद्धि - आचार्य श्री रामेश

दुःखों से दूर न भागें - उपाध्याय प्रवर"

निम्बाहेड़ा, लसड़ावन, नन्नाणा, निकुंभ।

युगनिर्माता राम गुरु हुए अवतारी, उत्तम पुरुषों की बात है न्यारी।
शुद्धाचार का बिगुल बजाया, चौथे आरे की झलक दिखलाई।।

जिनके उत्कृष्ट संयम की गूँज देश-विदेश में है, ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रान्ति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा मेवाड़ क्षेत्र में अभूतपूर्व धर्म जागरणा कर रहे हैं। महापुरुषों के पावन दर्शन एवं प्रेरणादायी अमृत प्रवचन श्रवण कर जैन-जैनेतर जनता आध्यात्मिक आलोक से आलोकित हो रही है। निम्बाहेड़ा में 17 फरवरी के लिए दो दीक्षाएँ घोषित

थीं। इनके साथ ही एक तत्काल दीक्षा मुमुक्षु नेहा जी कांकरिया, चेन्नई के प्रसंग से जनता आश्चर्यचकित हो आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के अतिशय का बखान कर रही थी। चार नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा का प्रसंग प्राप्त कर निकुंभ संघ निहाल हो गया। मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में आचार्यदेव एवं उपाध्याय प्रवर का पावन विहार एवं प्रवास जारी है। सामायिक, स्वाध्याय, संवर, प्रतिक्रमण, ज्ञानचर्चा में श्रावक-श्राविकाएँ बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। **'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'** कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूलों में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण का क्रम जारी है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है।

सुखी बनने के लिए स्वीकारें सत्य, संयम

16 फरवरी 2024, निम्बाहेड़ा प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना समता भवन में आयोजित की गई, जिसमें पंच परमेष्ठी एवं गुरुभक्ति भजन से दिन का शुभारंभ हुआ।

राजेंद्र सूरी ज्ञान मंदिर में आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनसमूह को अपनी पावन-पवित्र अमृतमय वाणी में भगवान महावीर की अमृतदेशना से पावन करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने **'धम्म सद्धा चालीसा'** की पंक्तियों के साथ फरमाया-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''हमें भी मन रूपी चिंतामणि रत्न मिला है। मन म्हारो चिंतामणि। अनंतानंत जीव बिना मन के हैं। इस चिंतामणि रत्न का कितना उपयोग हम कर रहे हैं? हम सोचते हैं कि दूसरों का बुरा हो जाए, जबकि होना यह चाहिए कि मेरा भला हो ना हो, लेकिन दूसरों का भला होना चाहिए। सम्यग्दृष्टि जीव भावना भाएगा कि सारे लोक को शांति, समाधि प्राप्त हो। दिन-रात यही भावना भाएँ कि समस्त संसार सुखी हों। सत्य, संयम, शील का आचार घर-घर पालन हो। असत्य, असंयम, अशील आदि कारणों से जीव दु:खी होता है। सुखी बनने के लिए सत्य को स्वीकार करना होगा। अपने जीवन को संयमित बनाना होगा। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि शील के अंतर्गत आते हैं। त्याग, नियम, मर्यादा शील के भेद हैं। सुखी बनना चाहते हैं तो जीवन में मर्यादा जरूरी है। छोटी-सी मर्यादा जीवन को सुरक्षित करने वाली होती है। हमें जिनेश्वर देव का ऐसा महान धर्म मिला है, जिससे नर से नारायण बन सकते हैं। यदि हम अपने आपको सत्य धर्म पर अटल रखेंगे तो हम निहाल हो जाएँगे। जब तक हमारी भौतिक कामनाएँ, अपेक्षाएँ तीव्र बनी रहेंगी तब तक धर्म का पराग नहीं मिलेगा। दीक्षार्थिनी बहिनें समस्त सांसारिक सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर संयम पथ पर अग्रसर हो रही हैं।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकरों ने संयम मार्ग को श्रेष्ठ मार्ग बताया है। संयम शतक में संयम ग्रहण कर जीवन सार्थक करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली, जो गुरु पाए राम से'** मंगल गान फरमाया।

मुमुक्षु चहेती जी मूणत ने अपने भावोद्गार में कहा कि अधिकांश जन पूछते हैं कि वैराग्य कैसे आया? मेहंदी जब सूखती है, तभी रंग आता है। मोहासक्ति आत्मा से छूटती है तभी वैराग्य भाव जाग्रत होता है। मेहंदी हवाओं के

पुद्गल से सूखती है, वैसे ही आचार्य भगवन् की कृपा से मोहासक्ति का रंग सूखकर वैराग्य का रंग चढ़ने लगता है। छहकाय के जीवों को रक्षा प्रदान करने के भाव हैं। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से मैं संयम ग्रहण करने जा रही हूँ। अंतिम श्वास तक वीरता से संयम पालन करूँ, यही शक्ति भगवन् से चाहती हूँ।

संघ मंत्री ने दीक्षार्थी परिवार के अनुपम त्याग की सराहना की। सभा में अधिकांश जनों ने दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 17 फरवरी 2024 को बड़े स्नान त्याग का प्रत्याख्यान लिया। **'लोच में क्या सोच'** के अंतर्गत कुछ भाइयों ने काया-क्लेश तप किया। भीखमचंद जी दुग्गड़-शिरपुर गत साढ़े पाँच वर्षों से लगातार एकासन कर रहे हैं। आपने और एक वर्ष के लिए प्रत्याख्यान ग्रहण किए। दीक्षार्थी परिवार, शिरपुर एवं रतलाम सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहिन सभा में उपस्थित थे। 18 संत एवं 83 साध्वीवर्याओं के विशेष सान्निध्य एवं दर्शन का लाभ श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ।

दीक्षार्थिनी बहिनों का भव्य वरघोड़ा व आत्मीय अभिनंदन
जो मोह-माया से दूर होते हैं, वे मोक्ष के करीब होते हैं

भौतिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर कठोर संयम साधना के मार्ग पर आगे कदम बढ़ाने वाली 30 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री नेहा जी राखेचा** सुपुत्री नवनीत जी-ज्योति जी राखेचा, शिरपुर, 22 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री चहेती जी मूणत** सुपुत्री अभिषेक जी-हीना जी मूणत, रतलाम का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ, सकल जैन समाज, निम्बाहेड़ा, आरुग्गबोहिलाभं सहित अनेक संघों व संस्थाओं द्वारा एक भव्य समारोह में आत्मीय बहुमान किया गया। मंच पर मुमुक्षु बहिनें, वीर माता-पिता एवं परिजनों के साथ संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी, मंत्री जी, स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्री आदि सुशोभित थे। उपस्थित प्रत्येक जन मुमुक्षु बहिनों के आदर्श त्याग की सराहना करते हुए स्वागत हेतु उत्सुक नजर आ रहा था।

सर्वप्रथम समता महिला मंडल ने स्वागत गीत व मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्वागत उद्बोधन देते हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष जी ने कहा कि महापुरुषों की कृपा से हमारे संघ को जैन भागवती दीक्षा के प्रसंग का स्वर्णिम अवसर पुन: प्राप्त हुआ है।

अभिनंदन-पत्र के वाचन पश्चात् संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि निम्बाहेड़ा, रतलाम और शिरपुर की धरा पुण्यशाली है, जहाँ से संयम शतक में दीक्षा का पुण्य अवसर प्राप्त हो रहा है। संघ समर्पणा अतुलनीय है। मुमुक्षु बहिनों नेहा जी व चहेती जी को संयम भावों हेतु बहुत-बहुत बधाई। सिद्धत्व के पथ पर आगे बढ़ाने में परिवारजनों ने जो कर्मों की निर्जरा की है उसके लिए शब्द नहीं हैं। दीक्षा अवसर के सुंदर आयोजन के लिए निम्बाहेड़ा संघ को बधाई।

मुमुक्षु बहिन नेहा जी राखेचा ने अपने भावोद्गार में कहा कि यदि भगवान का शासन नहीं होता तो हम मोह-माया, राग-द्वेष में फँसे रहते। मात्र संयम का गुणगान ना करें अपितु संयम मार्ग में आगे बढ़ने हेतु प्रयास करें। मेरे संयम लेने के बाद अधिकाधिक धर्माराधना करें।

मुमुक्षु बहिन चहेती जी मूणत ने कहा कि संसार छोड़ने योग्य है और संयम ग्रहण करने योग्य है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं परिजनों के आशीर्वाद से वीतराग पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। यह अभिनंदन हमारा नहीं अपितु त्याग, संयम व महापुरुषों का अभिनंदन है। संघ मंत्री ने सभा का संयोजन करते हुए विराट दीक्षा महोत्सव में

सभी के सहयोग के लिए अहोभाव व्यक्त किए।

महापुरुषों के अतिशय व मुमुक्षु बहिनों का आत्मीय परिचय महेश नाहटा ने दिया। मुमुक्षु बहिनों एवं परिजनों का भावभीना आत्मीय बहुमान तिलक, माला, शॉल व अभिनंदन-पत्र भेंट कर श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, आरुग्गबोहिलाभं, स्थानीय संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, तेरापंथ सभा, दिगम्बर जैन समाज, सकल जैन समाज, श्रमण संघ, सकल जैन युवा संगठन, तपागच्छ संघ, व्यापारी संघ, जैन सोशल ग्रुप सहित मालवा-मेवाड़ व देश के अनेक संघों व संस्थाओं के उपस्थित पदाधिकारियों व संघ प्रमुखों द्वारा किया गया। जयवंता-जयवंता व जय-जयकारों से संपूर्ण वातावरण गूँज रहा था।

अभिनंदन से पूर्व भव्य वरघोड़ा राजेंद्र सूरी ज्ञान मंदिर से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए पुन: ज्ञान मंदिर पहुँचा। आकर्षक रथ में मुमुक्षु बहिनों के साथ वीर परिजन सवार होकर सभी का अभिवादन हाथ जोड़कर स्वीकार कर रहे थे। संपूर्ण मार्ग आचार्य श्री नानेश-रामेश एवं संयम व मुमुक्षु बहिनों के जयकारों से गूँज उठा। मार्ग के दोनों ओर लोगों ने मुमुक्षु बहिनों के आदर्श त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए शुभेच्छाएँ व्यक्त की। हर जाति व वर्ग के लोगों ने जैन धर्म के आदर्शों को जानकर इसे श्रेष्ठ बताया।

ओघा बंधाई व केसर छंटाई का कार्यक्रम भी संपन्न हुआ। साधु जीवन के उपकरणों को प्राप्त कर दोनों मुमुक्षु बहिनें अत्यंत खुश नजर आईं। रात्रि में समता महिला मंडल, निम्बाहेड़ा द्वारा सांस्कृतिक व चौबीसी भक्ति आदि संयम से ओत-प्रोत कार्यक्रम आयोजित किया गया।

परम गुरुभक्त सुभाष जी दलाल, खाचरौद के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से भव्य भागवती दीक्षाएँ संपन्न

दीक्षा आत्मा से महात्मा व महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है

17 फरवरी 2024, कृषि उपज मंडी, निम्बाहेड़ा। संयम साधना के सजग प्रहरी, अलौकिक महापुरुष आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु बहिनों नेहा जी राखेचा, नेहा जी कांकरिया एवं चहेती जी मूणत की जैन भागवती दीक्षा सोल्लास संपन्न हुई। इनमें से दो दीक्षाएँ पूर्व में घोषित थी तथा नेहा जी कांकरिया की गुप्त दीक्षा अत्यंत सादगीपूर्ण संपन्न हुई। अचानक गुप्त दीक्षा के बारे में जानकर हर कोई महापुरुषों के अतिशय को नमन करने लगा। इस अवसर पर 20 संत एवं 90 महासतीवर्याओं के सान्निध्य में हजारों की जनमेदिनी दीक्षा साक्षी बनने हेतु उपस्थित थी। विशाल समवसरण का अद्‌भुत नजारा देखकर जनता हर्षित व नतमस्तक हो रही थी।

धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि *''जो परमावस्था को प्राप्त कर लेते हैं, वे परमात्मा होते हैं। आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है दीक्षा। आमजन संसारी जीव आत्मा हैं और संयम पथ पर अग्रसर होने वाले महात्मा बन जाते हैं। उनके चरण परमात्मा की डगर पर बढ़ते चले जाते हैं। 05 फरवरी को एक दीक्षा संपन्न हुई और आज 17 फरवरी को 3 भव्यात्माएँ संयम पथ अंगीकार करने जा रही है। हमें यह विचार करना चाहिए कि कोई किसी का नहीं है। इस संसार में कोई भी मेरा नहीं है। कोई मुझे बचाने वाला नहीं है। यह जीव अकेला आया है और अकेला ही जाएगा। कोई साथ देने वाला नहीं है। मरने के बाद अंतिम संस्कार की जल्दी रहती है। परिवार वाले सोचते हैं कि कैसे जल्दी से*

जल्दी अंतिम संस्कार किया जाए। यह संसार का वास्तविक रूप है। ऐसा तो होता आया है। कुछ विरली आत्माएँ होती हैं जो भव परंपरा को मिटाने के लिए अग्रसर हो पाती है। साधु जीवन स्वीकार करने के बाद हमारी दृष्टि अपने आप पर केंद्रित रहनी चाहिए। भीतर के दुर्गुणों को दूर करना है और सद्गुणों को विकसित करना है। राग, द्वेष, ईर्ष्या व कषायों से दूर हटना है। सभी को यह भावना भानी चाहिए कि वह दिन धन्य होगा, जिस दिन 'हे प्रभु मेरी एक पुकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार'। 'दीक्षा का यह मेला है, बड़ा अलबेला है'। आज यह समझना है कि यह अनुभूति हमारे भीतर होनी चाहिए। हमने संसार में कितने वर्ष गँवाए? जो पाया उसको एक दिन छोड़ना ही पड़ेगा। हमारा धर्म-कर्म ही हमारे साथ जाने वाला है। मोह कम होगा तो हमारा भव श्रेष्ठ बनेगा।''

तीनों मुमुक्षु बहिनों ने इस भव व पिछले भवों में जाने-अनजाने में हुए अपराधों के लिए सभी से क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन् ने 11 बजकर 10 मिनट पर दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए तीनों मुमुक्षु बहिनों से जब दीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा तो तीनों बहिनों ने 'तह त्ति' कहकर स्वीकृति प्रदान की। फिर आचार्यदेव ने मुमुक्षु परिजनों, केंद्रीय व स्थानीय संघ पदाधिकारियों सहित उपस्थित जनसमुदाय से दीक्षा स्वीकृति के बारे में पूछा तो सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना करते हुए कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया। अनुमोदना पश्चात् आगे की दीक्षा विधि बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने पूरी करवाई। 11:20 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य योगों का त्याग करवाकर तीनों मुमुक्षु बहिनों को नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया।

उपाध्याय प्रवर ने नवीन नामकरण फरमाए कि **दीक्षा पश्चात् क्रमशः नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनेहा श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनैना श्री जी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा. के नाम से जानी जाएँगी।** पूरी सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय एवं जयवंता-जयवंता गीत से गुंजायमान हो उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. के करकमलों से पूर्ण हुआ।

05 एवं 17 फरवरी को दीक्षा ग्रहण करने वाली नवदीक्षिता साध्वियों की बड़ी दीक्षा हेतु निकुंभ संघ को स्वीकृति प्रदान की गई। चित्तौड़गढ़ में 10 से 26 मई 2024 तक 9 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित बालक-बालिकाओं के लिए **अभिमोक्षम् : पूर्णकालिक आवासीय शिविर** की घोषणा हुई।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री सौरभ मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा. एवं श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने **'वीतरागता की ओर बढ़ रहे यह चरण'** भाव गीत फरमाया।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने अपने उद्गार में **'निर्मल जल सा मन है जिनका'** भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संसार को बढ़ाने वाले नहीं अपितु संसार को घटाने वाले सपने देखें। राम गुरु संयमी जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। जहाँ शांति और समाधि है, वहाँ कोई समस्या नहीं है। संयम लेने से पूर्व संवर, पौषध से शुरुआत करें। कम से कम एक संवर व पौषध अवश्य करें। विनती-पत्र प्रिंटिंग वाला नहीं अपितु हाथ से लिखा हुआ ही स्वीकार्य होगा।

महत्तम दैनिक उपासना में 21 फरवरी 2024 से दिसंबर 2025 तक प्रतिदिन नौ नवकार, नौ लोगस्स, नौ णमोत्थु णं, नौ गुरु वंदना (तिक्खुत्तो के पाठ से) के साथ 'सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे' पाठ का उच्चारण करें एवं आराधना गुरुचरणों में अर्पित करें।

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कुछ प्राप्त करने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है। बहुत कुछ प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ छोड़ना पड़ता है। सब कुछ पाने के लिए सब कुछ छोड़ना पड़ता है। एक बार संयम का

आनंद जरूर लेवें।

साध्वी श्री मननप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने **'राम गुरु आए हैं, ज्ञान ज्योति लाए हैं'** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया'** गुरुभक्ति गीत व बधाई गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने ऐतिहासिक, अलौकिक दीक्षा प्रसंग से प्रेरणा लेने का निवदेन किया। दीक्षा में अंतराय नहीं देने एवं बारह माह संवर, पौषध का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी एवं मेवाड़, मालवा व देश के अनेक स्थानों के हजारों श्रद्धालुओं ने दीक्षा अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। निम्बाहेड़ा साधुमार्गी जैन संघ, महिला मंडल एवं समता युवा संघ सहित सकल जैन समाज की सेवाएँ सराहनीय रही।

आचार, विचार, व्यवहार और हमारा आलंबन शुद्ध हो
मुमुक्षु बहिन सुश्री सायली बाफना की दीक्षा 26 अप्रैल हेतु घोषित

18 फरवरी 2024। समता भवन में महत्तम समता शाखा के विराट आयोजन में श्रद्धालु भाई-बहिनों ने समता आराधना में भाग लिया। संघ मंत्री ने महत्तम शिखर की जानकारी दी। आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा में अपार जनमेदिनी आचार्यदेव के श्रीमुख से भगवान महावीर की अमृतवाणी सुनने को आतुर नजर आई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''आचार, विचार, व्यवहार और हमारा आलंबन शुद्ध होना चाहिए। पत्थर और लकड़ी से बनी नौकाओं में से हम लकड़ी की नौका में बैठना पसंद करेंगे, क्योंकि हमें भरोसा है कि लकड़ी की नौका से ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। वहीं हमारे जीवन की नैया को संसार रूपी सागर से पार लगाना है तो अहिंसा व संयम रूपी नाव में बैठना होगा। जीवन में अहिंसा, संयम और साधना रूपी नाव में छेद है तो हमारी नैया पार लगने वाली नहीं बनेगी। शरीर की सुरक्षा इसलिए हो कि आत्मसाधना कर सकें। आज व्यक्ति को पता नहीं कि उसे किस दिशा में जाना है। जीवन अनमोल है। मृत्यु का भरोसा नहीं और हमारी आकांक्षाओं का अंत नहीं है। इसलिए जो शुभ विचार हमारे मन में आएँ उन्हें तुरंत क्रियान्वित कर लेना है और अशुभ विचारों को टालते रहना है। त्याग-पच्चक्खाण से मन को मजबूत बनाते चले जाएँ। संवर, पौषध और तपस्या से मन स्थिर और शांत रहता है। धर्म की आराधना मात्र सामायिक करना नहीं है, अपितु कषायों को शांत करना व इच्छाओं को सीमित करना है।''*

आचार्य भगवन् ने जैसे ही **मुमुक्षु सुश्री सायली जी बाफना**, निफाड़ की दीक्षा **26 अप्रैल, 2024** के लिए उद्घोषणा की, संपूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र का सुंदर विवेचन किया। शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली, जो गुरु पाए राम से'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने **'ऐसा अवसर मिला है मिलेगा कहाँ'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

26 वर्षीय मुमुक्षु सायली जी बाफना ने अपने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए शीघ्र ही पावन चरणों में स्थान देने का निवेदन किया। नंदलाल जी बाफना ने अनुज्ञा-पत्र का पठन किया। वीर पिता विजय जी बाफना, वीर माता सुनीता जी बाफना, निफाड़ संघ के अध्यक्ष, महेश जी बाफना, सहित परिवार जनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया। जयवंता-जयवंता स्वर लहरियों से वातावरण गुंजायमान हो उठा।

एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, निम्बाहेड़ा द्वारा वीर परिजन अशोक जी कविता जी कांकरिया, चेन्नई/गोगेलाव तथा मुमुक्षु सायली जी बाफना, निफाड़ एवं परिजनों का आत्मीय स्वागत व अभिनंदन तिलक, माला, शॉल से किया गया।

मुमुक्षु सायली जी बाफना ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि आज मेरी वर्षों की संयम भावना साकार रूप लेने जा रही है। दोनों गुरुजनों एवं परिजनों के सहकार के लिए मैं सदैव अहसानमंद रहूँगी।

दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम महापुरुषों के सान्निध्य में हुए।

महत्तम दैनिक उपासना में 9 नवकार महामंत्र जाप, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं, 9 गुरु वंदना के साथ 'सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे' उच्चारित करने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहिनों ने लिया। अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

ग्राम बड़ोली माधोसिंह में मंगल प्रवेश

19 फरवरी, 2024। समता भवन, निम्बाहेड़ा से आचार्य भगवन् आदि ठाणा का विवेक सांड समता भवन, निम्बाहेड़ा में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। आचार्य भगवन् द्वारा मांगलिक फरमाने के पश्चात् संतवृंद का ग्राम बड़ोली माधोसिंह की ओर विहार हुआ। संपूर्ण मार्ग जय-जयकारों से गूँज रहा था। ग्राम पंचायत भवन में जयघोषों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। देशभर के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं, धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में ज्ञानचर्चा व आचार्यदेव के मुखारविंद से मंगलपाठ श्रवण का लाभ उपस्थित गुरुभक्तों को मिला।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 का मांगरोल में मंगल पदार्पण हुआ। शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का ग्राम बड़ोली माधोसिंह से लसड़ावन की दिशा में विहार हुआ। शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा., श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा समता भवन, निम्बाहेड़ा में धर्मप्रेमीजनों को भगवान महावीर की वाणी का अमृतपान करा रहे हैं।

साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 का गुरुचरणों में ग्राम बड़ोली माधोसिंह पधारना हुआ। सुश्राविका सिरे कँवर बाई बम्बोरिया, जावद के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। इस अवसर पर अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

राग-द्वेष को हटाते चलो

20 फरवरी, 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभुभक्ति के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् आदि ठाणा का ग्राम बड़ोली माधोसिंह से समता भवन, लसड़ावन में **'भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछें सुख और साता'**, **'जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'** आदि जयघोषों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

प्रवेश पश्चात् सामुदायिक भवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में ज्ञानपिपासु गुरुभक्तों के आत्मप्रदेशों में भगवान महावीर के पावन वाणी का सिंचन करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि *''राग-द्वेष को हटाते चलो, उड़ाते जाओ। यह कैसे होगा? यह होगा धर्म रूपी अग्नि पर तपने से। हमारा सबसे ज्यादा राग हमारे शरीर पर होता है। शरीर को जितना साता पहुँचाने का भाव रहेगा, उतना उस पर राग बढ़ेगा। चिकित्सा नहीं लेने से मोहनीय कर्म घटता है। मोहनीय कर्म घटने से राग-द्वेष घटता है, कषाय घटता है। श्वास कंट्रोल करने पर अशांति घटती है। जीवन में जितना धीमे व लंबा श्वास लेंगे, उतनी शांति बढ़ती है। जीवन में श्वास से राग-द्वेष आया यानी चंचलता आई। अत: श्वास धीरे लेना और धीरे छोड़ना चाहिए। सामायिक में हमारी स्थिरता बढ़े, धैर्यता बढ़े। सामायिक में स्थिर बैठें, शरीर को स्थिर करें, दीर्घ श्वास लेवें व दीर्घ ही छोड़ें। इससे स्थिरता बढ़ेगी और शुभ महसूस होगा।''*

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म, जिनवाणी श्रवण, जिनवाणी पर श्रद्धा एवं संयम में पुरुषार्थ दुर्लभ है। प्रवचन सुनने वाले तो बहुत हैं, पर प्रवचन भीतर में कितना उतरा इस पर आत्मचिंतन करें।

आचार्य भगवन् के आह्वान पर धर्म स्थानक में प्रतिदिन आकर सामायिक करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। महीने में दो बार प्रतिक्रमण करने का नियम महिलाओं एवं बालिकाओं ने लिया। लसड़ावन संघ मंत्री ने अधिकाधिक विराजने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

अहमदाबाद के राजस्थान स्थानकवासी जैन संघ एवं साधुमार्गी जैन संघ ने आगामी चातुर्मास हेतु विनती श्रीचरणों में अर्पित की। परम गुरुभक्त प्रेमचंद जी बोरूंदिया, ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति एवं संदेश प्राप्त किया।

साध्वी श्री निष्णांत श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि का गुरुचरणों में पधारना हुआ। स्कूलों में व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए।

सतखंडा में आयोजित धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''संसार में सुख और दु:ख दोनों होते हैं। हम सुख की कामना करते हैं और सुख भोगते हैं, किंतु दु:ख सहन नहीं करना चाहते हैं। हमारे तीर्थंकर भगवान अपार सुख-सुविधाएँ होते हुए भी उनको त्यागकर दु:खों का सामना करते हैं, दु:खों से दूर नहीं भागते अपितु उनको भोगते हैं। हम दु:खों को देखेंगे, सहन करेंगे तो दु:ख अपने आप दूर हो जाएँगे और हमें सुख की अनुभूति होगी।''**

दीक्षा का अवसर आने तक एक मिठाई का त्याग, माह में एक आयंबिल करने, धर्म स्थानक में प्रतिदिन आने के प्रत्याख्यान कई भाई-बहिनों ने लिए। उपाध्याय प्रवर के आगमन को परमसौभाग्य बताते हुए अधिक से अधिक विराजने की विनती स्थानीय संघ प्रमुखों ने प्रस्तुत की। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

आचार्य भगवन् के दीक्षा दिवस पर महत्तम शिखर वर्ष का आगाज

आप सुर-असुर के नाथ हैं, अनंत शक्तिमान हैं।
त्रियोग से नमन करो, ये धर्मदेव 'गुरु राम' हैं।।

21 फरवरी, 2024, सामुदायिक भवन, लसड़ावन। युगनिर्माता, युगपुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के सुवर्ण दीक्षा वर्ष शुभारंभ दिवस पर मंगलमय प्रार्थना श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने करवाई। नवकार

महामंत्र जाप एवं रामेश चालीसा का सामूहिक पाठ किया गया। रामेश प्रश्नमंच का आयोजन किया गया।

दूसरों की नहीं, स्वयं की करें समीक्षा

सामुदायिक भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्यदेव ने भक्तों के लिए आज के विशेष दिवस पर अपनी दिव्यदेशना में पावन अमृतवाणी का श्रवण कराते हुए फरमाया कि *''मनुष्य जन्म हमें चिंतामणि रत्न के रूप में मिला है। हम किसी का भला सोचते हैं या बुरा? अगर हम किसी का बुरा सोचते हैं तो हमारे जीवन में शांति नहीं आएगी। हम दूसरों का सोचते ही क्यों हैं? धर्म जिसके जीवन में है वह मनुष्य है अन्यथा वह पशु के समान है। मनुष्य का आचरण धर्ममय होना चाहिए। धर्म वह है जो हमारी रगों में खून की तरह दौड़े। धर्म अगर नहीं है तो बिना सींग और पूँछ के मनुष्य पशुवत् हैं। जीवन का कण-कण धर्म में गतिशील होना चाहिए। कहना सरल है, लेकिन करना कठिन है। अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना चाहिए। दूसरों की नहीं, हमें अपनी समीक्षा करनी चाहिए। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम जीवन है। मनुष्य जन्म से ही मोक्ष पाया जा सकता है। इसी से नर से नारायण और आत्मा से महात्मा व महात्मा से परमात्मा बना सकता है। मोक्ष जाने के लिए पुरुषार्थ की जरूरत होती है। सामायिक हो या न हो पर हम निंदा से दूर हो। जीवन शांत, प्रशांत, समाधि में रहें। भीतर की पकड़ को छोड़ना होगा। साधु जीवन एवं सरलता से ही मोक्ष के अधिकारी बन सकते हैं।''*

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने **'आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम तब उसे नाम दिया'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों के मात्र गुणगान नहीं करें, अपितु उनके गुणों को जीवन में प्रतिस्थापित करें। अपना जीवन सरल, सहज बनाएँ। आचार्य भगवन् के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाएँ।

साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जो वीर होते हैं वे ही वीर पथ को अपनाते हैं। आचार्य भगवन् आज के ही दिन दीक्षा लेकर स्व-पर कल्याण की साधना के साथ निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। आचार्य भगवन् के जीवन में कोई लाग-लपेट नहीं है। आपश्री जी का जीवन तो सरल व सहजता से परिपूर्ण है। आपश्री जी ने स्वप्न में भी अपने गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हम भी आचार्य भगवन् की आज्ञा-निर्देशों का पालन कर सच्ची गुरुभक्ति को अपना जीवन अंग बनाएँ।

साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् गुणों के भंडार हैं, अनुशासन प्रिय हैं। आपकी कथनी-करनी में एकरूपता है। गुरुवर के चरणों में मात्र जय-जयकारों से नहीं, धर्म-ध्यान, तप-त्याग की भेंट चढ़ाएँ। साध्वी श्री साधना श्री जी म.सा., साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा., साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'राम गुरुवर अद्भुत योगी, जाप जपो गुरु राम का'** एवं **'राम गुरु को देते हैं बधाई'** आदि भाव गीत प्रस्तुत किए।

संघ मंत्री ने गुरुभक्ति भजन द्वारा अपने भाव रखे। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। कई भाई-बहनों ने 36 वंदना, प्रतिदिन एक विगय का त्याग, एक घंटे मौन, माह में चार पक्की नवकारसी, एकासन तथा अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान लिए। **'लोच में क्या सोच'** में अनेक जनों ने काया-क्लेश तप किया। महत्तम दैनिक उपासना के आगाज के साथ ही अनेक भाई-बहिनों ने 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं, 9 गुरु वंदना सहित 'सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे' पाठ करने का संकल्प लिया।

आज के पावन प्रसंग पर भोपाल, जोधपुर, बालाघाट, उज्जैन, रायपुर, चेन्नई, निकुंभ, बड़ीसादड़ी, कंथारिया, आवरीमाता, मुंबई, उदयपुर, मंगलवाड़, भदेसर, सावा, जावद, नीमच, चित्तौड़गढ़, पुणे, बदनावर, बिनोता एवं

नन्नाणा आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने महत्तम शिखर के आगाज व गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। भदेसर से 8 किमी. पैदल चलकर अनेक भाई-बहिनों ने गुरुचरणों में उपस्थित हो विनती प्रस्तुत की।

साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। लसड़ावन साधुमार्गी जैन संघ के साथ जैनेतर जाट, दर्जी, वैरागी, सुथार, शर्मा परिवारों ने दर्शन-सेवा एवं प्रवचन का लाभ लिया।

हँसी-मजाक करने से बढ़ती है चंचलता

22 फरवरी, 2024, नन्नाणा। परम प्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का लसड़ावन से नन्नाणा में रामरतन जी जाट के आवास पर जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, युवा संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेक स्थानों से पधारे श्रद्धालुजनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम प्रतिक्रमण में बोलते हैं कि तीर्थंकर भगवान के चौंतीस अतिशय होते हैं। अतिशय का मतलब है विशेष अर्थात् जो अन्य चीजों से हटकर हो। आपश्री जी ने इन चौंतीस अतिशयों के विश्लेषण के साथ हँसी-मजाक से होने वाली हानियों- 1. चंचलता बढ़ती है। 2. आत्म-नियंत्रण कमजोर होता है। 3. सूक्ष्म मान (Ego) झलकता है। 4. दूसरे का अपमान संभव है। 5. एकाग्रता भंग होती है। 6. साधना में मन कम लगता है। 7. अच्छी बातों का अनादर होता है। 8. प्रमाद बढ़ता है। 9. बड़ों की अवज्ञा होती है। 10. समय का दुरुपयोग होता है आदि की समझाइश दी।

'सवाल आपके जवाब पूज्य म.सा. के' कार्यक्रम में जिज्ञासाओं का सुंदर समाधान किया गया। आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाया। महत्तम दैनिक उपासना के संकल्प कई भाई-बहनों ने लिए। जैन एवं जैनेतर जाट, ब्राह्मण, सुथार समाज के लोगों ने सेवाभक्ति का अनुपम लाभ लिया।

सुश्राविका पिस्ता कँवर जी धर्मपत्नी पारसमल जी खेतपालिया, ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। स्कूली बच्चों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प ग्रहण किए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर का सतखंडा से 17 किमी. विहार कर लसड़ावन में मंगल पदार्पण हुआ। दोपहर में श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने निरपराधी जीवों को नहीं मारने, वंदना विधि, सचित्त-अचित्त विवेक आदि का ज्ञान भाई-बहनों को कराया। श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर के हृदयस्पर्शी प्रवचनों से जनता लाभान्वित हो रही है।

निकुंभ में भव्य मंगल प्रवेश, श्रद्धा का सैलाब उमड़ा

23 फरवरी 2024, समता भवन, निकुंभ। आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का नन्नाणा से निकुंभ चौराहा होते हुए समता भवन, निकुंभ में जय-जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण विहार मार्ग में **'हम भक्तों के ये भगवान, जय गुरु नाना, जय गुरु राम'**, **'कथनी करनी एक समान, जय गुरु नाना, जय गुरु राम'**, **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'** आदि जयघोष नगर को जैन धर्म के रंग में रंग रहा था। अयोध्या में जैसे राम का पदार्पण हुआ, वैसी ही श्रद्धा व भक्ति रामनगरी निकुंभ में गुरु राम के पदार्पण पर दिखी।

समता भवन में आचार्य भगवन् में अपनी संक्षिप्त दिव्यदेशना में फरमाया कि *''आज यहाँ अकस्मात् आने से सोए हुए सब जाग गए। जितने समय तक चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिल रहा है तक तब तो अधिकाधिक धर्म*

आराधना एवं तप-त्याग करने का लक्ष्य रखें ही तत्पश्चात् भी इस लक्ष्य को छोड़ें नहीं।''

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण पश्चात् सभा विसर्जित हुई। दोपहर में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी एवं ज्ञानचर्चा आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

भौतिक सुख-सुविधाएँ नहीं हैं स्थायी

24 फरवरी, 2024। 'उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु' एवं **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी, युग-युग जीओ मेरे गुरु रामलाल जी'** स्वर लहरियों के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई।

विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ का सान्निध्य प्राप्त हुआ। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में भक्तों का जीवन पावन करते हुए फरमाया कि *''सुविधा मिलना एक बात है और शांति मिलना दूसरी बात। सुविधाएँ सदाकाल के लिए नहीं मिलती हैं। सुविधाएँ कुछ समय के लिए मिलती हैं। जब पलटा मारती है तो दुविधा बन जाती है। शांति का स्वरूप जानने के लिए मन की परीक्षा करें। शालिभद्र नाम सुना है? उनका जीवन इतना सुखमय था कि सूर्य किधर से उदय होता है उनको यह भी पता नहीं था। पूर्व का पुण्य इतना था कि 33 पेटियाँ रोज उतरती थीं। पुण्य जब प्रबल होता है तो छप्पर फाड़कर आता है। 32 धर्मपत्नियों व माँ के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे। समय ने पलटा खाया। माँ ने कहा- बेटा! नाथ आए हैं। 'नाथ' शब्द सुना तो भीतर झनकार पैदा हो गई। मेरे नाथ, क्या मैं अनाथ हूँ? क्या में भ्रम में जी रहा था? कौन है नाथ? कौन होता है अनाथ? वह जाग्रत हो जाता है और कल्याणमार्ग पर आगे बढ़ता है। पाँच इंद्रियों में जिसका मन भटक रहा है वो अनाथ है। अनाथी मुनि एक संकल्प से सारी बीमारी को दूर करने वाले बन गए। हमारा ज्ञान एवं श्रद्धा का बँटवारा कोई नहीं कर सकता है। सारी सुविधाएँ मिल जाने पर भी शांति नहीं मिल सकती। पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता है। पाँच इंद्रियों की पराधीनता बाधा बन जाती है। स्वाधीनता की खुशी को शब्दों में वर्णन नहीं कर सकतें। भौतिक साधनों का सुख छोड़े बिना समाधि भाव मिलना मुश्किल है। शांति की दिशा में कदम उठाना पड़ेगा और शांति की राह हमें पसंद नहीं है। शालिभद्र करवट लेते हैं। भगवान महावीर आते हैं, साधु बन जाते हैं। शालिभद्र जैसा व्यक्तित्व मिलना मुश्किल है। आज जो कपड़े पहने हैं दूसरे दिन फेंक देते। ऐसे पुरुष ने कितना पुण्य कमाया होगा! लेकिन ऐसे पुरुष के मन में रहे धर्म में ही सुख है। धर्म की आराधना में सुख मिलता है। 'मिलता सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में'।''*

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो'** भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भीतर में सच्ची गुरुभक्ति होगी तो दुनिया को छोड़ने में समय नहीं लगेगा। हमारे सामने तीर्थंकर नहीं हैं, पर उनके स्वरूप में गुरुदेव हमारे सामने हैं। श्रद्धा, भक्ति भावना, गुरु भक्ति ही हमें उच्च स्तर पर पहुँचाएगी। निष्काम गुरुभक्ति करें। बालिका मंडल ने **'राम राम जय गुरुवर राम'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'राम आ गए हैं, गुरु राम आ गए हैं'** गुरु भक्ति गीत प्रस्तुत किया। निकुंभ संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान पुण्योदय बताते हुए गुरुवर से अधिकाधिक विराजने की विनती की।

हर पूर्णिमा को आचार्य भगवन् के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं, देशभर के अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों

सहित पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं राष्ट्रीय महामंत्री जी आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। आर.के. पब्लिक स्कूल में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम हुआ। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक आयोजन हुए। 95 वर्षीय वरिष्ठ स्वाध्यायी कचरमल जी पोरवाल, निकुंभ ने गुरुदर्शन कर जीवन धन्य बनाया। सुश्राविका मनोरमा जी डागा, ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

आत्मदर्शन से ही परमात्म-दर्शन

25 फरवरी 2024। प्रात: महत्तम समता शाखा वर्ष के अंतर्गत समता आराधना हेतु सैकड़ों भाई-बहिनों का सैलाब स्थानक की ओर उमड़ पड़ा। श्री रामयश मुनि जी म.सा. ने समता शाखा पाठ की सामूहिक आराधना करवाई। तत्पश्चात् आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ प्रदान किया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में जिज्ञासुओं की ज्ञानतृष्णा को तृप्त करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''आज परिवार, समाज में शांति क्यों नहीं है? हमारा स्वार्थ सारी चीजों में बाधक बना हुआ है। स्वार्थ को अलग रखें तो घर व समाज में शांति हो जाएगी। राम-भरत की गौरवगाथा आज भी गाई जाती है, क्योंकि उनमें स्वार्थ नहीं अपितु गहरा आपसी प्रेम था। देखने व दर्शन में क्या फर्क है? देखना ऊपरी तौर से होता है तथा दर्शन किसी के भीतर रहे गुणों को देखना है। लोगों को नाना गुरु के दर्शन से आनंद मिलता था। नाना गुरु की दिव्यता का दर्शन हो पाया कि नहीं हो पाया? भरत जैसी आँख मिलेगी तो राम जैसा भाई मिलेगा। आँख पर बहुत बड़ा दारोमदार है। हमें दूसरों की कमी तिल जैसी दिखनी चाहिए, लेकिन दिखती पहाड़ जैसी है। इसका सीधा-सादा अर्थ है कि हमें अपनी कमी को दूर करने का लक्ष्य बनाना है। किसी ने हमको दु:खी बना दिया, लेकिन जब तक हम दु:खी नहीं होंगे तब तक हमें कोई दु:खी नहीं बना सकता। नाना गुरु फरमाते थे कि हाथों की रेखाएँ नहीं बदल सकती हैं, लेकिन भाग्य की रेखाओं को पुरुषार्थ और मेहनत से बदला जा सकता है। आदमी अपने स्वार्थ के कारण भटकता है। हमें तीर्थंकर देवों का मार्ग मिला है, जो मोक्ष तक ले जाने वाला है।*

सिर्फ देखना भटकाने वाला होगा और दर्शन मंजिल तक पहुँचाने वाला बनेगा। आत्मदर्शन परमात्मा के दर्शन कराने वाला होता है। जिसे आत्मा की पहचान हो जाएगी तो स्वार्थ, अहंकार उसे छू नहीं पाएँगे। स्वार्थ, अहंकार तो भटकाते हैं।'' भगवन् ने भाई-भाई के आपसी प्रेम, स्नेह की विशेष प्रेरणा दी।

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जितने भी रिश्ते-नाते हैं, वे आँखें बंद होते ही बंद हो जाते हैं। मृत्यु के बाद परिवार वाले एक घंटा भी रखने को तैयार नहीं होते हैं।

साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। समता युवा संघ, चिकारड़ा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने 12 किमी. पदयात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित होकर क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की। दोपहर में बालक-बालिकाओं को संस्कार निर्माण व जीवन जीने की कला का मार्गदर्शन श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने दिया। श्रावक-श्राविकाओं की कक्षा में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने कल्प आचार संहिता की विस्तृत जानकारी दी।

सुश्राविका बेबी बाई, नीमच के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद संबंधी विवाद होने पर भाई-भाई कोर्ट में नहीं जाने का संकल्प दिलवाया गया। निकुंभ संघ द्वारा आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनेहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनैना श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामचित्रा श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा सोल्लास संपन्न

26 फरवरी 2024, समता भवन, निकुंभ।

ये ही मंजिल तेरी, ये ही तेरा रास्ता।
राम शासन का गौरव बढ़ाना सदा।।

दीक्षा आत्मा से महात्मा एवं महात्मा से परमात्मा बनने का राजमार्ग है। इसी कड़ी में साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं साध्वी श्री रामनेहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनैना श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामचित्रा श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा अत्यंत धर्मोल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया।

विशाल धर्मसभा में जन-जन के आराध्य सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने उपस्थित जनसमूह को अपनी दिव्यवाणी में **'महावीर भगवान पाऊँ सद्ज्ञान जी, मैं तो हूँ नादान प्रभु तेरी ही संतान हूँ'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि *''यह जो रंग-बिरंगा दृश्य दिख रहा है, इसका मूल कारण मोह कर्म है। मोह कर्म से हमारी विचारधारा में समानता नहीं हो पाती है। जब तक मोह कर्म का जोर चलता है, जीव धर्म की ओर अभिमुख नहीं हो पाता। उसको धर्म की समझ नहीं होती। वह देखा-देखी धर्म की क्रिया कर सकता है, किंतु धर्म की दिशा में अभिमुख नहीं हो पाता। निम्बाहेड़ा में चार भव्यात्माओं ने साधु जीवन स्वीकार किया और आज उनका छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोहण होने जा रहा है। इन्होंने महाव्रतों को स्वीकार किया। सर्व प्रकार की हिंसा का त्याग, किसी भी प्रकार से जीव की हिंसा न करूँगा, न करवाऊँगा तथा न करने वाले की मन, वचन, काया से अनुमोदना करूँगा, यह पहला व्रत होता है। इसी प्रकार सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की बात बताई गई है।*

सरल बने बिना व्रतों की आराधना नहीं हो पाती है। भगवान महावीर कहते हैं कि शोधन उनका होता है जो सरल होते हैं, ऋजुभूत होते हैं।

उच्चाटन रहेगा तो सरलता, समाधि, सिद्धि नहीं मिलेगी। बिना सरलता के समाधि नहीं मिलेगी। न राग, न द्वेष, सबके प्रति समान भाव होगा और दृष्टि हमारे भीतर होगी तो हम समाधि में रहेंगे। हमें अपनी चर्या और विचारों की समीक्षा करनी बहुत जरूरी है। हमें विचार करना चाहिए कि हमारी मंजिल क्या है? साधु जीवन, श्रावक जीवन की सम्यक् आराधना होती है तो स्वर्ग में जाने की बात होती है, किंतु यदि हमारे मन में क्रोध, मान, माया, लोभ, छल, कपट, राग, द्वेष रह गए हैं तो स्वर्ग मिलना कठिन है। यदि सरलतापूर्वक व्रतों की सम्यक् आराधना की है तो यह निश्चित है कि हम मोक्ष की ओर आगे बढ़ेंगे। जब हमारी कथनी-करनी में फर्क रहेगा तो सरलता छिन्न-भिन्न हो जाएगी।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने 9:30 बजे बड़ी दीक्षा की विधि प्रारंभ करते हुए दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन कर नवदीक्षितों को संपूर्ण रूप से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का तीन करण, तीन योग से शुद्ध रूप से पालन करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध किया।

नवदीक्षिता साध्वियों ने संकल्प सूत्र का वाचन करते हुए फरमाया कि हे आचार्यदेव! आपने हमें जो संयम रत्न प्रदान किया है, हम उसका सजगतापूर्ण पालन करेंगी। पाँच समिति तीन गुप्ति का पूर्ण पालन करेंगी। आज्ञा आराधना में हमारा जीवन समर्पित रहेगा। सेवा के अवसर के लिए हम सदैव तत्पर रहेंगी। आपकी कृपा से कषायों व इंद्रियों पर विजय पाकर हम परम लक्ष्य को प्राप्त करेंगी।

बड़ी दीक्षा विधि संपन्न होने के पश्चात् शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'मेरे गुरुवर का शासन चलता रहे'** भाव गीत प्रस्तुत किया। साध्वी मंडल द्वारा बधाई गीत भी प्रस्तुत किया गया।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने **'अपने जीवन के जौहरी स्वयं ही बनें'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हम दूसरों की गलतियाँ, कमियाँ ढूँढ़ने में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। हमें अपनी गलतियों को देखना है। दूसरों के गुणों को देखेंगे और उन्हें जीवन में उतारेंगे तो हम भी गुणों का गुलदस्ता बन जाएँगे। संसार दु:खों से झुलस रहा है। एकमात्र संयम से ही हम सच्चे सुख को प्राप्त कर सकते हैं। बड़ी दीक्षा के प्रसंग पर हम भी अपने अंदर संयम के भाव जगाएँ।

निकुंभ संघ मंत्री ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए आचार्यश्री के चरणों में अधिकाधिक सान्निध्य प्रदान करने की विनती प्रस्तुत की। महेश नाहटा ने बड़ी दीक्षा के पावन प्रसंग से महत्तम दैनिक उपासना करने एवं त्याग-प्रत्याख्यान से जुड़ने की प्रेरणा दी। अनेक त्याग-प्रत्याख्यानों का सिलसिला चला।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने चित्तौड़गढ़ में आयोजित होने वाले **'अभिमोक्षम्'** शिविर में 9 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के अविवाहित लड़के-लड़कियों को अधिक से अधिक संख्या में भेजने का आह्वान किया। संस्कार निर्माण हेतु पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, पूर्व विधायक ललित जी ओस्तवाल सहित अनेक स्थानों के दो हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

आवरीमाता से समता युवा संघ के 35 से अधिक युवाओं ने पैदल यात्रा कर गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत की। 92 वर्षीय मिठुलाल जी कच्छारा ने गुरुदर्शन करके जीवन धन्य बनाया।

कठिनाइयों में न गिरने दें मनोबल को

27 फरवरी, 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् विशाल धर्मसभा में करुणा के सागर आचार्य भगवन् ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी पावन देशना से धन्य बनाते हुए दिव्यवाणी में **'धम्म सद्धा चालीसा'** की पंक्तियों के उच्चारण के साथ फरमाया कि -

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''अपना सामर्थ्य मजबूत बनाना है। जीवन में कुछ बुरा है तो कुछ अच्छा भी है। दूसरों के दुर्गुणों को देखने से शक्ति का संचार नहीं होगा। इससे तो केवल शक्ति क्षीण होगी। भगवान महावीर कहते हैं कि दुष्कर कार्य करना चाहिए और असहनीय को सहन करना चाहिए। कठिनाइयाँ बहुत प्रकार की होती हैं। मानसिक, वाचिक, कायिक कठिनाइयों के साथ जैविक कठिनाइयाँ, भौतिक कठिनाइयाँ भी होती हैं। बाहर एवं भीतर की भी कठिनाइयाँ होती हैं। कठिनाई में हमें अपने मनोबल को गिरने नहीं देना चाहिए। अपने मनोबल को सुदृढ़ बनाए रखें। यह कब होगा जब हमें सिद्धांत का ज्ञान होगा। दूसरों का किया हुआ मेरा कुछ भी बिगाड़ करने वाला नहीं है। दूसरा मुझे कितना ही प्रताड़ित करे, मुझे दु:खी नहीं बना सकता। मनोबल को शिथिल नहीं होने देना। भगवान महावीर समर्थ

थे, शक्ति-संपन्न थे, चुनौतियों को झेलने में समर्थ थे। इसलिए उन्होंने दुष्कर कार्य किया। भगवान महावीर दीक्षा के बाद साढ़े बारह वर्षों तक छद्मस्थ अवस्था में रहे। साढ़े बारह वर्षों तक कठोर साधना, तपस्या की। मात्र 349 दिन पारणे के थे। साढ़े ग्यारह वर्ष उन्होंने तपस्या की। यह बिना मनोबल के संभव नहीं हो सकता। एक उपवास के लिए भी चार बार सोचना पड़ता है, किंतु मनोबल मजबूत होता है तो चलते-फिरते उपवास हो जाते हैं। तपस्या, इच्छाओं का निरोध है। इच्छाओं के प्रवाह में दौड़ते रहना मन को कमजोर बनाता है। श्रावक को बारह व्रतों की आराधना करनी चाहिए। यथाशक्ति व्रतों के नियमों का पालन करें। 14 नियमों की पालना प्रतिदिन करनी चाहिए। विवेक यतना में धर्म है।''

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अपने बच्चों को प्रारंभ से ही सत्य वाणी एवं श्रेष्ठ आचरण की शिक्षा देनी चाहिए। संतानों पर बोलने का नहीं, आचरण का प्रभाव पड़ता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'अपने जैसा सूरज बना, कंकर से शंकर बना'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। 165 एकासन व 5-5 सामायिक हुई। हर कार्य करने से पहले **'नमो अरिहंताणं'** और कार्य पूर्ण होने के बाद **'नमो सिद्धाणं'** बोलने का प्रत्याख्यान सामूहिक रूप से कई भाई-बहिनों ने लिया। छोटे-छोटे बच्चों ने दस दिन मोबाइल त्याग का नियम लिया। टेलेंट स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने गृहस्थ और श्रावक में अंतर की व्याख्या की। आचार्य भगवन् ने समयबद्धता अनुशासन की प्रेरणा दी। इसके फलस्वरूप 9:30 बजे प्रवचन स्थल समता भवन का गेट बंद कर दिया गया। इससे लोग समय से पूर्व प्रवचन स्थल पर पहुँचने लगे और अमृतवाणी का पूरा लाभ लिया।

संयम तप के बल पर मोक्ष की प्राप्ति

28 फरवरी, 2024। प्रात:कालीन शुभ बेला में मंगलमय प्रार्थना से धर्मजागरणा हुई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में भगवान महावीर के अमृतवचनों से जन-जन का जीवन पावन करते हुए दयामूर्ति कृपानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि *''हमारी साधना, आराधना का लक्ष्य क्या है? भौतिक सुखों की प्राप्ति हो जाए तो क्या सुखी हो जाएँगे? यह सुख सदा रहने वाला नहीं है। यह सुख शाश्वत सुख नहीं है। हमारी साधना, आराधना का लक्ष्य अपने आपको खाली करना है। हम बहुत भरे हुए हैं। हमारे भीतर भरा हुआ कचरा खाली हो जाए तो हम कितने हलके हो जाएँगे! इतने हलके हो जाएँगे कि एक समय में मोक्ष पहुँच जाएँगे, दूसरा समय भी नहीं लगेगा। कर्मों को नष्ट करने के लिए तप व संयम दो मार्ग बताए गए हैं। संयम यानी अनुशासन, अपना नियंत्रण स्वयं पर होना ही संयम है। नियंत्रण का मतलब है इंद्रियों के विषयों की तरफ हमारा मन नहीं दौड़े। सही मार्ग पर चलेंगे तो मंजिल मिलेगी। पाँच इंद्रियों के विषयों का हमने अनादिकाल तक सेवन किया और अभी भी कर रहे हैं। हम आज भी दु:ख के झूले में झूल रहे हैं। जितना पुद्गलों के प्रति हमारा लगाव है, वही दु:ख का कारण बना हुआ है। पुद्गल हटेंगे तो दु:ख दूर हो जाएँगे। संयम हमारे मन का लगाम है। अपेक्षाएँ मन को अशांत बनाती हैं। संयम से इच्छाओं पर नियंत्रण होता है। संयम और तप के बल पर हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।''*

श्री सौरभ मुनि जी म.सा. ने **'उम्र थोड़ी सी हमको मिली थी मगर, वो भी घटने लगी देखते-देखते'** गीत के साथ फरमाया कि आज व्यक्ति धन के पीछे पागल बन रहा है। यहाँ तक कि धर्म को भी भूल रहा है। मेरे जाने के बाद

मेरा क्या होगा यह विचार करें, न कि मेरे बच्चों, मेरी पत्नी, मेरे परिवार का क्या होगा! अपना आत्मावलोकन करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वल प्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सरिश्मा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'गुरुचरणों में करें वंदना'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जिसकी जितनी उम्र है उतने नवकार महामंत्र जाप का प्रत्याख्यान कई श्रद्धालुओं ने लिया।

ब्यावर एवं नागपुर संघ ने आगामी चातुर्मास एवं चिकारड़ा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। सामूहिक दया का आयोजन किया गया। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम में 7 भाइयों ने लोच करवाया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम किया गया।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने सामूहिक कक्षा में **'एक मुहूर्त्त (48 मिनट) में हम क्या-क्या कर सकते हैं'** इस विषय पर विस्तार से सुंदर व्याख्या दी।

आत्मा ही सामायिक है

29 फरवरी 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना से प्रभु गुरु भक्ति में सभी लीन हो गए। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने प्रार्थना करवाई।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना की शुरुआत **'धम्म सद्धा चालीसा'** से करते हुए फरमाया कि *''धर्म की कोई कीमत चुकाना चाहे तो चुका नहीं सकता। पूणिया श्रावक के सामायिक की कीमत कितनी थी। सामायिक की दलाली के लिए 52 डूंगरी धन कम पड़ गया। उस वस्तु की कीमत क्या होगी, आँका नहीं जा सकता है। किंतु क्या हमें यह विश्वास है कि सामायिक की कीमत इतनी हो सकती है? आत्मा ही सामायिक है। आत्मा ही सामायिक का अर्थ है। सामायिक में बढ़कर आत्मा की अनुभूति होती तो मालूम पड़ता कि सामायिक क्या है। पूणिया श्रावक को सामायिक का अर्थ मालूम था। वह सामायिक में बैठता तो आत्मभावों में डूब जाता था। भूल जाता था कि बाहर क्या चल रहा है। उसका मन विषमता में नहीं जाता। सामायिक को आत्मा कहा गया है। आत्मा में जिसकी उपस्थिति होती है वह सामायिक होती है। घबराना मत, मन में भी उलटे विचार पैदा मत करना, मन में अश्रद्धा मत पैदा करना। अभी वहाँ तक पहुँचने का अभ्यास कर रहे हैं, फिर एक दिन समर्थ होंगे। पूरी दुनिया के जीवों के साथ मैत्रीभाव से रहना। मैत्रीभाव अर्थात् आत्मीय भाव। सामायिक का उद्देश्य समभाव की पूर्णता तक पहुँचना है।''*

श्री जयप्रभ मुनि म.सा. ने फरमाया कि शरीर नाशवान है, जर्जर होने से पूर्व हम सच्चे धर्म की आराधना कर लें।

साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आज सामूहिक आयंबिल दिवस में कई भाई-बहिनों ने स्वाद विजय का अनूठा तप किया। हर रविवार को सामायिक करने का नियम कई युवा साथियों एवं बालिकाओं ने किया। पक्खी प्रतिक्रमण करने का नियम भी कई भाई-बहिनों ने लिया।

दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा हुई। श्रावक-श्राविकाओं की कक्षा में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने तिथियों के महत्त्व एवं तिथियों के घट-बढ़ के बारे में बताया।

आचार्य भगवन् का निकुंभ के पश्चात् चिकारड़ा, मोरवन होते हुए होली चातुर्मास के पावन अवसर पर मंगलवाड़ पधारने की संभावना है। पूरा मेवाड़ धर्म के रंग में रंगा हुआ है। अनेक क्षेत्रों से आगामी चातुर्मास की विनतियाँ श्रीचरणों में निरंतर हो रही हैं। अब देखना है कि किसके भाग्य का सितारा चमकता है।

तपस्या सूची	
संत-सती वर्ग	
7 उपवास	साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा.
श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	सुनील जी बुरड़-मल्कापुर, सुरेश जी सुशीला जी कुदाल-निम्बाहेड़ा, रूपलाल जी जैन-सतखंडा, बाबूलाल जी जैन-रतलाम, अशोक जी कांकलिया-धूलिया, देवेंद्र जी बाफना-हथियाना, प्रेमलता जी दलाल-खाचरौद, विनोद जी विमला जी अभ्भाणी-निम्बाहेड़ा, चंद्र सिंह जी प्रमिला देवी सरूपरिया-निम्बाहेड़ा, बाबूलाल जी दक-सूरत, हिम्मतलाल जी प्रीतमबाला जी मोदी-निम्बाहेड़ा, कमलेश जी कुसुम देवी चावत-निम्बाहेड़ा, मोहनलाल जी कमला देवी बैद-लसड़ावन, कन्हैयालाल जी मान कँवर जी चपलोत-निम्बाहेड़ा, रिखबचंद जी जैन, रोडमल जी तारा देवी खाब्या-निकुंभ, पुखराज जी ज्योतिबाला जी सहलोत-निकुंभ, सागरमल जी धींग, सफी मोहम्मद पिंजारा-निकुंभ, कमलेश जी मेहता-उदयपुर, वीर पिता नवनीत जी ज्योति जी राखेचा-शिरपुर, भगवतीलाल जी मंजू देवी सहलोत-निकुंभ, नंदलाल जी सालवी-निकुंभ, बाबूलाल जी पुष्पा देवी पोरवाड़-निकुंभ, आजाद कुमार जी केसर देवी सहलोत-निकुंभ
संवर	**100 -** पवन जी चंद्रकला जी नागसेठिया-शिरपुर (100 पौषध भी)
तेला	**108 तेला संपन्न, 108 बेला के प्रत्याख्यान -** विमलेश जी ओस्तवाल-ब्यावर
पक्की नवकारसी	**100 -** अनिता जी मारू, पिंकी जी मारू-निम्बाहेड़ा
पोरसी	**100 -** निर्मला जी रातड़िया-कानोड़
गाथा का स्वाध्याय	**एक लाख -** हरि सिंह जी भंडारी-कपासन
उपवास	**21 -** अजय जी दक-उदयपुर **11 -** अनिता जी मारू-निम्बाहेड़ा, **अठाई -** प्रतिभा जी सहलोत-निम्बाहेड़ा

-महेश नाहटा

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम व्यक्तित्व : • व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर • हमारा व्यक्तित्व कैसा हो • दिखावे का चक्रव्यूह'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

अंतर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

Presents

Once in Lifetime Opportunity!!

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

एवं

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य (संभावित) में

अभिमोक्षम्

Residential Camp

{ DIVING WITHIN }

दिनांक : 10 मई 2024 से 26 मई 2024 तक

स्थान : चित्तौड़गढ़

आयु सीमा
9 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित बालक-बालिकाएँ

शिविर में उपलब्ध सुविधाएँ

1. आवास निवास व्यवस्था
2. शिविरार्थियों को आने-जाने का तृतीय श्रेणी के समकक्ष किराया दिया जाएगा।
3. चिकित्सीय सुविधा (आवश्यकता पड़ने पर)
4. स्टेशनरी जैसे पेन, पेंसिल इत्यादि, सामायिक किट

मुख्य आकर्षण

1. संस्कार
2. प्रभु भक्ति
3. तत्त्व ज्ञान
4. पर्सनैलिटी डवलपमेंट
5. ध्यान साधना
6. लाइफ स्किल्स
7. और भी बहुत कुछ...

शिविर के अनिवार्य नियम

1. मोबाइल का त्याग • 2. रात्रि में पानी के अलावा खाने-पीने का त्याग (तिविहार) • 3. शिविरार्थियों के लिए संवर स्वैच्छिक रहेगा, लेकिन कुछ सामायिक करनी अनिवार्य है। • 4. शिविर हेतु 01 मार्च से 31 मार्च 2024 तक दिए गए लिंक या QR कोड के माध्यम से रजिस्ट्रेशन करना होगा।

https://tinyurl.com/abhimoksham

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र
+91 9827344055
+91 7021380109
(शाम 6 pm से 10 pm)

आचार्य भगवन् सहित अन्य चारित्रात्माओं का पावन सान्निध्य संभावित तथा ज्ञानवान श्रावक-श्राविकाओं का लाभ

आयोजक
समता संस्कार शिविर समिति
महत्तम महोत्सव आयोजन समिति
(अंतर्गत श्री. अ.भा.सा. जैन संघ)

संयोजक:
श्री साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA SHAND GROUP
SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex

Diamond DUROLON

DURO RING

LEAK PROOF

NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO

ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE

U STABILIZED

Now with new M.R.O. Technology Resists high impact

IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149

cftri CERTIFIED

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh